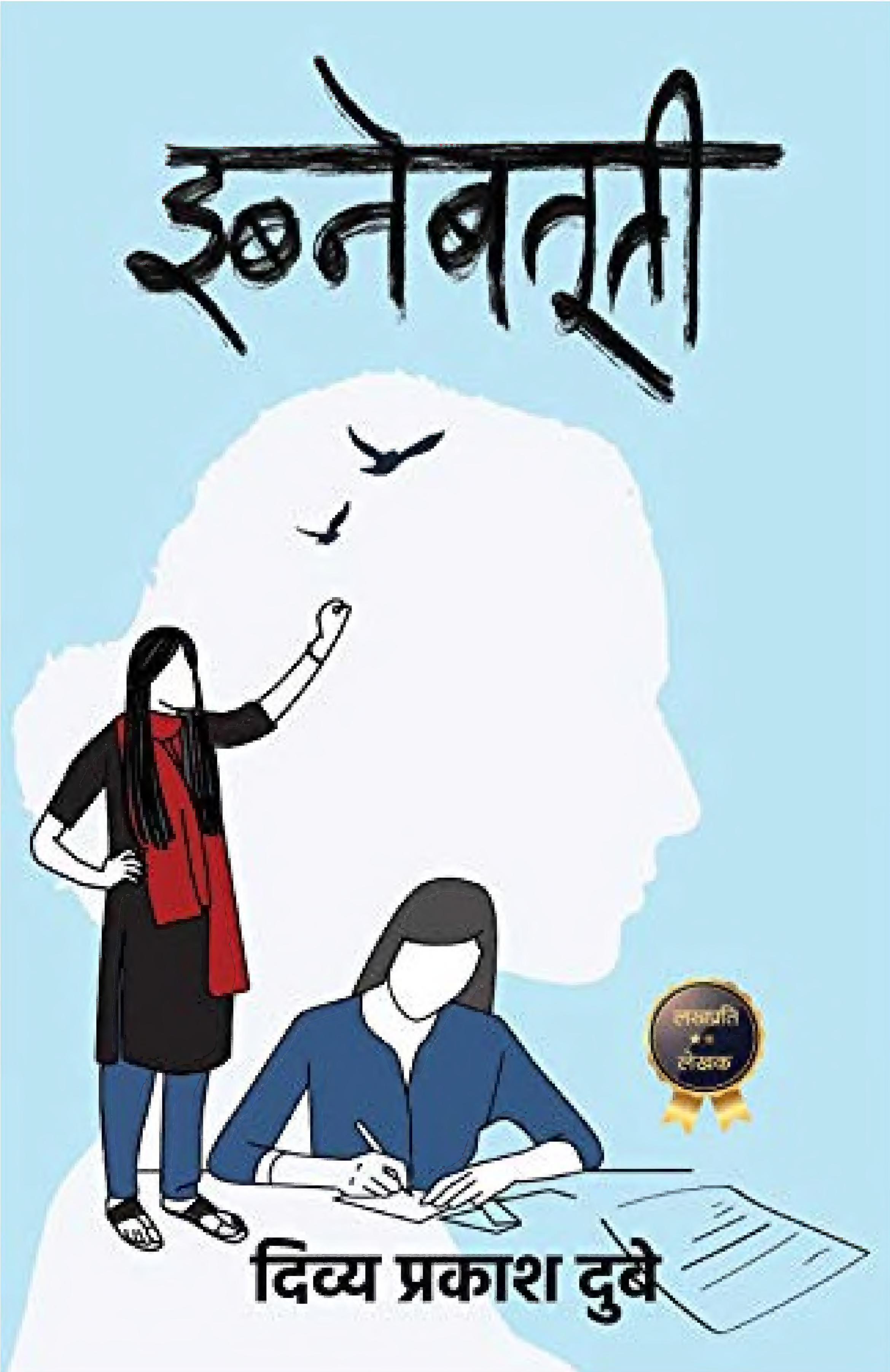
https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks



https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इब्नेबतूती

दिव्य प्रकाश दुबे

हिंद युग्म

हिन्द युग्म

Subscribe

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इब्नेबतूती

(उपन्यास)

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इब्नेबतूती

दिव्य प्रकाश दुबे
पुत्र- श्रीमती शोभा दुबे

हिन्द युग्म

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Copyright © 2020 दिव्य प्रकाश दुबे

प्रकाशक:
हिंद युग्म
सी-31, सेक्टर-20, नोएडा (उ.प्र.)-201301
फ़ोन- +91-120-4374046

आवरण : गरिमा शुक्ला

Ibne-Batuti
A novel by Divya Prakash Dubey

Published By
Hind Yugm
C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301
Phone : +91-120-4374046
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

माँ, जो कभी एक बीस बरस की लड़की थी,

उस लड़की के नाम।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इब्नेबतूती- इस शब्द का कोई मतलब नहीं होता। इसलिए आप इसको अपनी मर्ज़ी और ज़रूरत के हिसाब से कोई भी मतलब दे सकते हैं।

कुछ सुंदर शब्द कभी शब्दकोश में जगह नहीं बना पाते। कुछ सुंदर लोग किसी कहानी का हिस्सा नहीं हो पाते। कुछ बातें किसी जगह दर्ज नहीं हो पातीं। कुछ रास्ते मंज़िल नहीं हो पाते। उन सभी अधूरी चीज़ों, चिट्ठियों, बातों, मुलाक़ातों, भावनाओं, विचारों, लोगों के नाम एक नया शब्द गढ़ना पड़ा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनको सहेजने वाले इस दुनिया में बस दो लोग होते हैं। वो शब्द जो उस रिश्ते के साथ मर जाते हैं तो कई बार वही शब्द इस दुनिया को बचा लेते हैं।

प्रेम में डूबे हुए लोग ही नए शब्द बनाने की कोशिश करते हैं। नई जगह जाने की कोशिश करते हैं। वे सैकड़ों साल पुरानी इस दुनिया को एक नई नज़र से समझना चाहते हैं। इस दुनिया को नए शब्द शब्दकोश ने नहीं, बल्कि प्रेम में डूबे हुए लोगों ने दिए हैं। हमारा जो हिस्सा प्रेम में होता है, वो कभी पुराना नहीं होता। इस दुनिया को एक नई नज़र से देख पाना ही प्यार है। मुझे कभी-कभी ऐसा शक होता है कि जैसे कोई मुझे इब्नेबतूती नाम से पुकार रहा है। तुम कहीं आस-पास लगते हो।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तारीख़ों में कहानी

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

10 अक्टूबर, 2015

दूर जाना, वापस लौटने की तरफ़ बढ़ा हुआ पहला क़दम होता है। कार से एयरपोर्ट दिखना शुरू हो चुका था। वह समय आ चुका था जिसका राघव अवस्थी को सालों से इंतज़ार था। जैसे-जैसे एयरपोर्ट पास आ रहा था राघव की माँ, शालू अवस्थी का अपने बेटे के लिए दुलार बढ़ता जा रहा था। उसने राघव को अपने सीने से चिपका लिया था। जैसे जानवर अपने पैदा हुए बच्चे को अपने पास चिपका लेते हैं। इस दुलार में राघव के बाल बार-बार बिगड़ रहे थे। राघव उनको बार-बार सही कर रहा था।

"अरे यार अम्मा, बाल ख़राब हो रहे हैं।"

"अब्बे होने दे ख़राब, एयरपोर्ट के अंदर जाकर एक बार में ठीक कर लेना। अब कहाँ बाल ख़राब कर पाऊँगी!"

"यार अम्मा, तुमने प्रॉमिस किया था न कि जाते हुए सेंटी नहीं मारोगी!"

"चुप कर, भाड़ में गया प्रॉमिस। तू रोज़-रोज़ अमेरिका थोड़े जाएगा! पता नहीं अब कितने दिन में आएगा!"

"अच्छा अम्मा, एक बात बताऊँ?"

"अब याद आ रही है बात, जब एयरपोर्ट सामने आ गया? जल्दी बोल।"

"जब स्कूल बस छूट जाती थी और तुम मुझे अपनी स्कूटी से छोड़ने जाती थी तो उस दिन पता नहीं क्यों रोना आ जाता था।" यह कहते हुए राघव ने कार की खिड़की से एयरपोर्ट की तरफ़ देखा। उसकी आँखों में पानी था। शालू की आँखें सूखी हुई थीं।

"आज तेरे पापा की बहुत याद आ रही है।"

"अम्मा यार!" कहते हुए राघव ने एक बार फिर से शालू को गले लिया। शालू ने राघव के माथे को चूमकर उसका सिर सहलाते हुए उसके सारे बाल एक बार फिर ख़राब कर दिए।

एयरपोर्ट अब ठीक सामने था। कार रुकने के बाद कुछ देर तक दोनों ने दरवाज़ा नहीं खोला।

"जल्दी आना, समझा?"

"अम्मा, पहले जाने तो दो!"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तीन महीने पहले

एक थी अम्मा, एक था बेटा।

‘असल में हमें उन्हीं चीज़ों के सपने आते हैं जो हमारे पास नहीं होतीं।’

हालाँकि ऐसा सबसे पहली बार पुराने लखनऊ के किसी पनवाड़ी के यहाँ उधार लेकर बीड़ी पीते हुए एक नवाब साहब ने कहा था, लेकिन सिगमंड फ़्रायड ने अपनी किताब में लिख दिया और फ़ेमस हो गया।

सुबह के 9 बज रहे थे। राघव सपनीली दुनिया में उम्मीदों के ग़ोते लगा रहा था। राघव ऐसे सोता था कि जैसे दुनिया के सारे घोड़े उसने कल रात ही बेचे हों। वैसे भी बीस-इक्कीस साल के लड़के सुबह उठते नहीं उठाए जाते हैं। अगर ग़लती से उठा भी दिए गए तो तुरंत बोलेंगे, “क्या यार मम्मी, क्यों उठा दिया, अभी 9 ही तो बजे हैं!”

यह राघव के लिए रोज़ का ही सिलसिला है। लखनऊ यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन ख़त्म हुए एक साल हो गया है। वैसे जब कॉलेज चल भी रहा था तो कॉलेज जाना इतना होता नहीं था। कुछ तो ख़ुद ज़रूरी नहीं समझता और कुछ कॉलेज वाले। जिस दिन वह कॉलेज चला भी जाता था उस दिन पूरे लखनऊ का एक चक्कर लगाकर ही घर लौटता था।

चक्कर अकेले नहीं लगाता था, दो लोग और होते थे। पहली तो उसकी बाइक जिसको वह हेलीकॉप्टर से कम नहीं समझता था। दूसरी उसकी गर्लफ़्रेंड निशा जो कि क्लास 11th में ही बेस्ट फ़्रेंड से गर्लफ़्रेंड बन चुकी थी। एक ख़ास उम्र में लड़के बाइक चलाते नहीं उड़ाते हैं। प्यार का इज़हार राघव ने अपनी बाइक पर बैठकर हज़रतगंज में शुक्ला जी की वर्ल्ड फ़ेमस चाट खाते हुए किया था।

“तुमसे बहुत प्यार हो गया है बे, निशा। टिक्की कौन-सी लोगी, आलू वाली या मटर वाली? तुम्हारी हाँ है कि ना है?”

निशा ने प्यार के लिए हाँ करने में कुल तीन मिनट लगाए थे। शुक्ला चाट वाले से एक चम्मच मीठी चटनी एक्स्ट्रा लेकर पहले ख़ुद थोड़ी-सी खा ली और उसी चम्मच से राघव को थोड़ी-सी चटनी चटा दी थी। फिर एहसान करते हुए बोली, “चल, आज से मैं तेरी गर्लफ़्रेंड हो गई। अब किसी और की तरफ़ देखा तो दस सैंडल मारूँगी और गिनूँगी एक।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

'मारेंगे दस गिनेंगे एक' लखनऊ की प्राचीनतम और ज़रूरी परंपराओं में एक रहा है।

राघव तुरंत ही सैंडल खाने को तैयार हो गया था। इस प्रकार उनका प्यार शुरू हुआ। लखनऊ शहर में प्यार करना अब आसान हो गया था। लखनऊ शहर क्या इन-जनरल अब प्यार करना बहुत आसान हुआ था।

इतने मॉल थे, इतने कॉफ़ी हाउस, इतने पार्क, इतने पिक्चर हॉल कि अगर ऐसे बदले हुए माहौल में कोई अब भी हपककर प्यार नहीं कर पा रहा तो यह सिस्टम, समाज, दुनिया की नहीं उसकी ख़ुद की ग़लती थी। अब प्यार को छत पर कपड़े सुखाने का, पतंग उड़ाने का इंतज़ार कहाँ करना पड़ता था! अब व्हॉट्सएप्प में लास्ट सीन से जूझती हुई दुनिया क्या जाने कि चिट्ठियों और पर्चियों का इंतज़ार क्या होता था!

वैसे तो रोज़ राघव मम्मी के ऑफ़िस जाने के बाद उठता था। उठने के बाद रोज़ एक ही काम था- दो घंटे तीन-चार तरह के अलग-अलग अख़बार पढ़ना। राघव की मम्मी मतलब कि शालू अवस्थी कृषि विभाग में एडिशनल डायरेक्टर थी।

शालू को देखकर कोई कह नहीं सकता कि उनका 20 साल का लड़का होगा। यूँ तो मम्मी अधिकारी थी लेकिन उसके अंदर अधिकारियों वाले एक भी लक्षण नहीं थे। न ही कभी ऑफ़िस की गाड़ी लेती थीं न ही किसी से कोई फ़ेवर और न ही कभी रिश्वत। कुल-मिलाकर इतना कह सकते थे कि जिस भी वजह से सरकारी नौकरी करनी चाहिए वो सारे फ़ायदे शालू कभी नहीं उठातीं।

अगर वह चाहतीं और जैसी उनकी पोज़ीशन थी तो बहुत कमा लेतीं। पेपर मिल कॉलोनी में बस एक चार कमरे का घर था। घर भी उन्होंने नहीं ख़रीदा। राघव के पापा ने अपने जीते-जी घर बनवा लिया था।

घर में बस दो लोग रहते। राघव और शालू। राघव के पिताजी राघव के चार साल का होते-होते चल बसे थे। पापा बड़े अधिकारी थे। उन्होंने ही शालू को शादी के बाद सरकारी नौकरी की तैयारी करवा दी थी। वर्ना शालू और सरकारी नौकरी एक पन्ने पर साथ में लिखे ही नहीं जा सकते थे।

अवस्थी परिवार शहर के एकदम मिडिल में पड़ता था और मोहल्ले के ज़्यादातर लोग लोअर-मिडिल क्लास से मिडिल क्लास के बीच के थे। वैसे भी शहर बड़ा हो या छोटा, अमीर लोग शहर के एक कोने में रहते हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव को फ़िलहाल लाइफ़ से बस एक चीज़ चाहिए कि अमेरिका से डाटा साइंस में पोस्ट ग्रेजुएशन हो जाए। लॉन्ग रन में राघव डाटा साइंटिस्ट बनना चाहता है। उसको किसी ने नहीं बताया कि इसमें स्कोप बहुत है। उसको डाटा से खेलना अच्छा लगता है। इसी चक्कर में वह ऑनलाइन ही दुनिया भर के सर्टिफ़िकेशन कर चुका है। चुनाव हो या अख़बार में आने वाला कोई भी डाटा, राघव को उसको पढ़कर समझने में अलग लेवल की मास्टरी है। ऐसे में क़ायदे से उसको एमबीए का इम्तिहान देकर कहीं मैनेजर बनने का सोचना चाहिए, लेकिन डाटा फ़ील्ड में ही काम करने का उसका मन है। चूँकि उत्तर प्रदेश में पैदा हुए, पले-बढ़े लोगों को कई बार यह भ्रम होता कि उनकी राजनीति की समझ अच्छी है, मगर राघव को अपने बारे में ऐसा नहीं लगता। पर उसको यह समझ थी कि किसी के डाटा ट्रेल [1] को पढ़कर आदमी की आत्मा को समझा सकता है।

2014 के लोकसभा चुनाव के पूरे डाटा को निकालकर उसने एक रिपोर्ट बनाई थी। जिससे हर लोकसभा क्षेत्र के बारे में अच्छे से समझ सकता था। उसकी यह रिपोर्ट एक पॉलिटिकल कंसल्टिंग फ़र्म ने ठीक-ठाक पैसे देकर ख़रीदी थी। अगर ऑनलाइन कुछ भी मिल सकता हो तो राघव उसको ढूँढ़ सकता था।

चूँकि वह विदेशी यूनिवर्सिटी के अपने रिज़ल्ट का इंतज़ार कर रहा था, इसलिए टाइम पास और पैसे के लिए, एमबीए की एक कोचिंग में डाटा इंटरप्रिटेशन पढ़ा देता था।

हालाँकि राघव जब बात करता तो लगता नहीं कि कभी अँग्रेज़ी बोल भी सकता था लेकिन लखनऊ के महानगर ब्वॉयज़ में पढ़ने वाले लड़के जितनी अच्छी लखनउआ भाषा बोल लेते, उतनी ही अच्छी अँग्रेज़ी। वह पढ़ने में हमेशा से अच्छा रहा था।

हालाँकि शालू मन-ही-मन नहीं चाहतीं कि लड़का इतनी कम उम्र में उनसे दूर हो जाए। दुनिया की सभी माँएँ अपने बच्चों से इतनी बातें करती हैं लेकिन अपने मन की बात कहने में उनके पास भाषा कम रह जाती है। हर माँ अपनी मर्ज़ी को, बच्चे की ख़ुशी से तौलती है और बच्चे की ख़ुशी वाला पलड़ा चाहे हल्का हो या भारी इसकी नौबत आती ही नहीं क्योंकि माँ के तराज़ू में दोनों तरफ़ बस बच्चे की ख़ुशी का ही पलड़ा होता है।

राघव के एडमिशन की ख़बर किसी भी दिन आ सकती थी। चूँकि उसके कंसल्टिंग वाले प्रोजेक्ट को हर जगह बहुत सराहना मिली थी, इसलिए

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसको यह विश्वास था कि उसको न्यूयॉर्क की स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी या कोलंबिया यूनिवर्सिटी में से कहीं एक जगह एडमिशन मिल जाएगा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

लप्पोचप्पो

राघव के मेल बॉक्स में रात को ही एडमिशन होने की ख़बर आ गई थी। उसकी पहली च्वॉइस स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी थी। वह ख़ुशी से अम्मा के कमरे में जब बताने गया तब घड़ी पर नज़र गई और सुबह के 4 बज रहे थे। उसने ख़ुशी में निशा को फ़ोन किया। निशा अपनी बहन के साथ सो रही थी। बहन छोटी थी और बिलकुल भी समझदार नहीं थी। फ़ोन बजते ही बोली, "दीदी, थोड़ी आशिक़ी दिन में भी कर लिया करो यार, रात में नींद ख़राब करती हो!"

निशा ने हल्की आवाज़ में पूछा, "हम्म!"

हम्म अपने आप में फ़ुलस्टॉप हो सकता है। ग़ुस्सा, प्यार, दुलार, बेचारगी सब कुछ हो सकता है।

"अबे, एडमिशन हो गया मेरा!"

"अरे वाह, मज़ा आ गया! आई एम सो सो हैप्पी फ़ॉर यू, मुआ!" निशा की नींद खुल चुकी थी और आवाज़ तेज़ हो गई थी। उसकी बहन ने तकिया अपने कान पर लगाया और बोली, "थोड़ा लप्पोचप्पो दिन के लिए भी छोड़ दो।"

निशा बेड से उठकर बालकनी में आ गई।

"अक्टूबर बताया न तूने, जाने का टाइम आ ही गया फिर तो। आंटी को बता दिया?"

"कहाँ बता पाया, अभी दस मिनट पहले ही तो ईमेल आया!" राघव ने अपने लैपटाप में ईमेल को दुबारा पढ़ा।

"स्कॉलरशिप मिली?"

"हाँ, पूरी।"

"वाह! बहुत बढ़िया लड़के। आंटी कितनी ख़ुश होंगी!"

"हाँ बहुत, अच्छा सुन एक प्रॉमिस चाहिए तुझसे।"

"हाँ बोल न, पूछ क्या रहा है!"

"यार, तू अम्मा का ख़याल रखना।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"ये भी कोई बोलने वाली बात है! अच्छा सुन आंटी को देख के बताना। झटका थोड़ा आराम से देना।"

"हाँ और क्या, चल लव यू।" राघव के यह बोलने के बाद निशा ने कुछ देर तक जवाब नहीं दिया। वह राघव के जाने की ख़बर से ख़ुश तो थी लेकिन पिछले क़रीब 5 साल से वे हर एक दिन के साथी थे। उसने अपनी आँखों को साफ़ किया। फ़ोन को 5 सेकेंड म्यूट करके गले को खखारा ताकि उसके रूँधे हुए गले की आवाज़ राघव समझ न पाए और बोली, "लव यू टू लड़के, यार तू सच में चला जाएगा?"

"यार ऐसे मत बोल, अभी तो पूरे 3 महीने हैं।" राघव ने जब निशा से बात ख़त्म करके घड़ी देखी तो सुबह के 6 बज चुके थे। राघव या निशा से कोई पूछता दो घंटे बात क्या हुई तो बता पाना मुश्किल है और समझा पाना भी।

सुबह की चाय में सुबह रहती थी।

राघव को कमरे के बाहर पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ आ रही थी। उसने बाहर जाकर सुबह को देखा। सुबह कई दिन बाद देखो तो अपने पास बुलाती है। उसको अच्छा लगा और वह छत पर ही खड़ा होकर आसपास से उड़ती हुई चिड़िया को देखकर ख़ुश होने लगा। उसको उड़ती चिड़िया के पीछे दूर एक हवाई जहाज़ भी जाता दिखा। उस हवाई जहाज़ को देखते हुए यह भी दिखा कि जल्द ही वह ऐसे ही किसी हवाई जहाज़ की खिड़की पर बैठा होगा।

शाम को शालू के लौटने पर राघव ही चाय बनाया करता था और सुबह की चाय उसने कब बनाई थी उसे याद ही नहीं था। उसने जब सुबह को अपने अंदर जज़्ब करके निशा को मैसेज किया- 'सूरज को उगते हुए देखकर इतना अच्छा लग रहा है, सोच रहा हूँ कि हफ़्ते में एक दिन जल्दी उठा करूँ।'

निशा सुबह उठकर एक्सरसाइज़ किया करती थी। उसने पार्क में भागते हुए जवाब दिया।

"एक दिन उठा है एंज्वॉय कर, सुबह जल्दी उठने जैसे ऐसी बड़ी-बड़ी चीज़ें मत सोच।"

उसने अख़बार पढ़ लिया। अब तक भी 6:30 ही हुआ था। उसने जाकर बड़े ही आराम से चाय बनाई और चाय बनाकर वह शालू के कमरे में ले

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

गया।

चाय मेज़ पर रखकर वह शालू के हाथ पर सिर रखकर लेट गया। शालू की नींद खुल चुकी थी। हाथ पर सिर रखते ही राघव को नींद का एहसास हुआ।

शालू ने राघव के माथे पर प्यार से हाथ रखते हुए पूछा, "क्या हुआ इतनी जल्दी! कोई सपना आया क्या?"

यूँ तो राघव कभी डरता नहीं था लेकिन कभी-कभी ऐसा हुआ था कि वह किसी सुबह के सपने से डर के मारे उठ जाता और उसको फिर नींद ही नहीं आती। जब भी ऐसा होता तो वह अम्मा के पास आकर सो जाता।

"नहीं अम्मा।"

शालू ने उसको अपने पास खींच लिया। शालू ने राघव की बनाई हुई चाय देखी नहीं थी। राघव ने भी अम्मा को और ज़ोर से चिपका लिया। कमरे का पंखा एक सेकेंड से थोड़े से कम हिस्से के लिए फ़्रीज़ हो गया। घर थोड़ा-सा ख़ुश।

"उठो अम्मा, चाय बना दी है। तुम्हें मॉर्निंग वॉक पर जाना चाहिए। पता नहीं क्या-क्या दवा खाती रहती हो!"

"जब कोई एक दिन ग़लती से सुबह जल्दी उठ जाता है न तो ऐसे ही बहकी-बहकी बातें करने लगता है।"

शालू ने राघव को हटाकर उठने के लिए हाथ हटाया।

"चाय ठंडी हो जाएगी।"

राघव ने अम्मा को हाथ नहीं हटाने दिया।

"अम्मा।"

"बड़ा प्यार आ रहा है। कुछ तो चाहिए होगा!"

"कुछ नहीं चाहिए अम्मा।"

"फिर, इतना प्यार! कुछ तो हुआ होगा फिर!"

"अम्मा, स्टैनफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में एडमिशन मिल गया। दो घंटे पहले ही ईमेल आया। इसी चक्कर में नींद नहीं आई।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव की यह बात सुनते हुए शालू को ख़ुशी से कूद पड़ना चाहिए था लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह सोच में डूब गई। अक्सर होता है न कि जहाँ के लिए हम चले थे, वहाँ पहुँचते ही याद आता है कि पहुँचने की वजह खो चुकी है। एक साथ ही कई ख़याल उसके मन में आए। वह दिन आ ही गया कि राघव उससे दूर हो जाएगा। वह वहाँ सही से रह तो पाएगा? बाहर अकेले परेशान तो नहीं होगा? ये सब कुछ कुल दो-तीन सेकेंड के बीच में हुआ होगा। शालू ने अपने-आप को सँभालते हुए राघव को ज़ोर से गले लगाकर उसके माथे पर प्यार रख दिया।

“अब्बे, मज़ा आ गया। आज तो पार्टी होगी। बहुत ही बढ़िया। सेशन कब शुरू हो रहा है?”

“बस अम्मा तीन महीने बाद, अक्टूबर में।”

“अब्बे क्या बात कर रहा है, इतनी जल्दी?”

शालू उठकर बैठ गई। उसकी आँखों से नींद उड़ चुकी थी और इस बातचीत में चाय ठंडी हो चुकी थी। शालू ब्रश करने चली गई। राघव वहीं लेटा हुआ था। उसकी नज़र अलमारी के ऊपर रखे एक पुराने संदूक़ पर गई। वह संदूक़ जिसको खोलना अलाउड नहीं था। हर घर में ऐसे कुछ स्याह कोने होते हैं जो खोलने के लिए नहीं होते। इन जगहों पर कोई जाना नहीं चाहता क्योंकि ऐसी जगहों पर लौटकर जाना मुश्किल होता है और अगर एक बार पहुँच गए तो वापस आना असंभव हो जाता है। शुरू में राघव इस बात को लेकर परेशान होता था लेकिन धीरे-धीरे उसने उस राज़ से दोस्ती कर ली थी जो उसको पता भी नहीं था।

कुछ साल पहले राघव के ज़्यादा ज़ोर डालकर पूछने पर शालू ने बताया था कि उसके पापा के हॉस्पिटल के काग़ज़ हैं इसलिए वह उस संदूक़ को खोलना नहीं चाहती।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक,

बेटा हुआ है। अभी उसका नाम नहीं रखा है। अभी सब उसको बाबू बोलते हैं। मुझे राघव नाम पसंद है। हॉस्पिटल से आने के बाद समय ही नहीं मिला। सब लोग बोलते हैं कि इसकी शक्ल इसके पापा से मिलती है। कभी-कभी जब बिना बात के हँसता है तो तुम्हारे जैसा लगता है। बाक़ी फिर कभी।

इब्नेबतूती, नवंबर 1995, लखनऊ

पीएस- किसी औरत ने कहा था कि माँ बनने के साथ ही याद आ जाती हैं तमाम भूली हुई कहानियाँ। हर माँ के पास अनगिनत कहानियाँ होती हैं। जितनी वह सुनाती जाती है, उतनी ही कहानियाँ बची रह जाती हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अम्मा यार

चाय पीते हुए शालू कुछ सोच रही थी। राघव ने पूछा, "अम्मा यार, क्या हुआ?"

राघव ने लखनऊ के चलते-फिरते जुमले 'अमा यार' को 'अम्मा यार' बना दिया था। शालू ने भी दोस्ती में बोले जाने वाले शब्द 'अबे' को अपने हिसाब से 'अब्बे' बना लिया था। माँ और बेटे ने अपने लिए एक नई भाषा तो नहीं खोजी थी लेकिन नया तरीक़ा ढूँढ़ लिया था। हर परिवार की अपनी एक अलग भाषा होती है जिसमें जाने-पहचाने शब्दों के मतलब वो नहीं होते जो घर के बाहर चलते हैं, बल्कि वो होते हैं जो उस परिवार ने मिलकर ढूँढ़े होते हैं।

"कुछ नहीं हुआ। मैं तो बहुत ख़ुश हूँ। सोच रही हूँ कि तू पार्टी कब देगा।"

"आज शाम ही कर लेते हैं। आप बताओ किसको बुलाना है?"

"किसको क्या, निशा को बुला ले बस। तुझे पता ही है ज़्यादा लोगों को झेल नहीं पाती।"

"नाना को बुला लूँ?"

"बिलकुल नहीं।"

"अम्मा यार, अपने घर वालों से इतना नाराज़ नहीं होते।"

"पार्टी कैंसल करनी है?"

राघव चुप हो गया। जबसे उसको होश आया था वह नाना के घर जब भी जाता तो अम्मा साथ नहीं जाती। पता नहीं उनके बीच कौन-सी लड़ाई थी! तय यह हुआ कि आज शाम को ही पार्टी होगी।

राघव को नाश्ते और अख़बार के साथ ऊँघता हुआ छोड़कर शालू ऑफ़िस के लिए निकली। रोज़ की तरह उनकी राघव को दी जाने वाले फ़िज़ूल की हिदायत जारी थी कि बेटा टाइम पर खाना खा लेना।

शालू को पसंद थीं फ़िल्में, वह भी बिलकुल फ़िल्मी फ़िल्में, सलमान-शाहरुख़ वाली फ़िल्में। शाम को लौटकर वह साउथ इंडियन सिनेमा की हिंदी में डब फ़िल्में देखते हुए खाना बनाती थी। यूँ तो खाना बनाने के लिए

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसने बाई रखी हुई थी लेकिन उससे सब्ज़ी कटवाकर खाना ख़ुद ही बनाती थी।

शालू ने एक रंगीन-सी साड़ी पहन रखी थी। माथे पर एक मोटी बिंदी और बाल न बड़े न ही छोटे, आँख पर एक काला गॉगल, साथ ही मोटा-सा फैंसी पर्स जिसमें से डियो, परफ़्यूम, लिपस्टिक और कंघी झाँक रहे थे।

शालू अपने पहले फ़्लोर के मकान से नीचे उतरकर जब अपनी गाड़ी की तरफ़ बढ़ी। उसकी कार के आगे किसी ने कार लगा रखी थी। उस कार को निकाले बिना कोई तरीक़ा नहीं था कि शालू अपनी कार निकाल पाए। गलियों में यूँ कार का अटक जाना पेपर मिल कॉलोनी वालों के लिए कुछ नया नहीं था। जो भी उस समय दिख रहा था शालू ने सब जगह पूछ लिया लेकिन किसी को कुछ नहीं पता था। वह ग़ुस्से में लाल-पीली से आगे बढ़कर हरी-नीली भी हो चुकी थी।

ग़ुस्से में उसने राघव के नंबर पर कॉल किया। राघव का कॉल वेटिंग आ रहा था। ग़ुस्से में शालू ने फ़ोन कट कर दिया। इतने में राघव का कॉल बैक आया।

"क्या भूल गई अम्मा?"

"अरे कुछ नहीं भूली। तू नीचे उतरकर आ पहले।"

"हुआ क्या?"

"अब सब कुछ फ़ोन पर पूछ लेगा! अपनी बाइक की चाभी लेकर आना।"

शालू की कॉल आते ही राघव ने बालकनी से देखा। उसकी कार के आगे किसी ने कार खड़ी कर रखी थी। अपनी कार के आगे वो कार देखते ही राघव के मुँह से गाली निकलने वाली थी लेकिन उसने गाली रोक ली। कोई भी लड़का अपने दोस्तों के सामने जितनी तेज़ी से गाली दे देता है, उतनी ही तेज़ी से अपने घरवालों के सामने गाली रोक लेता है। समझदार घर वाले भी ख़ुश हो जाते हैं कि चलो लड़के ने लिहाज़ कर लिया।

वह भागते हुए नीचे उतरकर कार के पास पहुँचा। राघव ने मन-ही-मन उस कार वाले की माँ को कुछ सेकेंड्स तक याद किया।

"ये क्या पहनकर आया है? जा पहले ठीक कपड़े पहनकर आ, मुझे ऑफ़िस छोड़ दे।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"अम्मा, सही कपड़े क्या होता है? सही कपड़े पहने तो हैं शॉर्ट और टी-शर्ट।"

"जाकर पहले कोई फुल पैंट जींस पहनकर आ।"

उधर शालू के ऑफ़िस से भी फ़ोन आ रहा था कि प्रिंसिपल सेक्रेट्री के यहाँ रिव्यू मीटिंग है।

"जी सर, पहुँच रही हूँ। फ़ाइल मेरे पास ही है।" यह कहकर शालू ने राघव को इशारा किया।

जब तक राघव जींस पहनकर नीचे आया इतने में शालू के ऑफ़िस से फिर फ़ोन आया कि वह कहाँ तक पहुँची। उसने झूठ बोल दिया, "बस, पाँच मिनट में पहुँच रही हूँ सर।"

राघव ने अब तक अपनी बाइक निकाल ली थी। इधर राघव और शालू मोहल्ले की गली से बाहर निकले इतने में पान चबाए एक अधेड़ उम्र आदमी शालू के सामने वाली कार के पास अपनी कार हटाने के लिए पहुँचा। उसके चेहरे पर कोई शर्म या ग़लती का एहसास दूर-दूर तक नहीं था, हाँ एक बेशर्म हँसी ज़रूर थी।

बाइक उड़ाते हुए राघव रोड पर दाएँ-बाएँ काट ही रहा था कि मोहल्ले के पास वाले मंदिर से निकलते हुए शालू ने बाइक रुकवाई।

राघव कभी मंदिर के अंदर नहीं जाता था। शालू ने एक मिनट के अंदर फूल चढ़ा दिया और दीया भी जला दिया और दस सेकेंड में राघव की ख़ुशी और हँसी भी माँग ली।

"क्या यार अम्मा, अब लेट नहीं हो रहा!"

"भगवान को लेकर कुछ मत बोला कर।"

राघव बाइक उड़ाता हुआ शालू को उसके ऑफ़िस लेकर पहुँच गया। उतरने से पहले शालू ने बाइक के शीशे में अपनी शक्ल देखी, थोड़ा-बहुत उसको ठीक किया और ऑफ़िस के लिए तेज़ी से चलते हुए जाने लगी।

"देर हो रही है लेकिन शीशा ज़रूर देखना है।" राघव ने मम्मी को टोंट कसते हुए कहा। शालू ने भी जाते-जाते जवाब दिया, "कितनी भी देर हो जाए, शीशा देखने का टाइम हमेशा बचा रहता है।"

"अम्मा यार, तुम हमेशा इतना ज्ञान काहे देती हो? अच्छा ये बताओ मेरी मार्कशीट्स कहाँ हैं? कुछ पेपर वर्क के लिए बहुत अरजेंटली चाहिए।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"शाम को आकर देखती हूँ।"

लगभग भागते हुए शालू ने ऑफ़िस में एंट्री ली। अंदर उसके बॉस श्रीवास्तव साहब बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। वह अपने अंदर एक छोटे-मोटे ज्वालामुखी जितना गुस्सा भरे हुए थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक,

हमें लगा नहीं था कि हम कभी सरकारी नौकरी करेंगे। तुम्हें तो पता ही है हम एक जगह कहाँ ठहरकर बैठने वाले थे! देखते-देखते शादी का एक साल हो गया। तुम कैसे हो? जिस दिन ऑफ़िस में फ़ाइल निपटाते हुए थक जाते हैं तो सोचते हैं कि क्या सही में यही ज़िंदगी है! हम ठीक हैं, तुम सुनाओ तुम ठीक तो हो?

इब्नेबतूती, फ़रवरी 1995

पीएस- चिट्ठियों के पहुँचने के लिए उनका पोस्ट किया जाना ज़रूरी नहीं होता। उम्मीद है एक दिन वक़्त इन सब चिट्ठियों को तुम तक पहुँचा देगा, न भी पहुँचाए तो भी तुम पढ़ लोगे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

2015 वाला सरकारी ऑफ़िस नहीं दफ़्तर

शालू के बॉस यानी कि कृषि विभाग में डायरेक्टर ए. के. श्रीवास्तव उबलती हुई केतली बने कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक उछल रहे थे। श्रीवास्तव कुछ मामलों में इतने स्ट्रिक्ट थे कि ऑफ़िस के बहुत से लोग उनको एके-47 बुलाते थे।

"अवस्थी जी, क्या हो गया आपको? आप तो कभी ऐसे नहीं करती हैं!"

"सर क्या बताएँ, कोई कम्बख़्त हमारी कार के सामने अपनी कार खड़ी करके चला गया था।"

"आपको सरकारी वाहन मिला हुआ है। आप पता नहीं क्यों उसका प्रयोग नहीं करतीं! ख़ैर, फ़ाइल दिखाइए।"

श्रीवास्तव जी ने इसको बहाना ही माना और इस बात पर ज़्यादा ध्यान न देते हुए शालू से फ़ाइल अपने हाथ में ले ली। फ़ाइल खोलकर पढ़ते हुए उनकी नज़र एक जगह गई।

"अरे, आपको बोला था यह तो नेताजी के रिश्तेदार हैं। इनका काम क्यों रोक लिया है?"

"सर, वो पेपर वर्क कंप्लीट नहीं था। इससे कल को हमारी नौकरी चली जाती, कोई बात नहीं, आप पर भी इस पर उँगली उठ सकती थी।" शालू के बताने के अंदाज़ से ही पता चल रहा था कि यह सफ़ेद झूठ है।

शालू की यह आज़माई हुई ट्रिक थी। जब भी कोई ग़लत काम न करना हो तो उसको ऐसे बता दो कि सर इससे तो आप पर भी उँगली उठ सकती है। कोई सरकारी अधिकारी कभी इस बात के लिए हाँ नहीं कर सकता कि 'कोई बात नहीं, हम पर उँगली उठ जाने दो, तुम यह काम कर दो।'

अधिकारियों को ट्रेनिंग किस बात की दी जाती है पता नहीं लेकिन हर अधिकारी इस बात की ट्रेनिंग ले ही लेता है कि काग़ज़ पर सब कुछ ठीक कैसे रखना है। यह देश काग़ज़ पर ठीक था, ठीक है और ठीक रहेगा। इस देश की समस्याएँ भी केवल काग़ज़ पर ही ठीक की जा सकती हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुछ ही देर में शालू और उनके बॉस की प्रिंसिपल सेक्रेट्री के साथ में रिव्यू मीटिंग थी। श्रीवास्तव जी का छह महीने में रिटायरमेंट होने वाला था लेकिन फिर भी वह हर काम के अंदर घुसते थे। पैसा बनाने का कोई भी मौक़ा वह आख़िरी साँस तक खोना नहीं चाहते थे। हालाँकि उनको यह बात पता थी कि शालू पैसा नहीं लेतीं इसलिए उनको कभी भी बहुत उल्टे काम करने के लिए नहीं बोलते थे। लेकिन फिर भी कभी-न-कभी ऐसा काम पड़ ही जाता था जो बिना शालू के हो नहीं पाता था।

मीटिंग रूम में घुसने से पहले श्रीवास्तव जी ने शालू से रिक्वेस्टनुमा दरख़्वास्त की। रिक्वेस्टनुमा दरख़्वास्त का कुल इतना मतलब होता है कि कोई भी बात पड़े तो सब अपने ऊपर लेकर सँभाल लेना। हिंदुस्तानी नौकरशाही में अनकहा नियम होता है कि बड़े अधिकारी के सामने आपके अधिकारी का नाम ख़राब नहीं होना चाहिए ख़ासकर के तब, जब वो कुछ ही महीनों में रिटायर होने वाले हों।

यूँ तो श्रीवास्तव जी कोई ख़राब आदमी नहीं थे लेकिन कभी-कभार शालू के कपड़ों, मेकअप और साड़ी के रंग पर कुछ कमेंट मार दिया करते थे। श्रीवास्तव साहब की बीवी थी नहीं और बच्चे सब विदेश में थे तो अक्सर ही शालू को घर पर बुलाने का बहाना ढूँढ़ते थे। हालाँकि उनकी इन्टेंशन ऐसी कोई ख़राब नहीं थी लेकिन कभी-कभार अकेले में कोई बात करने वाला हो इस उम्मीद में वह शालू से बात किया करते।

शालू नौकरी करते-करते इतना तो पक्का हो ही चुकी थीं कि श्रीवास्तव जी जैसे लोगों को सँभालना कैसे है। श्रीवास्तव जी जितना मुस्कुराकर शालू के कपड़ों पर कमेंट करते थे- ‘आज बहुत अच्छी लग रही हैं मैडम।’ या फिर, ‘आज बिलकुल अलग लग रही हैं मैडम।’

शालू उससे भी ज़्यादा मुस्कुराकर उसका जवाब दे दिया करती थीं- ‘थैंक्स सर, प्रिंसिपल सेक्रेट्री साहब के यहाँ से फ़रमान आया है, जवाब माँगा है।’

वैसे भी लड़कियाँ और औरतें अपने आसपास एक लाइन खींचकर चलती हैं। उनको ख़ूब समझ में आता है कि कौन लाइन क्रॉस कर रहा है और उसको ठीक कैसे करना है।

श्रीवास्तव जी तो फिर भी पढ़े-लिखे बड़े अधिकारी थे, जब भी लाइन क्रॉस करते थे तो अपने-आप ठीक हो जाते थे। असल में दिक़्क़त शालू के

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

नीचे वाले कर्मचारियों से थी। अगर वह किसी से हँसकर बात भी कर लें तो वे सब पीठ पीछे तरह-तरह की कहानियाँ बनाया करते थे।

यहाँ तक तो ठीक था लेकिन ऑफ़िस में असली समस्या बाबू और चपरासी थे। उनका ईगो इतना ज़्यादा था कि शालू से डाँट सुनना पसंद नहीं करते थे। वह यह नहीं देखते थे कि शालू भी साहब है। उनके लिए वह औरत थी और कोई औरत डाँट दे, ये कम-से-कम कृषि विभाग के बाबू और चपरासी के शान के ख़िलाफ़ था।

ऑफ़िस में चलने वाली ये कहानियाँ ग़लत होती हैं लेकिन जो कहानियाँ मज़ा बता दे रही होती हैं तो उनको लोग ग़लत मानने से इनकार करते रहते हैं।

प्रिंसिपल सेक्रेट्री की मीटिंग में वही हुआ जिसका डर था। उसने श्रीवास्तव जी को इतना बेइज़्ज़त किया कि श्रीवास्तव जी कहीं पर भी मुँह दिखाने लायक़ नहीं बचे थे। इस मीटिंग का समय तय हुआ था कुल एक घंटे का, लेकिन मीटिंग पूरे 4 घंटे चली।

मीटिंग से लौटने के बाद शालू का दिमाग़ ख़राब हो चुका था। एक तो मीटिंग ख़राब गई, उस पर से राघव के जाने की ख़बर, उस पर से सुबह गाड़ी वाला कांड। सब कुछ एक साथ आ गया था। उन्होंने लौटकर अपने ऑफ़िस में चपरासी रामदीन को चाय लाने के लिए कहा।

रामदीन जो चाय लेकर आया वह ठंडी थी।

शालू का दिमाग़ पहले से ही ख़राब था उस पर से ठंडी चाय, उसके दिमाग़ का दूध उबल गया और उबलकर रामदीन पर फट पड़ा। उसने बड़े बाबू को बुलाया क्योंकि प्रिंसिपल सेक्रेट्री को एक फ़ाइल का जवाब उसी दिन शाम तक भेजना था। पता चला कि बड़े बाबू ऑफ़िस से घर जा चुके हैं।

उसने बड़े बाबू को फ़ोन किया।

"कहाँ हैं आप?"

"हमें लगा मैडम कि आज आप लोग अब लौटकर आएँगे नहीं इसलिए हम चले आए।"

"कोई बात नहीं। घर पहुँच गए हैं?"

"जी मैडम।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"कोई बात नहीं, एक काम करिए। तुरंत से पहले ऑफ़िस आ जाइए।"

"क्या कह रहीं मैडम?"

"हमने कहा कि बड़े बाबू साहब, आप तुरंत से पहले ऑफ़िस चले आइए। कोई दिक़्क़त तो नहीं न आने में?"

बड़े बाबू सन्न थे। हालाँकि वह मौक़े की नज़ाकत समझ गए और अपने घर पर बीवी के सामने ही फ़ोन पर हाथ रखकर हवा में दो-चार गालियों से गुस्सा निकालकर ऑफ़िस के लिए चल दिए। चलने से पहले अपने मन में बुदबुदाए भी- 'सरकारी नौकरी साली पिराइवेट से बुरी हो गई है।'

बीवी ने तंज़ कसा, "एक दिन तो जल्दी आए थे आज फिर पीने निकल लिए?"

उन्होंने गुस्से में बीवी को भला-बुरा सुनाया। बीवी ने थोड़ी देर बाद अपना गुस्सा बड़े लड़के पर निकाल लिया। बड़े लड़के ने अपना गुस्सा बाहर जाकर मोहल्ले के दूसरे लड़के पर निकाल लिया।

फ़ोन रखने के बाद शालू को याद आया कि उसको भूख बहुत तेज़ लगी है इसलिए गुस्सा ज़्यादा आ रहा है और सुबह हड़बड़ी में वह अपना टिफ़िन घर ही भूल आई है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मिट्टी पलीद

राघव को घर में दुनिया भर के काग़ज़ पलटने के बाद भी अपनी मार्कशीट नहीं मिली। वह ऐसा होता है ना कि जो काग़ज़ ढूँढ़ना होता है वह नहीं मिलता, उसके अलावा सारे पुराने खोए हुए ज़रूरी काग़ज़ात मिल जाते हैं।

भूख से तड़पती शालू को ध्यान आया कि राघव का बीच मीटिंग में कॉल आया था।

अगर खाना खाने में ज़्यादा देर हो जाती थी तो शालू को ग़ुस्सा तो आता ही था, साथ में सिर दर्द होने लगता था। वैसे तो यह बात राघव को पता थी लेकिन वह भी फ़ोन कर-कर के परेशान हो चुका था।

राघव को यह तो पता नहीं था कि शालू ने अब तक खाना नहीं खाया है। उसने अम्मा की कोई भी बात सुने बग़ैर चिल्लाना शुरू कर दिया, "क्या यार अम्मा, तब से फ़ोन कर रहा हूँ। एक बार उठा तो लेना था।"

उधर से शालू भी चिल्ला दी, "देख, मैंने खाना नहीं खाया है। बहुत ग़ुस्सा आ रहा है।"

राघव ने मौक़े की नज़ाकत समझते हुए चुप रहना ही ठीक समझा।

बाहर का खाना शालू बहुत कम खाती थी और खाना न खाने की वजह से अब दिमाग़ काम करना बंद हो चुका था।

"मैं टिफ़िन पहुँचा दूँ?"

"तूने खाना खाया?"

"नहीं अम्मा।"

"एक काम कर, तू यहीं ऑफ़िस आ जा और तेरी बाइक से ही पास में हज़रतगंज कहीं खाने चलते हैं, फटाफट हो जाएगा। वैसे भी आज ऑफ़िस में बहुत टाइम लगने वाला है।"

"अम्मा, शाम को तो एडमिशन की पार्टी है न?"

"तू आ जा, फिर देखते हैं।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

भूख तो राघव को भी लग रही थी और हज़रतगंज में खाने का मोह वह छोड़ना भी नहीं चाहता था।

शालू और राघव कभी-कभार संडे को हज़रतगंज में आकर खाना खाते थे। खाना खाने के बाद वे कुछ देर तक लवलेन में टहला करते हैं। शालू वहाँ से कोई किताब वग़ैरह ख़रीदती। उधर राघव इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान पर जाकर कोई नया मोबाइल चेक करता है कि क्या नया फ़ीचर आया है।

हज़रतगंज चौराहे पर पुराना कॉफ़ी हाउस अब दोबारा चलने लगा था। हज़रतगंज टहलते हुए शालू कई बार राघव के पापा की कोई बात याद करके बताती। ऐसे कि जैसे उनको बहुत मिस करती हो। मिस न भी करती हो तो भी उनकी बात से लगता कि वह किसी ऐसे की कमी महसूस करती है जिससे वह खुलकर बात कर पाए।

वो खिलौने, वो दिन, वो बातें जिनसे हम बने होते हैं, वो कभी लौटकर नहीं आते।

यूँ तो राघव शालू से सभी बातें करता लेकिन आख़िर शालू थी तो उसकी माँ और माँ से कुछ बातें नहीं की जा सकतीं।

शालू कई बार जब ऑफ़िस से लौटती और उसके पैर में बहुत दर्द हो रहा होता या सिर फट रहा होता तो भी वह राघव से यह बात नहीं कहती कि फालतू ही बच्चा परेशान होगा। माँएँ मज़बूत होती नहीं हैं, बच्चों के सामने मज़बूत होने का नाटक करती हैं और नाटक करते-करते सही में एक दिन मज़बूत हो जाती हैं।

कई बार ऑफ़िस से लौटने के बाद जब उसको बहुत ग़ुस्सा आ रहा होता तब वह राघव के पापा को मिस करती कि काश वह होते तो शाम की चाय पर वह दिन भर की शिकायतें करती। किसी संडे को अख़बार पढ़ते हुए वह कहती कि इस दुनिया को हो क्या गया है। इतने मर्डर और रेप हो रहे हैं कि यह दुनिया शायद रहने लायक़ नहीं बची है। इतनी मामूली-सी शिकायत है जैसे कि आज इतनी गर्मी क्यों है- ये सब शिकायतें शालू करना चाहती थी लेकिन कर नहीं पाती थी।

ये बातें चाहें कितनी भी मामूली क्यों न हों लेकिन अगर कह दी जाएँ तो बोझ हल्का हो जाता है। बातों को न कहने का बोझ शायद सबसे भारी न होता हो लेकिन बातें न कह पाने का बोझ सबसे भारी होता है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव कभी यूँ ही मज़ाक़ में टहलते हुए शालू से पूछता, "अम्मा, पापा से कितना प्यार करती थी?"

शालू इस बात का जवाब हमेशा मज़ाक़ में देती, "बहुत प्यार करते थे। तू ऐसे ही थोड़े पैदा हो गया है!"

"क्या यार अम्मा, तुम सही से नहीं बताती हो। कभी सही से बताओ न कि पापा प्यार से कैसे बोलते थे? क्या उन्होंने कभी पुरानी फ़िल्मों के हीरो की तरह तुम्हारे लिए चाँद तारे लाने का कोई वादा किया था।"

"ऐसा बस राजेश खन्ना के मुँह से अच्छा लगता है।"

"तो पापा राजेश खन्ना से कम थोड़े थे!"

राघव हमेशा अपने पापा के बारे में जानने की कोशिश करता। उसके पापा की आख़िरी याद बहुत धुँधली हो चुकी थी। उसे बस हॉस्पिटल का कमरा याद था। जहाँ पापा के मुँह में तमाम नलियाँ घुसी हुई थीं। राघव मुश्किल से चार साल का था जब पापा एक एक्सीडेंट के बाद चल बसे थे।

राघव जानना चाहता था कि पापा उसे राघव बोलते थे या मम्मी के जैसे रघु बोलते थे। वह खिलौने लाते थे या नहीं। वह कहीं घुमाने ले जाते थे या नहीं। वह अपने पापा की याद को मम्मी की बातों से पूरा करने की बहुत कोशिश करता लेकिन फिर अपने-आप को रोक भी लेता कि अम्मा को बार-बार पापा की याद दिलाना ठीक नहीं है।

हमारे अंदर का सारा ख़ालीपन असल में केवल एक व्यक्ति का ख़ालीपन है। एक व्यक्ति के ख़ालीपन को पूरी दुनिया मिलकर भी भर नहीं पाती।

शालू कभी-कभार मूड में होती तो बताती कि जब वह बहुत प्यार से बोलते तो तुम नहीं बोलते, बल्कि 'आप' बोलते थे।

"आप आज शाम हमारे साथ हज़रतगंज चलेंगी, हुस्न-ए-मल्लिका जोहरा-जबीं?"

राघव भी अपने पापा की नक़ल करते हुए निशा से कोई बात कहते हुए आप बोलने लगता। हर लड़का प्यार जताते समय सबसे पहले अपने बाप की नक़ल करता है।

राघव अपनी अम्मा को लेकर हज़रतगंज में मोती महल गया। जहाँ दोनों ने छककर ऑर्डर किया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इतनी भूख लग रही थी कि पाँच मिनट और खाना नहीं मिलता तो क़सम से बेहोश हो जाती बाई गॉड!" शालू ने अपनी प्लेट से आख़िरी कौर लेते हुए कहा।

"अम्मा, तुम बस बोलती हो, कभी बेहोश होती नहीं और क़सम के साथ 'बाई गॉड' मत बोला करो। बहुत चीप लगता है क़सम से।"

"चल खाना खा... तू हाफ़ पैंट पहनकर कहीं चला जाता है वह ज़्यादा चीप लगता है। चुपचाप खाना खा।"

"अम्मा यार, खाते हुए बेइज़्ज़ती मत किया करो।"

"ठीक है अगली बार से नहीं करूँगी।"

राघव और शालू ने खाना ऐसे खाया जैसे आख़िरी बार खा रहे हों। खाने के बाद दोनों निकलकर मीठा पान खाने भी गए।

शालू को ऑफ़िस के बहुत काम निपटाने थे। शाम के प्लान की मिट्टी पलीद हो चुकी थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक,

सोचा था दुनिया घूमूँगी लेकिन एक लखनऊ में ही पड़े-पड़े अब मन ऊबता है। इस बीच बहुत कुछ हो गया। इनका एक्सिडेंट हो गया है। एक महीने से हॉस्पिटल ही घर हो गया है। हॉस्पिटल से नफ़रत हो गई है। इनकी हालत ठीक नहीं है। राघव अभी बहुत छोटा है। सही से मिलाकर बोल भी नहीं पाता। अपनी उम्र के बच्चों से कम तुतलाता है। कभी-कभी लगता है कि कोई बुरा सपना चल रहा है। अभी नींद टूटेगी और सब कुछ ठीक हो जाएगा। तुम ठीक हो?

इब्नेबतूती, जनवरी 2000

पीएस- शब्दकोश से 'दुःख' शब्द को हटा देना चाहिए, बाक़ी सभी शब्द भी वहीं लेकर जाते हैं। यहाँ तक कि सुख जैसा मामूली खोया हुआ शब्द भी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

रूमाल

राघव ने एक लिस्ट बनानी शुरू कर दी थी कि उसको जाने से पहले क्या-क्या चाहिए होगा। शाम को वादे के बाद भी न मिल पाने की वजह से निशा नाराज़ थी। एडमिशन की ख़बर के बाद से अभी तक वह मिल नहीं पाई थी इसलिए भी नाराज़ थी।

लंबी या छोटी कैसी भी नाराज़गी हो आख़िरकार लड़ाई शुक्ला चाट भंडार पर आकर ख़त्म हो जाती थी। राघव निशा को कितना प्यार करता था उसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि निशा को चाट में कितनी चटनी चाहिए होती है ये बात शुक्ला जी अलावा दुनिया में बस राघव को पता थी।

यूँ तो निशा चाहती नहीं थी कि राघव लंबे समय के लिए बाहर जाए लेकिन निशा उन लड़कियों में से थी जो मानती थी कि सच्चे प्यार को कभी-न-कभी लॉन्ग डिस्टेंस वाला टेस्ट देना ही पड़ता है।

दोनों मज़े से चाट खाते हुए अपने आने वाले कल के बार में सोच ही रहे थे। प्यार में आदमी आज में जीकर होने वाले कल में जीने का प्लान बनाता ही रहता है। ये प्लान बनाना एक प्यार में होने की तरह एक सतत प्रक्रिया है।

अगर किसी स्टूडेंट का मूड ऑफ़ करना हो तो पूछ लेना चाहिए- "और आगे का क्या सोचा है", लेकिन अगर कोई प्यार में है तो आदमी सबसे पहले आगे का ही सोचता है।

"कल को हम ये करेंगे। कल को हम फ़लानी जगह जाएँगे। कल को जब हम बच्चे बनाएँगे तो उनके नाम क्या होंगे...", ऐसी तमाम बेवजह फालतू की बातें जो कभी सच न होकर भी हमारी याद में जमा होती रहती हैं।

राघव और निशा प्लान बनाने में बिज़ी थे कि इतने में शालू के ऑफ़िस वाले श्रीवास्तव जी का राघव को फ़ोन आया।

"बेटा, शालू जी की तबीयत ठीक नहीं लग रही थी। हम लोग इनको कृष्णा मेडिकल लेकर जा रहे हैं। आप वहीं आ जाओ।"

कुछ ही सेकेंड में राघव के चेहरे से ख़ुशी उड़कर लखनऊ की हवा में मिल गई। सड़क पर ट्रैफ़िक की आवाज़ एकदम शांत हो गई।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव को पहली बार निशा ने इतना परेशान देखा था। जब कृष्णा मेडिकल के बाहर राघव ने बाइक लगाने के बाद अपना हेलमेट उतारा तो उसकी आँखों में पानी ठहरा हुआ था। इससे पहले राघव को कभी किसी ने रोता हुआ नहीं देखा था। वह रोता था, बिना वजह रोता था, लेकिन कभी किसी के सामने नहीं।

कभी-कभी ट्रेन से सफ़र करते हुए खिड़की वाली सीट पर बैठे हुए आँसू आ जाते थे, लेकिन उनकी वजह क्या होती थी, ये कभी वह समझ नहीं पाया।

जब वे अंदर इमरजेंसी में पहुँचे तो डॉक्टर शालू के पास ही खड़ा था।

"समय पर खाया कीजिए। स्ट्रेस मत लिया कीजिए।"

यह पहली आवाज़ थी जो राघव को सुनाई पड़ी।

राघव को देखते ही शालू ने एकदम से अपने-आप को ठीक करने की कोशिश करते हुए अपने-आप ही कहना शुरू कर दिया, "कुछ नहीं हुआ है।"

राघव ने डॉक्टर की तरफ़ देखा। डॉक्टर समझदार था, उसने राघव से पूछा, "आप बेटे हो?"

"जी।"

"इनका ख़याल रखो। अभी तो माइल्ड चेस्ट पेन है और हल्का-सा डायबिटिक हैं लेकिन अगर अब से ध्यान नहीं रखेंगी तो तबियत और बिगड़ेगी ही। घर पर और कौन है?"

"बस मैं।"

जैसे ही राघव ने इतना बोला। शालू ही अपने-आप को सँभालते हुए बोली, "अरे ऐसा कुछ नहीं हुआ है।"

माएँ कमज़ोर दिखना नहीं चाहतीं, कम-से-कम बच्चों के सामने तो बिलकुल भी नहीं। शालू कुछ अलग नहीं थी।

निशा शालू के पास आकर बैठ गई और हाथ पकड़ लिया। उधर डॉक्टर राघव को लेकर बाहर गया। उसने राघव को दवाएँ समझाते हुए फिर एक बार कहा, "इनका ख़याल रखो। टेंशन लेने की वजह से ऐसा हुआ है। ज़्यादा-से-ज़्यादा बात किया करो। अकेला मत छोड़ा करो।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव ने डरते-डरते अगला सवाल पूछा, "आप सब कुछ सच बता रहे हैं न, कुछ छुपा तो नहीं रहे?"

डॉक्टर ने कहा, "चिंता की बात नहीं है। बस ये अलार्म है, अलर्ट हो जाओ। मौक़ा लगे तो कहीं घुमा लाओ और हाँ एक दिन के लिए हॉस्पिटल में रोक रहा हूँ। कल डिस्चार्ज करा लेना।"

डॉक्टर यह कहकर आगे बढ़ गया। राघव की नज़र पहली बार इमरजेंसी में पड़ी। हर चेहरा परेशान था। अस्पताल मंदिर जैसे होते हैं, यहाँ भगवान के नहीं अपने दर्शन होते हैं।

राघव हॉस्पिटल की फ़ॉर्मैलिटी पूरी करने में लग गया।

उधर निशा और शालू आपस में बातचीत कर रहे थे। निशा से शालू की बहुत अच्छे से बात होती थी।

"बजरंगी भाईजान देखी तुमने?" शालू ने निशा से पूछा।

"नहीं आंटी। कैसी है?"

"एक बार देखने लायक़ है। लड़की बहुत क्यूट है।" शालू ने पास रखा पानी माँगते हुए कहा।

शालू की एक आदत थी वह बाक़ी माँओं की तरह कभी पढ़ाई की बात नहीं करती थी। साधारण-सी ऑर्डिनरी बातें ही करती थी।

राघव ने आते ही माँ का हाथ पकड़ा। इससे पहले वह कुछ बोलता शालू बोल पड़ी, "कुछ नहीं हुआ है, डॉक्टर की बात में मत आ जाना। मैं थोड़ी देर में घर चलूँगी।"

"डॉक्टर ने एक दिन रुकने के लिए बोला है।"

"सब पैसा बनाने के धंधे हैं। मुझे नहीं रुकना। बोल रही हूँ, कुछ नहीं हुआ है।"

"अब हुआ हो चाहे न हो, एक दिन तो यहीं रुकना पड़ेगा।" राघव ने वहीं पड़ी पानी की बोतल से बचे हुए दो-तीन घूँट पानी पीने के बाद कहा। इसके बाद उसने अपने घर की चाभी निशा की तरफ़ बढ़ाई और बोला, "यार निशा, एक काम कर घर पर जाकर मेरे कपड़े एक बैग में डालकर ले आ।"

ये सुनते ही शालू बेड से उठने लगी।

"यहाँ रात में रुकने का सवाल ही पैदा नहीं होता।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यह बोलने में और उठने के चक्कर में उसके हाथ में लगा ड्रिप बाहर आ गया।

“यार अम्मा, इतनी हीरोइन काहे बन रही हो यार! मैंने बोल दिया रुकना है तो रुकना है।”

निशा अभी सोच ही रही थी कि बीच में उसका बोलना सही भी रहेगा या नहीं। बहुत देर तक सोच-समझकर तोल-मोलकर उसने कहा, “आंटी, एक दिन की बात है। आप नहीं रुकोगे तो राघव परेशान होगा।”

‘राघव परेशान होगा’ वाली बात काम कर गई।

इस पर शालू बोली, “वही कमरा लेना जिसमें टीवी लगा हो और साउथ की फ़िल्म वाला चैनल आता हो।”

“जैसी आज्ञा अम्मा श्री।” राघव ये बोलकर हॉस्पिटल की फ़ॉर्मैलिटी पूरी करने चला गया।

निशा ने शालू से पूछा, “आंटी, आप का भी कुछ सामान लाना है?”

“हाँ ऐसा है, कल यहाँ से जाने के लिए एक साड़ी सूट ले आना और एक साड़ी, साड़ी वह नीली-हरी वाली अलमारी में सबसे ऊपर रखी हुई है। एक काम कर एक उसके साथ पीली साड़ी भी होगी वह भी रख ही लेना। पता नहीं सुबह क्या मूड बन जाए।”

शालू अभी अपनी उँगली पर जोड़ ही रही थी कि कुछ छूटा तो नहीं इतने में वह बोली, “रात के लिए एक नाइटी तो भूल ही गई।”

इस पर पास खड़ी नर्स ने बोला, “मैडम, हॉस्पिटल में आपके लिए कपड़े मिलेंगे।”

शालू ने गुस्से में नर्स की ओर देखा और बोली, “यहाँ के कपड़े मेरी जूती पहनेगी। पता नहीं कपड़े सही से साफ़ करते भी हैं या नहीं। वैसे एक बात बताओ, कुछ सीरियस तो नहीं हुआ है न मुझे?”

नर्स को हल्का-सा गुस्सा तो आया था लेकिन वह बोली, “मैडम, लाइफ़ का भरोसा थोड़े है। हम लोग तो रोज़-रोज़ यही सब देखते हैं। किसी को भी कुछ भी हो जाता है।”

यह सुनकर निशा अपनी हँसी नहीं रोक पाई। इतने में राघव आ चुका था। उनको कमरा अलॉट हो चुका था। निशा चाभी लेकर घर चली गई।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इधर हॉस्पिटल के कमरे में पहुँचने के पाँच मिनट के अंदर ही शालू के लिए हॉस्पिटल वाले कपड़े आ गए।

उसने कपड़े देखे। इससे पहले कि वह कुछ बोलती, वहीं पास में खड़ी नर्स ने कहा, "मैम, चेंज कर लेंगी न कि करा दूँ?"

शालू को कोई मदद के लिए बोल दे तो मतलब वह तो गया, वह चाहे आदमी हो औरत हो, चाहे भगवान ही क्यों न हो। उसने दाँत पीसते हुए नर्स के कपड़े पर उसके नाम का लेबल पढ़ा और कहा, "बेटा आरती, मरे थोड़े जा रहे हैं। अपने-आप बदल लेंगे। बदलकर बुलाते हैं।"

वह वाशरूम में जब कपड़े बदलने गई तब राघव ने कमरे के परदे हटाकर बाहर देखा तो कुछ रोते हुए लोग एक डेड-बॉडी लेकर जा रहे थे। अगले ही पल उसने परदा लगा दिया।

मौत इतनी आसपास होकर भी चुपचाप होती है। जब सामने कोई ऐसा दिखता है जिससे होकर वह गुज़र चुकी होती है तब समझ आता है कि साँसें चाहे जितनी लिखी हों, होती वह कम ही हैं। दुनिया के सब रास्ते आगे जाकर या पीछे जाकर कहीं एक जगह मिल जाते हैं।

परदा लगाने के बाद जब वह पलटा तो हॉस्पिटल के कपड़ों में उसने अपनी माँ को बहुत ध्यान से देखा। उसको अपनी माँ के चेहरे में एक 20 साल की लड़की भी दिखी और एक ऐसी औरत भी जिसके बाल नए-नए सफ़ेद होना शुरू हुए थे। उसने थोड़ी और देर तक अपनी माँ को देखा तो उसमें एक बाप भी दिखा। वह अकेली भी दिखी। उसकी आँखों में जब राघव ने झाँका तो उसको नींद की तलाश में बेचैन पुतलियाँ भी दिखीं। उसने आगे बढ़कर अपनी माँ के हाथ को हाथों में लिया और उसको देखा। हाथ में उसको कटी-पिटी लकीरें दिखीं। वे सड़कें और जगह दिखीं जहाँ ये हाथ गए थे। वे लकीरें भी दिखीं जो अभी बनी नहीं थीं। उसने माँ का हाथ लेकर अपनी आँखों पर रख लिया। हाथों से होकर एक नदी बहने लगी। नदी ऐसे बह रही थी जैसे उसने अभी-अभी बहना सीखा हो। समय कुछ देर के लिए नदी हो गया।

सूखी हुई नदी ही एक बहती हुई नदी की असली कहानी जानती है। जैसे बीते हुए दिन के सभी रंग मिलकर ब्लैक एंड व्हॉइट का नया शेड ढूँढ़ लेते हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

समय ने तब जाकर अँगड़ाई ली जब शालू ने कहा, "अब्बे रघू, तू ऐसे करेगा अब। कुछ हुआ थोड़े है बेटा। जा मुँह धुल के आ।"

जाने से पहले राघव ने अपनी माँ की आँखें देखीं। उसमें एक बूँद आँसू नहीं था।

शालू रोज़ ही अपनी आँखों में एक दवा डालती थी। पूछने पर बताती थी कि पानी सूख गया है। उसी समय राघव ने फिर पूछा, "तुम्हें रोना नहीं आता?"

शालू ने यह नहीं कहा कि पानी सूख गया है। उसने कहा, "आँसू सूख गए हैं। कोशिश करके भी नहीं आते।"

राघव ने वाशरूम से निकलकर जब अपनी जेब टटोली तो याद आया कि वह रूमाल फिर से भूल आया है।

शालू ने हॉस्पिटल का तौलिया उसकी तरफ़ बढ़ाया। जितनी बार तौलिया रगड़ने से मुँह पुछ जाता उससे ज़्यादा बार राघव ने तौलिये को अपने मुँह पर रगड़ा। एक आध आँसू कई बार धुलने के बाद भी बचे रहते हैं।

इतने में निशा सामान लेकर आ चुकी थी। उसको राघव के रोने का पता नहीं चला। बैग में जितना सामान मिला उतना वह भरकर ले आई थी।

"सामान ढूँढ़ने में कोई दिक़्क़त तो नहीं हुई?"

"नहीं आंटी, आपका सामान तो जैसे-जैसे आपने बताया था वैसे ही रखा था। हाँ राघव का सामान ढूँढ़ने में ही देरी लगी।"

इतने में नर्स दवा चढ़ाने के लिए आ चुकी थी। दोनों कमरे से बाहर निकले। राघव ने हॉस्पिटल की दूसरी मंज़िल से उतरकर नीचे पास वाली टपरी से एक सिगरेट लेकर सुलगा ली। वह कुछ बोल नहीं रहा था। वैसे भी रोने के बाद आदमी फ़ुर्सत से सोना चाहता है लेकिन ज़िंदगी जब जीभर रोने के मौक़े देती है तो सोने के मौक़े छीन लेती है। बस बच्चे ही रोकर आसानी से सो जाते हैं।

"तू ज़्यादा सोच रहा है।"

राघव ने निशा की इस बात का भी कोई जवाब नहीं दिया। निशा को लगा कि अब नहीं बोलना चाहिए। राघव यूँ तो सिगरेट नहीं पीता था, बस कभी-कभार जब या तो बहुत ख़ुश होता था या फिर जब बहुत उदास होता था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"कुछ बोल!" निशा ने सिगरेट ख़त्म होने के बाद कहा।

"तुम घर जाओ मैं यहाँ देखता हूँ।" राघव ने जाने से पहले निशा को एक बार गले लगाया। गले लगते हुए हॉस्पिटल के गार्ड ने देखा और दूसरे गार्ड को इशारा किया।

जाने से पहले निशा ने राघव के कान में कहा, "टेक केयर, कुछ होगा तो बोल देना।"

राघव ने जाने से पहले न पलटकर देखा न ही जवाब दिया।

इधर कमरे में शालू ने पहले से दस बार देखी हुई साउथ इंडियन फ़िल्म लगा रखी थी। राघव ने कपड़े चेंज किए। उसका खाना आ चुका था।

"सिगरेट पीकर च्विंगम खाना भूल गया आज?" शालू ने टीवी पर नज़र गड़ाए हुए कहा।

राघव कोई जवाब देता इससे पहले रात में ड्यूटी वाले डॉक्टर साहब आ चुके थे। शालू ने टीवी की आवाज़ को कम करने के लिए रिमोट में वॉल्यूम का बटन दबाया लेकिन वॉल्यूम कम हो ही नहीं रहा था।

डॉक्टर ने रिपोर्ट देखी और पूछा, "कैसा महसूस कर रही हैं?"

"एक दम मस्त।" शालू ने रिमोट को बेड पर पटककर वॉल्यूम कम करना चाहा लेकिन रिमोट की बैट्री निकलकर नीचे गिर गई।

डॉक्टर आवाज़ से डिस्टर्ब हो रहा था उसने नर्स को टीवी बंद करने का इशारा किया।

"पहले भी कभी ऐसे बेहोश हुई हैं?"

"आख़िरी बार तो इंडिया को जब ऑस्ट्रेलिया ने फ़ाइनल में हरा दिया था तब हुई थी। उस ज़माने में 5 हज़ार रुपये की शर्त हार गई थी।"

डॉक्टर हँसने लगा, "बस ऐसे ही टेंशन फ़्री रहा कीजिए। अभी हाइपर टेंशन बस शुरू हुआ है। ध्यान रखेंगी तो बढ़ेगा नहीं। घर पर कौन-कौन है?"

राघव जो अभी तक नीचे गिरी हुई बैट्री को ढूँढ़ ही रहा था, बोला, "मैं हूँ डॉक्टर साहब।"

डॉक्टर ने कहा, "तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि ये किसी भी चीज़ की टेंशन न लें।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव के पास हाँ में सर हिलाने के अलावा कोई ऑप्शन तो था नहीं।

"इस बेचारे को मैं टेंशन देती हूँ।"

"घर में कोई और, इसके पापा कहाँ हैं?" डॉक्टर ने रिपोर्ट्स की फ़ाइल को रखते हुए पूछा।

"ही इज नो मोर। हाँ, होते तो टेंशन डिवाइड हो जाती। अभी सारा लोड इसी पर आ जाता है।" शालू ने जवाब दिया।

"आपको कुछ नहीं हुआ है। बस इतना मत सोचा कीजिए।"

"टेंशन लेती नहीं हूँ लेकिन कभी-कभार लोग दे देते हैं। अब जैसे दिमाग़ ये सोच रहा है बैट्री नहीं मिली तो फ़िल्म छूट जाएगी।"

डॉक्टर ने जाने से पहले नर्स से कहा, "इनका रिमोट बदलवा दो। बस ऐसे ही ख़ुश रहा कीजिए, मस्त रहा कीजिए। उस मैच में मैं पाँच सौ रुपये जीता था।"

"इंडिया के हारने पर पैसे कोई कैसे लगा सकता है!" शालू ने डॉक्टर साहब के जाने के बाद नर्स से टोंट कसने के अंदाज़ में कहा।

राघव का खाने का इतना मन नहीं था। उसने थोड़ा खाकर प्लेट ऐसे ही छोड़ दिया। शालू को अपना सादा खाना बहुत ही बेकार लगा। उसने राघव की प्लेट से बचा हुआ मीठा ख़ुद खाया। राघव मना करना चाहता था लेकिन शालू को मना करना इतना आसान होता तो क्या बात थी!

खाकर राघव ने वहीं पास में पड़े छोटे से बेड पर अपना कंबल और चद्दर बिछा लिया। शालू को हैवी दवाइयाँ दी गई थीं इसलिए वह दस मिनट में सो गई। राघव की आँखों में नींद बिलकुल भी नहीं थी।

वह अपना मोबाइल पलट ही रहा था कि निशा का मैसेज आया।

"यार सॉरी!"

"क्या हुआ?"

"यार मैंने अलमारी के ऊपर जो पुराना संदूक़ रखा था वह खोला था।"

इसके बाद निशा बहुत देर तक टाइप करती रही और डिलीट करती रही। राघव इंतज़ार करता रहा कि निशा पूरी बात बताए।

"मैं थोड़ा कन्फ़्यूज़ हो गई थी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"ऐसा क्या है उसमें?"

"तूने आज तक नहीं देखा?"

"नहीं... ऐसा क्या है?"

निशा ने कोई जवाब नहीं दिया। न ही राघव ने कुछ पूछा।

राघव ने अपने-आप को समझा लिया था कि उसमें पापा के हॉस्पिटल के कागज़ हैं। यही समझाकर उसने सोने की कोशिश शुरू कर दी लेकिन पता नहीं क्यों राघव का दिमाग़ काम नहीं कर रहा था।

वह पता नहीं क्या-क्या सोचकर ख़ुद को बहलाकर नींद को बुलाने लगा। नींद असल में तब आती है जब हम उसको बुलाना भूल जाते हैं।

सुबह जब राघव सोकर उठा तब तक दो-तीन बार शालू के ब्लड सैंपल जा चुके थे। निशा अपने घर से नाश्ता लेकर 8 बजे आ चुकी थी।

शालू अब तक एक बार नाश्ता करके आधा छोड़ चुकी थी। नर्स से चार बार पूछ चुकी थी कि कितने बजे डिस्चार्ज करेंगे।

हर बार नर्स एक ही जवाब दे रही थी, "मैडम, जिन डॉक्टर साहब ने आपको एडमिट किया है, जब वह राउंड पर आएँगे तब ही बता पाएँगे।"

निशा जो नाश्ता राघव के लिए लेकर आई थी शालू ने उसको खोलकर एक सेब खाना शुरू कर दिया था।

"अब कैसी तबियत है आंटी?" निशा ने सामने टीवी पर साउथ इंडियन फ़िल्म में चलते हुए गाने को देखते हुए पूछा।

"तबियत वैसे ही है। तबियत को हुआ क्या है! ये तो फालतू में रोक रखा है इन्होंने। कल बताना भूल गई। थोड़ा-सा मेकअप का सामान लेकर आना था। आई लाइनर पड़ा है क्या तेरे पास?"

निशा ने अपने बैग से आई लाइनर निकालकर सामने रख दिया। शालू अब तक नहा चुकी थी।

यह सब बातचीत सुनकर राघव भी अब उठ चुका था। राघव के उठते ही शालू बोली, "आज बड़ा जल्दी उठ गया। अभी तो बस साढ़े आठ ही हुआ है। अभी तो नौ बजने में पूरे आधे घंटे हैं।"

यह सब सुनते हुए निशा को समझ नहीं आया था कि वह हँसे कि नहीं। हँसकर कुछ बोले या न बोले। क्योंकि उसको डर था कि कहीं राघव उसकी

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बात का बुरा न मन जाए।

निशा थर्मस में चाय लेकर आई थी।

"बेटा, ये काम सही किया तूने, यहाँ की चाय तो इतनी ख़राब है जितनी नरक में नहीं होती।"

राघव ने उठकर बैठते हुए टीवी की ओर देखा, "यार अम्मा, सुबह-सुबह कैसे देख लेती हो?"

शालू ने टीवी को म्यूट करते हुए कहा, "तू जज करेगा अब!"

राघव ने उठकर बोतल का बचा हुआ पानी पिया और ब्रश करके नाश्ता करने बैठ गया। नाश्ते में निशा पोहा बनाकर लाई थी। उसको इतनी मेहनत करते देख शालू बोली, "निशा, मैं तुझसे बहुत ख़ुश हूँ। अगर कभी राघव तुझसे लड़ाई करे तो बता देना।"

निशा इस बात से थोड़ा-सा शरमाई और ज़्यादा-सा ख़ुश हुई।

"अम्मा ऐसा है, तुम ज़रा सीरियस हो जाओ। थोड़ा ख़याल रखना शुरू करो।"

"अब्बे यार, ठीक है। वैसे हॉस्पिटल आने से एक काम सही हो गया। ऑफ़िस से एक दिन की छुट्टी हो गई।"

राघव के दिमाग़ में अब संदूक़ घूम रहा था। वह जल्द-से-जल्द उस संदूक़ को खोलकर देखना चाहता था।

नाश्ता करने के बाद उसने बाहर डॉक्टर के आने का टाइम पता किया तो मालूम हुआ कि सब पेपर वर्क करते-कराते 12 बज ही जाते हैं। अभी बस 9 बज रहे थे। वह नहाने का बहाना बनाकर घर चला गया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यार आलोक,

कितने साल बाद तुम्हें यार बोला होगा। राघव अब दस साल का हो गया है। बाक़ी बच्चों के पापा लोगों को देखता है तो उसे कभी-कभी लगता है कि उसकी तो केवल अम्मा है। मुझे शुरू से अम्मा बोलता है। कभी मम्मी बोला ही नहीं। मुझे अम्मा सुनना अच्छा लगता है। इस गर्मी की छुट्टी में इसको लेकर नैनीताल जाऊँगी। तुम कैसे हो, ठीक तो हो?

इब्नेबतूती, मार्च 2005

पीएस- दो लोगों को कई बार सड़क, पहाड़, नदी या समंदर नहीं, बल्कि एक टूटा हुआ पुल जोड़ता है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

संदूक़

राघव ने घर आते ही संदूक़ खोला। ये घर का वह संदूक़ था जिसको खोलने पर सैकड़ों यादें बाहर निकल आती हैं। राघव को जो पहला कपड़ा पहनाया गया था उससे लेकर कॉलेज के कुछ रजिस्टर तक। राघव की माँ की कुछ साड़ियाँ। संदूक़ में पड़ी हुई थी कुछ एक चिट्ठियाँ जो कभी पोस्ट नहीं हुई थीं। कुछ एक पर्चियाँ, कुछ लिफ़ाफ़े। कुछ फ़ोटो जिसमें शालू बीस साल की थी और बाक़ायदा किसी काले कुर्ते और जींस में नुक्कड़ नाटक करती हुई। फ़ोटो में शालू का हाथ पकड़े एक और लड़का था जिसकी शक्ल उसके पापा जैसी नहीं थी।

हमारी परछाई ही हमारा सबसे बड़ा डर है और बीता हुआ कल एक लंबा उदास गाना। अक्सर जो प्रेम हमें मिलता है वो किसी और का होता है। हमारी चिट्ठियाँ भटकी हुई चींटियाँ हैं।

फ़ोटो पुरानी होने की वजह से अपना रंग छोड़ चुकी थी। कुछ फ़ोटो साथ में चिपक गई थीं। एक फ़ोटो थी जिसमें बहुत सारे लोग थे।

उसने एक लिफ़ाफ़ा खोला उसमें हाथ से लिखी हुई चिट्ठियाँ थीं। काग़ज़ को देखकर लग रहा था कि चिट्ठियाँ इंक पेन से लिखी गई थीं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

“मेरी इब्नेबतूती,

आपका नाम हमें नहीं अच्छा लगता। ये नया नाम रखा है हमने आपके लिए। इस नाम का कोई मतलब नहीं है। एक इब्नेबतूता था जिसके पैर में चक्कर लगा था, कभी एक जगह नहीं रुका। एक आप हैं जो एक जगह नहीं रुकती। लंबी चिट्ठी लिखने की हमारी तो आदत है लेकिन आप ही कहती हैं कि लंबी चिट्ठी मत लिखा करो।

आपका कुमार आलोक, जुलाई 1990, हिंदू कॉलेज”

पीएस- आपने कभी ग़ौर किया है- भिखारी किसी को ख़ाली हाथ वापस नहीं करता, वह ख़ुश रहने की दुआ लौटा देता है। हमारी हर ख़ुशी में उनका एक हिस्सा है। आप हमारी ख़ुशी हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसी संदूक़ में एक ऐसा फ़ोटो भी था जिसमें राघव की माँ और उसके पापा एक साथ थे। गोदी में एक साल का राघव भी था। राघव उस फ़ोटो में रो रहा था।

राघव को पहली बार यह पता चला कि उसकी माँ इतने सालों से किसी आलोक को चिट्ठियाँ लिख रही है और उसने एक भी चिट्ठी कभी पोस्ट नहीं की है। ये सब चिट्ठियाँ उसके लिए एक झटके की तरह थीं। उसने सोचा ही नहीं था कि इतने सालों से माँ के ऊपर क्या गुज़र रहा था।

दूसरे ही पल उसको बुरा भी लगा कि उसके पापा के अलावा भी उसकी माँ की ज़िंदगी में कोई था। वह इस बात को सही से ले नहीं पा रहा था। उसके मन में यह भी आया कि क्या अम्मा ने पापा से कभी एक पल को भी प्यार किया भी था या नहीं। उसने सोचा तो उसे बुरा लगा और अपने ऊपर गुस्सा भी आया कि अगर वह न होता तो शायद अम्मा ख़ुश होती। उसके पापा के मरने के बाद शायद वह सब कुछ छोड़कर चली गई होती। उसकी वजह से वह अटकी हुई है और उसको सब झेलना पड़ रहा है। राघव को अपने होने का बुरा लगा जो कि कभी-न-कभी सबको लगता है।

अगले ही पल उसको एक और चिट्ठी दिखी और यह ख़याल आया कि नहीं उसने कुछ सोच-समझकर ही राघव को पैदा किया होगा और जब एक बार शादी हो गई तो आलोक को चिट्ठी लिखने की या फिर उसके बारे में सोचने की ज़रूरत क्या है।

अगर ऐसा कुछ था भी तो बाद में उसके बारे में इतना सोचने की ज़रूरत क्या थी। उस समय राघव के मन में गुस्सा, हताशा, बेचैनी सब कुछ एक साथ घट रहा था।

संदूक़ में अब भी बहुत कुछ बचा था लेकिन ये सब करने-कराने में एक घंटे निकल गए। उधर हॉस्पिटल से फ़ोन आया कि डॉक्टर का राउंड हो गया है। अब माँ को डिस्चार्ज करा सकते हैं।

राघव के दिमाग़ में हज़ार चीज़ें चल रहीं थीं। हम अपने माँ-बाप को जानते तो हैं लेकिन कभी यह नहीं सोच पाते कि कभी ये भी बीस साल के रहे होंगे। कभी उन्हें भी पहला प्यार हुआ होगा। वह फटाफट नहाकर हॉस्पिटल पहुँचा। वहाँ उसको एग्ज़िट फ़ॉर्मैलिटी के लिए कुछ फ़ॉर्म भरने थे। फ़ॉर्म भरते हुए उसने अपने मोबाइल पर इब्नेबतूती और आलोक गूगल किया लेकिन कुछ ख़ास हाथ नहीं लगा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इब्नेबतूती,

दिल्ली आपके साथ अच्छा लगता है। इस शहर में घर बनाने का मन करता है। इसलिए नहीं कि यहाँ कुछ ख़ास है। इसलिए कि यहाँ आप हमें पहली बार मिली थीं। दिल्ली के अलावा कोई भी शहर होता तो भी शायद अच्छा लगता। आपको कभी किसी ने कहा नहीं न कि आप कितनी बड़ी ड्रामेबाज़ हैं!

कुमार आलोक, 1990"

पीएस- पूरी दुनिया में एक भी डॉक्टर ऐसा नहीं जो दवा के साथ दिन में दो बार प्रेमपत्र लिखने के लिए कहे। सब बीमारियाँ केवल दवा से कहाँ ठीक होती हैं!

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कई बार कहानी वहाँ से शुरू नहीं होती जहाँ किरदार आज रहते हैं, बल्कि वहाँ से शुरू होती है जिस शहर को किरदार ने बहुत पहले छोड़ दिया था। हर किसी के पास किसी-न-किसी एक शहर से नफ़रत और प्यार करने की कोई-न-कोई अदना-सी वजह होती ही है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

1990 वाला दिल्ली, बीस बरस का दिल्ली शहर

तारीख़, दिन और साल भूल जाने के बाद भी हमें समय याद रहता है। हम एक चलती-फिरती घड़ी हैं जिसकी बड़ी सुई मन है और छोटी सुई याद।

बीस साल का कुमार आलोक नामक वह लड़का जिसको दुनिया बदलनी थी, बोधगया के अपने घर से क़सम खाकर चला था कि UPSC क्लियर कर लेगा तभी वापस आएगा। जैसे मुंबई में लोग रंगीली दुनिया के सपने लेकर आते हैं कि एक दिन मुंबई के समंदर में उनके नाम की लहर आएगी और सब कुछ बदल जाएगा। ठीक वैसे ही दिल्ली में आदमी घुसता है इस देश को चलाने के सपने के साथ। ऐसी कहावत है कि घर में एक आईएएस हो गया तो सात पुश्तें तर जाती हैं। कुमार आलोक वही एक लड़का था जिसको UPSC क्लियर करके दुनिया बदलनी थी।

बीस साल की शालू अवस्थी नाम की तेज़-तर्रार, मुँहफट बदतमीज़, भिगो के मारने वाली लड़की जिसके कॉन्टैक्ट में जो भी आता था उसकी दुनिया बदल जाती थी। शालू ने अभी तक अपने लिए कोई तय सपना नहीं देखा था। वह जब हिंदू कॉलेज पहुँची तब उसे पता चला कि दुनिया में ऐसे लोग भी होते हैं जिनका एक लक्ष्य होता है। उसके लिए ज़िंदगी एक आसान-सी कोई चीज़ थी।

वह कहते हैं कि शहर की उम्र उतनी ही होती है जिस नज़र से आप उसको देखते हैं। शालू और कुमार आलोक दोनों के लिए दिल्ली की उम्र बीस साल की थी। कुमार आलोक नीली बत्ती की किसी कार को जब देखता तो वह अपने-आप को उसमें बैठा हुआ पाता। वैसे भी सपने दो बार पूरे होते हैं, एक तब हम उसके बारे में सोच लेते हैं और दोबारा सच में।

वह जब से हिंदू कॉलेज पहुँचा था तभी से UPSC भवन के बाहर जाकर घंटों खड़ा रहता कि एक दिन वह यहाँ इंटरव्यू के लिए आएगा। तमाम मैगज़ीन में टॉपर के इंटरव्यू पढ़ते हुए वह सोचता कि वह सवाल के जवाब देता तो क्या देता! अपने मन-ही-मन वह UPSC में हज़ारों इंटरव्यू दे चुका था। अगर आलोक को पता चलता कि किसी ने UPSC का इंटरव्यू दे रखा है तो उनसे मिलकर वह सारे सवालों के जवाब सुनता और अपने उन्हीं

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सवालों के अपने जवाब बनाता। बनाता इसलिए क्योंकि बिहार का आदमी सवाल सॉल्व नहीं करता सवाल बनाता है।

उधर शालू पहली बार लखनऊ के माहौल से निकलकर दिल्ली में आज़ाद महसूस कर रही थी। यहाँ कोई फालतू की रोक-टोक नहीं थी। वह पहली बार जब गाली देना सीख रही थी तो गाली भी लखनवी लहजे में बड़े ही अदब के साथ देती थी। अपने बीए के दूसरे साल तक तो उसने अभी सोचा भी नहीं था कि इस लाइफ़ का करना क्या है। अक्सर जो लोग कुछ सही से समझ नहीं पाते कि उन्हें करना क्या है वह सब कुछ थोड़ा-थोड़ा करके देखते हैं। शालू को यह आराम कॉलेज के थिएटर करने वाले ग्रुप के साथ मिलता था।

काले कुर्ते और जींस में पूरे ग्रुप का निकल जाना और घूम-घूमकर नुक्कड़ नाटक करना। नई जवानी एक ख़ास क़िस्म की बेचैनी लेकर आती है। जब अंदर से रोज़ आवाज़ें आती हैं कि कुछ करना है लेकिन समझ नहीं आता आख़िर करना क्या है।

शालू को भी दूसरे साल के अंत तक इस बेचैनी ने घेर लिया था। बेटी पढ़ाओ, एड्स अवेयरनेस, कॉन्डोम से छुआ-छूत मिटाओ, जनसंख्या नियंत्रण से लेकर कॉलेज एडमिनिस्ट्रेशन के फालतू के नियम हटाओ तक, सैकड़ों मुद्दों पर अब तक शालू ने नाटक किए थे।

यही नहीं शेक्सपियर के क्लासिक ट्रेजेडी से लेकर कॉमेडी तक शालू ने तमाम नाटक किए। उसको नाटक करने में क्यों मज़ा आता था यह उसको भी नहीं पता था। बस अच्छा लगता था और चाहे कितने भी घंटे की रिहर्सल हो वह थकती नहीं थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

1990 वाला V-TREE [2]

ऐसी मान्यता है कि हिंदू कॉलेज का वर्जिन ट्री अनंतकाल से है। यहाँ शादियाँ होती थीं।

हर साल 14 फ़रवरी को वेलेंटाइन डे पर हिंदू कॉलेज के लड़के कॉलेज में वर्जिन ट्री (वी-आकार के पेड़) के आसपास इकट्ठा होते हैं। वे बॉलीवुड की एक हीरोइन को डमडमी माई (देवी) के रूप में पूजते हैं, उसके पोस्टर पेड़ से चिपकाए जाते हैं। कॉलेज के छात्र पेड़ को कॉन्डोम से सजाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जो छात्र इसमें भाग लेते हैं उनके लिए यह पूजा अनुष्ठान सौभाग्य लाने वाला होता है कि अगले छह महीनों के भीतर प्यार में पड़ जाएँगे और पूजा के एक साल के अंदर वह अपनी वर्जिनिटी खो देंगे।)

यह हिंदू कॉलेज की सालों पुरानी परंपरा थी लेकिन शालू को यह बात पसंद नहीं थी कि केवल एक हीरोइन को उसका हिस्सा बनाया जाता है। वह पूजा वाले दिन अपनी दो-तीन सहेलियों के साथ बैठ गई कि केवल डमडमी माई की पूजा ही क्यों हो। क्यों केवल किसी हीरोइन के पोस्टर वहाँ लगें। किसी हॉट मेल एक्टर की पूजा भी हो। जिस एक्टर की पूजा हो उसको लव गुरु बोला जाए। मेल एक्टर को चुनने के लिए हॉस्टल में लड़कियाँ वोट डालें। उसने नाम भी सोच लिया था बल्कि उसने 'मैंने प्यार किया' से बने नए स्टार सलमान ख़ान का नाम 'लव गुरु' के लिए प्रपोज़ कर दिया था।

शालू काले कुर्ते में बैठ गई, साथ में उसने दो पोस्टर बना लिए एक पर लिखा था, "Love has no gender."

दूसरे पोस्टर पर एक बड़ा-सा दिल बना था जिसके बीच में कबूतर के साथ सलमान ख़ान की एक क्यूट-सी फ़ोटो थी, नीचे लिखा था लव गुरु।

उधर हिंदू कॉलेज की परंपरा के हिसाब से एक लड़का बाक़ायदा जनेऊ पहनकर हीरोइन की आरती करने की तैयारी में था और शालू ने सीधा कॉलेज की परंपरा को ही चैलेंज कर दिया। शालू को कुछ सीनियर्स ने समझाने की कोशिश की लेकिन शालू कहाँ मानने वाली थी! बवाल और भीड़ बढ़ने लगी थी।

जब यह सब हो रहा था तब कुमार आलोक कैंटीन से निकलकर अपने हॉस्टल में पढ़ने जा रहा था। चूँकि कुमार आलोक बहुत सोच-समझकर,

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तोल-मोलकर कोई भी बात करता था तो उसकी बात कॉलेज प्रेसिडेंट भी सुनते थे। कुमार आलोक को लोगों ने कॉलेज की डिबेट में सुन रखा था। चूँकि पिछले दो साल से वह डिबेट कॉम्पटीशन जीत रहा था इसलिए वह कुछ भी बोलता था तो उसमें या तो वज़न आ जाता था या फिर लोग अपने-आप वज़न ढूँढ़ लेते थे।

उसने देखा शालू को लोगों ने घेर रखा है और उसको धमकाए जा रहे हैं।

"आपको कॉलेज की परंपरा के साथ खिलवाड़ करने का कोई हक़ नहीं है मिस शालू!" जिस लड़के को पूजा करनी थी उसने शालू को धमकाने वाली टोन में कहा। एक बार उसने बोल दिया तो बाक़ी लोगों ने भी यही कहना शुरू किया। शालू की बात को ऐसे लिया गया जैसे कि वह कॉलेज की महान परंपरा के साथ खिलवाड़ कर रही है।

इस बीच शालू व उसकी गिनती की तीन सहेलियों और बाक़ी के कम-से-कम तीस चालीस लड़कों के बीच में चिल्लम-चिल्ली हो चुकी थी। हर कोई बस यही बोल रहा था, "आप मेरी बात समझ नहीं रहे हैं।"

शालू का गुस्से में पारा एकदम हाई हो चुका था। चूँकि थिएटर करते हुए उसे घंटों बोलने की प्रैक्टिस थी इसलिए बाक़ी लोग थक भी जा रहे थे लेकिन शालू एकदम से फ़्रेश थी जैसे कि सिंकारा की पूरी बोतल गटककर आई हो।

कुमार आलोक को शालू की बात ठीक लगी। यूँ तो वह एक ही कोर्स में थे लेकिन कभी उनकी बात नहीं हुई थी। हालाँकि दोनों एक-दूसरे को जानते थे। उसने शालू के एक दो प्ले देखे थे और शालू ने कुमार आलोक की एक दो डिबेट सुनी थी।

कुमार आलोक उस भीड़ में घुसकर शालू के पास आया और एक अपने ही बैच के लड़के को कंधे पर हाथ रखकर पीछे किया और बोला, "चढ़े ही आ रहे हो। थोड़ा पीछे होकर बात करिए। शालू जी सही ही तो कह रही हैं। प्रॉब्लम क्या है आप लोग का?"

चूँकि कुमार आलोक बहुत अच्छा बोलता इसलिए हर पार्टी के लोग उसको अपनी तरफ़ करना चाहते थे लेकिन कुमार आलोक ने कभी कोई साइड नहीं ली थी। ऐसा लड़का शालू के साथ खड़ा था। इस बात से लोग सकते में आ गए।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इसी बीच किसी ने पीछे से टोंट कसा, "कॉलेज की डिबेट नहीं कि कुछ भी ज्ञान पेलते रहोगे आलोक। ये कॉलेज की परंपरा की बात है।"

"कई बार परंपरा तोड़ने से ही नई परंपरा बनती है।" आलोक ने भीड़ में हर एक आँख को घूरते हुए कहा।

कॉलेज का सबसे अच्छा डिबेटर और सबसे अच्छी एक्ट्रेस अगर एक साथ खड़े हो जाएँ तो उनसे बातचीत में पार पाना तो असंभव ही था इसलिए धक्का-मुक्की शुरू हुई।

कोई पीछे से चिल्लाया, "लातों के भूत बातों से नहीं मानते।"

इस पर कुमार आलोक ने जवाब दिया, "और बातों के भूत लातों से नहीं डरते।"

मामला भड़क चुका था। कुछ लोगों ने कुमार आलोक और शालू को घसीटकर वी-ट्री के पास से दूर कर दिया।

जाते हुए कुमार आलोक यही बोलता रहा, "आप ऐसा नहीं कर सकते।" शालू ने बाप और भाई की कुछ नई गालियाँ ईजाद की थीं। घसीटे जाते समय उसने वह सब कुछ दाग दी।

"इसके भाई की, इसके बाप की... फ़क यू!" शालू के मुँह से ये गालियाँ सुनते हुए कुमार आलोक को हँसी भी आई।

शालू के पास बस अब सलमान ख़ान वाला पोस्टर बचा था। "Love has no gender" वाला पोस्टर और विचार 14 फ़रवरी 1990 की ज़मीन में कहीं खो चुके थे। दुनिया को अभी एक लंबी दूरी तय करनी थी।

बहुत दूर तक घसीटने के बाद शालू और कुमार आलोक को छोड़ दिया गया। दोनों की पहली मुलाक़ात थोड़ी अजीब थी। धक्का-मुक्की में कुमार आलोक की हाफ़ शर्ट के दो बटन टूट गए थे और शर्ट थोड़ी-सी फट गई थी। शालू के बाल बिखर चुके थे और काजल भी आँख से निकलकर गाल पर आ चुका था। उन दोनों को कॉलेज की हद से काफ़ी बाहर खदेड़ा जा चुका था।

टहलते हुए वे पास के जय सिंह के ढाबे पर रुके। वे अभी तक समझ नहीं पा रहे थे कि उनके साथ ये हुआ क्या। टपरी वाले ने तुरंत ही जगह बनाकर इन दोनों के लिए पटरा अलग रख दिया। बैठने के बाद कुमार

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक ने चाय वाले को दो चाय बनाने का इशारा किया। यह न जानते हुए कि शालू चाय पीती भी है या नहीं।

"हम कुमार आलोक, बोधगया से।"

"हमें आपका नाम पता है। बहुत अच्छा बोलते हैं आप। हम शालू अवस्थी, लखनऊ से।"

"बहुत अच्छी एक्टिंग करती हैं आप।"

"कौन-सा प्ले देखे आप?" शालू ने पूछा।

कुमार आलोक को प्ले का नाम याद नहीं आया।

"ऐसे नाम तो याद नहीं है लेकिन शायद कोई शेक्सपियर बाबा का था।"

"शेक्सपियर बाबा... पहली बार सुना हमें शेक्सपियर के साथ बाबा।" शालू ने बाबा शब्द पर ज़्यादा ज़ोर देते हुए कहा।

"हाँ अच्छा लिखने वाले बाबा ही होते हैं। इतना ज्ञान हो जाता है कि लिखना पड़ जाता है।"

"आपने पढ़ा है शेक्सपियर?"

"शेक्सपियर में हमारा इतना इंट्रेस्ट नहीं है।"

"क्या पढ़ते हैं आप?"

"वह सब कुछ जिससे UPSC का पेपर क्लियर हो जाए।"

"UPSC क्यों करना चाहते हैं?"

"देश के लिए कुछ करना चाहते हैं।"

"मान लीजिए वैसे तो ऐसा होगा नहीं कि आप क्लियर न कर पाएँ, लेकिन अगर एक परसेंट आप क्लियर नहीं कर पाए तो नहीं करेंगे देश सेवा?"

स्पेशल चाय आ चुकी थी। एक सिप लेने के बाद कुमार आलोक ने कहा, "हमने कभी सोचा ही नहीं कि हमारा नहीं होगा लेकिन आपका सवाल अच्छा है। हम सोचकर बताएँगे।"

"रूमाल है आपके पास? हम साफ़ करके लौटा देंगे।"

कुमार आलोक ने अपनी बाईं जेब से रूमाल निकालकर देखा। वह थोड़ा-सा गंदा था। उसने रूमाल खोलकर उसको उल्टी तरफ़ से मोड़कर

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू की तरफ़ बढ़ा दिया। शालू ने चाय की टपरी पर लगे हुए एक छोटे से शीशे में अपने-आप को देखा और काजल जो कि गाल पर आ गया था उसको साफ़ करके रूमाल अपने पास रख लिया।

"साफ़ करने की ज़रूरत नहीं है। हम कर लेंगे साफ़।"

"अरे हम कह रहे हैं हम साफ़ करके देंगे।" शालू ने बात साफ़ कर दी कि उससे ज़िद करना बेफ़िज़ूल है।

चाय की टपरी से उठने से पहले कुमार आलोक ने पूछा, "आपको सलमान पसंद है?"

"बहुत नहीं पसंद, बहुत से बहुत ज़्यादा पसंद है। क्यों क्या हुआ?"

"ज़्यादा फ़िल्म तो हम देख नहीं पाते लेकिन 'मैंने प्यार किया' देखे थे हम। भाग्यश्री बहुत क्यूट लगी थी हमें।"

टपरी वाले ने सामने दाना चुग रहे दो कबूतरों की तरफ़ कुछ दाने फेंक दिए। शालू ने चाय के पैसे देने के लिए पर्स में हाथ डाला। कुमार आलोक ने टपरी वाले को इशारा किया कि हिसाब में लिख लेना।

दोनों के बीच वी-ट्री पर जो हुआ उसकी एक बार भी बात नहीं हुई। रूमाल अब शालू के पास था। सलमान ख़ान का पोस्टर टपरी वाले ने रख लिया था। कुमार आलोक ने कॉलेज आने के बाद से पहली बार किसी लड़की से इतनी देर तक बात की थी। उसको अच्छा लग रहा था। यह वाला जो अच्छा होता है जिसमें आदमी ख़ुद ही उस घटना को बार-बार अपने दिमाग़ में रिवाइंड करके बार-बार देखता है। हर बार रिवाइंड करने में बात के अलग ही मतलब खुलते हैं।

जैसे कि दो-तीन बार रिवाइंड करने के बाद कुमार आलोक को याद आया है कि रूमाल शालू के पास ही छूट गया है। उसने अपनी बाईं जेब में ऐसे हाथ डाला जैसे कि रूमाल अब भी वहाँ हो। उसको रूमाल से ख़ाली हुई जगह बहुत अच्छी लगी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इब्नेबतूती,

जैसे रूमाल आपके पास छूट गया था वैसे ही कुछ-न-कुछ छूटता रहे तो एक सिलसिला चल निकलेगा। उस दिन कमरे में आकर हमने अपने सारे रूमाल साफ़ किए। क्या पता कब ज़रूरत लग जाए। कुछ-न-कुछ बचा रहे तो बातों के लिए बहाना नहीं ढूँढ़ना पड़ता वर्ना हर बार बात शुरू करने से पहले कोई बात ढूँढ़नी पड़ती है और बातों में आप तेज़ हैं हम नहीं।

कुमार आलोक, 1990"

पीएस- एक दिन जब शब्द थककर अपना मतलब खो देते हैं, तभी कोई लड़का किसी लड़की के लिए फिर से उस शब्द को आसमान से खोद निकालता है। उसी दिन बारिश होती है। उसी दिन कोई अपनी पहली कविता लिखता है। एक दिन हम आपके लिए कोई नया शब्द खोजेंगे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

रंगबाजी

शालू को डिस्चार्ज करने से पहले वही रात वाले डॉक्टर साहब राउंड पर आए। शालू को बस घर पहुँचने की जल्दी थी। हॉस्पिटल में एक मिनट भी ऐसे बीत रहा था जैसे कि किसी ने बाँध के रख लिया हो।

डॉक्टर साहब ने वही कल वाली बात दोहराई, “अपना ख़याल रखिएगा। ज़्यादा टेंशन मत लीजिएगा। आपकी दवाइयाँ लिख दी हैं। एक हफ़्ते बाद आकर एक बार दिखा लीजिएगा।”

“मैं नहीं आऊँगी।”

डॉक्टर साहब को लगा कि उन्होंने कुछ ग़लत सुन लिया है।

“सॉरी, मैं सुन नहीं पाया।”

“आपने सही सुना है। हम नहीं आएँगे एक हफ़्ते बाद। अच्छा-ख़ासा आदमी हॉस्पिटल आकर बीमार पड़ जाए।”

राघव ने अपनी माँ को घूरकर देखा लेकिन शालू ने कुछ ध्यान नहीं दिया। डॉक्टर को समझ आ चुका था कि शालू से कुछ भी बोलना बेकार है। उसने राघव से कहा, “तुम ध्यान रखना कि ये एक-दो दिन ऑफ़िस न जाएँ।”

यह सुनकर शालू कुछ बोलने ही वाली थी कि राघव ने उसे इशारे से चुप करा दिया। चलने से पहले शालू ने अपने पर्स से 200 रुपये निकालकर नर्स को दिए। उसने एक बार मना किया लेकिन फिर शालू के ज़बरदस्ती करने पर रख लिए।

ख़ैर, गाड़ी में बैठते ही राघव ने शालू पर चिल्लाना शुरू किया, “अम्मा यार, डॉक्टर से ऐसे क्यों बात कर रही थी? इतनी क्या स्टाइल मारती रहती हो? इनकी अलग ही रंगबाजी चल रही है।”

“अरे, वह बात ही ऐसी कर रहा था कि जैसे बस मरने वाले हैं और हाँ, हमसे ऐसे बात मत करो। अभी डॉक्टर ने टेंशन लेने से मना किया है।”

यह सब सुनकर पीछे वाली सीट पर बैठी निशा हँस रही थी। घर पहुँचकर राघव ने सब दवाइयाँ एक डब्बे में रखकर लिख दिया। कौन-सी सुबह खानी है और कौन-सी रात में। उसने अपने मोबाइल में शालू की दवा के टाइम का रिमाइंडर भी लगा लिया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इस बीच घर में आते ही शालू ने किचेन में जाकर चाय बनानी शुरू कर दी। राघव ने रोका भी तो बोली, "अरे यार, घर की चाय की बात ही अलग होती है। चाय नहीं पिएँगे तो टेंशन हो जाएगी और टेंशन हो जाएगी तो तबियत ख़राब।"

निशा किचेन में आकर शालू के पास खड़ी हो गई। वह कुछ और कर भी नहीं सकती थी, क्योंकि शालू अपने पूरे फ़ॉर्म में थी।

चाय बहुत अच्छी बनी थी। ऐसा शालू ने टेबल के ऊपर चाय को रखते हुए बोल दिया और उस दिन के अख़बार को खोलकर बैठ गई। उसने देखा राघव और निशा बैठे हैं लेकिन राघव ने अब तक चाय का एक भी सिप नहीं लिया है।

"पूरे अख़बार में एक अच्छी ख़बर नहीं है। वैसे अच्छी चाय पीने से गुस्सा कम हो जाता है और मूड बढ़िया।" शालू ने राघव की तरफ़ देखते हुए कहा।

शालू को यह बात पता थी कि उसके हॉस्पिटल जाने से राघव कुछ ज़्यादा ही परेशान हो रहा है। शालू यह बात समझ भी रही थी लेकिन वह बस नॉर्मल होने का नाटक कर रही थी। वह नहीं चाहती थी कि उसके चक्कर में राघव परेशान हो।

चाय पीते हुए शालू ने दुबारा अख़बार को पलटना शुरू किया। एक ही अख़बार में एक ही पन्ना पढ़ते हुए अलग-अलग लोगों की नज़र अलग-अलग ख़बरों पर जाती है। जैसे कि शालू की नज़र एक छोटी-सी ख़बर पर गई।

"भारत के मोस्ट वांटेड माओवादी नेता रूपेश और उनकी पत्नी को कोयंबटूर में गिरफ़्तार किया गया।"

वहीं राघव ने जब अख़बार लिया तो उसकी नज़र गई स्पोर्ट्स वाले पन्ने पर। फिर धीरे-धीरे वापस आते हुए पहले पन्ने पर इस छोटी-सी ख़बर तक पहुँचने से पहले उसने अख़बार बंद करके रख दिया था।

शालू ने टीवी ऑन किया और न्यूज़ चैनल में कोई ख़ास ख़बर ढूँढ़ने लगी लेकिन सभी चैनल बदलने के बाद भी उसको अपने मन वाली ख़बर मिली नहीं। निशा को लगा कि उसको चलना चाहिए। जब वह उठकर जाने लगी तो शालू ने कहा, "जा इसको घर छोड़कर आ।"

"आंटी, मैं अपने आप चले जाऊँगी, ऑटो मिल जाएगा।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"अरे, ये छोड़कर आएगा।"

राघव अभी चाय पी ही रहा था।

"बैठा क्या है, निशा को छोड़कर आ।" शालू ने अपनी आवाज़ में वज़न लाते हुए कहा।

राघव ने अख़बार टेबल पर रखते हुए कहा, "तुम्हें अकेला छोड़कर छोड़ने नहीं जाऊँगा।"

ख़ैर, लड़ाई में शालू की जीत हुई और राघव निशा को छोड़ने के लिए निकल गया।

निशा इंद्रा नगर में रहती थी। यह जगह राघव के घर से क़रीब आधे घंटे की दूरी पर थी। यह पहली बार था कि दोनों संदूक़ देखने के बाद अकेले मिल रहे थे। राघव के चेहरे पर शालू की ख़राब तबियत की चिंता साफ़ देखी जा सकती थी। वह बीच में एक कैफ़े में रुके। अभी तक दोनों में कोई बात नहीं हुई थी। कैफ़े की टेबल पर एक पज़ल बनी हुई थी और साथ ही पेंसिल रखी थी। राघव निशा से अपना ध्यान हटाकर पज़ल बनाने में बिज़ी हो गया।

"तू टेंशन मत ले। ऐसा कुछ हुआ नहीं है आंटी को।" निशा ने बैठने के बाद राघव का हाथ पकड़कर कहा।

"अब्बे यार, मैं वो टेंशन नहीं ले रहा। अम्मा का चक्कर था यार शादी के पहले।" राघव ने कहा।

"हाँ तो उसमें क्या है, इतनी बड़ी क्या बात हो गई? सबका होता है।" निशा ने अपनी टोन में हल्की-सी सख़्ती लाते हुए कहा।

"यार, वो उसको बाद में भी चिट्ठी लिखती रही हैं।"

"हाँ, देखा मैंने। तो उसमें क्या है!"

"यार निशा, तुझे तो किसी भी चीज़ में कोई बात ही नहीं लग रही। पापा के साथ ये ग़लत नहीं है?"

"तू पागल है क्या, तेरे पापा ज़िंदा होते तो ग़लत होता यार। जब वह हैं ही नहीं तो क्या ग़लत! मैं तुझसे दो दिन बात नहीं करती तो लगता है कि कब मिलूँगी, कब बात होगी। वो तो इतने साल से अकेली हैं यार। किसके लिए… तेरे लिए और तुझे ये पड़ी है कि अम्मा किसी को चिट्ठी लिखती हैं!"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

निशा की इस बात का राघव के पास कोई ठोस जवाब नहीं था। निशा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "तुझे नहीं लगता कि आंटी के पास कोई होना चाहिए जिससे वो सब बात कर सकें! पता नहीं तूने कभी ध्यान दिया है या नहीं, वो जो हर बात पर इतना फट-फट बोलती हैं वो उनका डिफ़ेंस मैकेनिज़्म है। वो जो इतनी साउथ इंडियन फ़िल्में देखती हैं ताकि उनको कुछ याद न आए।"

निशा की बात को सोचते हुए राघव ने वहीं पास में टपरी से लाकर सिगरेट जला ली थी।

"तू ज़्यादा सोच रहा है।"

"नहीं सोच रहा यार ज़्यादा। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। मुझे ये भी लग रहा है कि मेरे जाने के चक्कर में ज़्यादा सोच लिया उन्होंने इसलिए ही उनकी तबियत ख़राब हुई है।" राघव बहुत तेज़ी से अपनी सिगरेट ख़त्म कर रहा था। जैसे दिमाग़ से नहीं सिगरेट से सोच रहा हो।

"मुझे लगता है कि हमें आंटी का मैट्रीमोनी ऐड दे देना चाहिए।"

"हैं, तू क्या बोल रही है पता भी है!"

"हाँ।"

"तू भी मानता है कि अम्मा के पास कोई होना चाहिए। एक ब्वॉयफ़्रेंड या फ़्रेंड जैसा। तूने ख़ुद ही बताया है कि मोहल्ले की आंटियों से अम्मा की पटती नहीं है। लखनऊ जैसे शहर में कोई दोस्त होना अपने-आप में मुश्किल है, लोग समझेंगे नहीं। तो इससे बढ़िया है कि शादी का ऐड देकर अम्मा की शादी करा देनी चाहिए।" निशा ने बोलने के बाद एक लंबी साँस ली। भारी बात को हल्का करने के लिए लंबी साँस की ज़रूरत पड़ती है।

"यार मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। अम्मा का शादी करना कितना ऑड लगेगा, नहीं?" राघव ने दो कॉफ़ी लाने का इशारा करते हुए कहा।

"इसमें ऑड लगने वाली क्या बात है, लोग दूसरी शादी नहीं करते?"

राघव ने पज़ल पूरी कर ली थी और निशा ने अपनी कॉफ़ी ख़त्म।

"करते हैं लेकिन..."

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं..." निशा अपनी बात पूरी करते-करते हुए रुक गई।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"यार, मैं अम्मा को शेयर नहीं कर सकता।"

"यार, तू ऐसी बात तो कर मत। अपने तो जा रहा है बाहर। पता नहीं आएगा नहीं आएगा। कितने साल बाद आएगा। ये फ़ालतू में इमोशनल होने का ड्रामा मत कर अब।"

निशा अपने दुख को कंट्रोल नहीं कर पा रही थी। फिर भी अपनी बात सँभालते हुए बोली, "मेरा मतलब है कि तू तो अब कुछ साल यहाँ रहेगा नहीं। आंटी एकदम अकेले हो जाएँगी।"

निशा को अब समझ नहीं आ रहा था कि इस बात के आगे वह बोले क्या। वह अपने कॉफ़ी पर ही फ़ोकस कर रही थी। इतने में राघव ही बोला, "अब्बे कुछ बोल, क्या करूँ?"

"अच्छा ये भी तो हो सकता है कि उनका कोई दोस्त हो जिससे उनकी बातें होती हों। वही चिट्ठी वाला या फिर कोई और।"

"हो सकता है लेकिन कभी ऐसा लगा नहीं।"

"तू कैसे बोल सकता है?"

"मैंने उनका मोबाइल चेक किया है।"

"यार, तू बहुत बदतमीज़ है। ऐसे मोबाइल क्यों चेक किया तूने?" निशा को अब राघव के बचकानेपन पर ग़ुस्सा आ रहा था।

राघव ने बात सँभालते हुए कहा, "अरे, मतलब है कि उन्होंने कुछ इंस्टॉल करने दिया था तो मैंने मैसेज देखे थे, उनमें कुछ नहीं था।"

"फिर भी चेक नहीं करना चाहिए न!"

"अरे, तू तो पीछे ही पड़ गई। मेरी माँ है। चेक कर सकता हूँ न!"

"तू देता है अपना मोबाइल आंटी को?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं देता?"

"यार, निशा छोड़ न, तू नहीं समझेगी।"

"समझ तू नहीं रहा है। ख़ुद पर आई तो मैं समझूँगी नहीं। मालूम है तेरा प्रॉब्लम क्या है? तू ये मानता है कि तेरे बिना आंटी की कोई लाइफ़ कैसे हो सकती है। तुम्हारे बचपने से लेकर तुम्हें बड़ा करो। हर चीज़ का ख़याल

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

रखो। सब कुछ तुम्हारे हिसाब से हो और हाँ अम्मा की अपनी लाइफ़ तो कुछ है नहीं!"

"निशा, तू बात ज़्यादा खींच रही है।"

"तू देख और सोच, आंटी की अपनी लाइफ़ है कि नहीं। मुझे लगता है तुझे आंटी से बात करनी चाहिए।"

"यार, वह अम्मा के लेटर पढ़कर अच्छा नहीं लगा।" राघव ने एक और सिगरेट सुलगा ली।

"अच्छा क्यों लगेगा, तुम्हारे मेल ईगो को ठेस जो लग गई। यार इतनी अच्छी मम्मी है तेरी। तू एक बार उनके हिसाब से सोच कि उनको क्या मिला!"

"करूँगा बात।"

रास्ते भर राघव और निशा की कोई बात नहीं हुई। राघव को अब भी समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे रियेक्ट करे। वह जब निशा को उसके घर के बाहर ड्रॉप कर ही रहा था तो उसे निशा के पापा मिल गए। निशा के पापा का अपना बिज़नेस था। निशा की बहन भी वहीं बाहर ही खड़ी थी। बहन ने उनको देखते ही पापा से कुछ कहा। राघव को समझ आ गया था कि बिना एक भी सेकेंड गँवाए यहाँ से निकलना ही ठीक रहेगा।

"नमस्ते अंकल!"

"बधाई हो, सुना है बहुत बड़ी जगह एडमिशन हो गया है तुम्हारा।"

"हाँ अंकल!"

"बहुत बढ़िया, अब कैसी है माता जी की तबियत?"

"ठीक है अंकल!"

"निशा को भी कुछ समझाओ कि बैंक पीओ वग़ैरह निकाल ले, फिर इनकी भी शादी की तैयारी करें। आओ, चाय पीकर जाओ।"

निशा के पापा की बात से राघव को झटका लगा कि वह सोच रहा है कि निशा उसके साथ है। अगर उसके बाहर रहते उसके पापा ने उसकी शादी कहीं और कर ही दी तो वह क्या करेगा? निशा के पापा ने साथ में यह भी जता दिया कि उनकी लड़की से उचित दूरी बनाकर रखी जाए।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"नहीं अंकल, चाय पीने में देरी हो जाएगी।" इससे पहले राघव अपनी बात पूरी करता निशा के पापा ने बीच में ही बोल दिया, "कोई बात नहीं बेटा, अगली बार ज़रूर पीकर जाना।"

घर पहुँचते ही निशा का पूरा रूप ही बदल गया था। राघव के जाने के बाद पापा ने उसे अपने पास बुलाया और बोले, "लड़के से दोस्ती होना बुरा नहीं है लेकिन कोई छोड़ने आए ये सब हमें पसंद नहीं, आगे से ध्यान रखना।"

निशा चाहती तो जवाब दे सकती थी लेकिन उसका कुछ भी बोलने का मन नहीं था। वह अंदर जा ही रही थी कि उसके पापा ने बुलाकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "राघव हम लोगों के कास्ट का भी नहीं है। देखो हम लोग कोई पुराने ज़माने के नहीं हैं, दोस्ती तक ठीक है। हम समझते हैं, लेकिन बस यहीं तक समझते हैं। बाक़ी तुम्हें पूरी फ़्रीडम है ही।"

आज़ादी जब हद बताकर दी जाती है तो आज़ादी नहीं बचती।

निशा को उनकी यह बात ठीक नहीं लगी लेकिन उस समय वह कुछ भी बोलने के मूड में नहीं थी। कमरे में जाने पर उसको राघव का मैसेज मिला, "सब ठीक है न?"

"हाँ सब बढ़िया।" निशा ने जवाब दिया और बाथरूम में नहाने चली गई। वही इकलौती जगह थी जहाँ रोने की आवाज़ पानी में दब जाती थी और रोने के निशान भी बह जाते थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

2015 वाला ब्वॉयफ्रेंड नहीं ख़ास दोस्त

घर पहुँचकर राघव को समझ नहीं आ रहा था कि उसे बात करनी भी चाहिए या नहीं। कहीं माँ बुरा तो नहीं मान जाएगी। क्या यही उसकी समस्या है? वह अपने कमरे में जाकर कुछ किताबें पलटता रहा। मन नहीं लगा तो कुछ देर लैपटॉप खोलकर ईमेल चेक किया। वहाँ भी मन नहीं लगा तो वीडियो गेम खेलने लगा। उसने सोच लिया था कि अम्मा से बात करके ही रहना है। आज ही वह हॉस्पिटल से आई है तो उस पर ग़ुस्सा होना ठीक नहीं।

निशा की बात से उसको यह लग ही चुका था कि वह केवल अपने हिसाब से ही सोच रहा है।

शालू अपने कमरे में लेटी हुई थी। राघव ने जब संदूक़ खोला था तो उसने कुछ चिट्ठियाँ निकालकर अपने कमरे में रख ली थी। उसने उन चिट्ठियों को पढ़ने की कोशिश भी की लेकिन मन नहीं लगा। दुनिया की हर संभव चीज़ में मन न लगने के बाद वह शालू के कमरे में पहुँचा।

"तबीयत ठीक है?"

"इतना क्या लोड ले रहा है, एकदम मस्त है।" शालू ने बेफ़िक्र अंदाज़ में कहा।

"अम्मा!"

"हाँ बोल, केवल अम्मा बोलकर तो कभी नहीं रुकता तू!"

"कुछ नहीं।"

"क्या हुआ बोल अब। ऐसा क्या सस्पेंस बनाया हुआ है?" शालू ने पास में रखी बोतल से पानी पिया और टीवी ऑन कर दिया।

"पहले टीवी बंद करो।"

शालू को समझ आ चुका था कि कुछ बात है जो राघव बोलना चाह रहा है, लेकिन बोल नहीं पा रहा।

"ग़ुस्सा नहीं होऊँगी, बोल दे।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इससे पहले राघव कुछ बोलता, शालू ने दुबारा कहा, "बहुत ज़्यादा गुस्सा करने वाली बात हुई तो गुस्सा आने की गारंटी मेरी नहीं, अब बोल।"

"अम्मा हम सोच रहे थे..." यहे कहने के बाद राघव उधर बेड पर आ गया तो शालू का सिर सहलाने लगा।

सिर सहलवाना शालू की कमज़ोरी थी। जब भी राघव को कुछ मनवाना होता तो वह शालू के सिर को सहलाता।

इससे पहले राघव को कुछ बोलता, शालू ने कहा, "क्या चाहिए?"

"अम्मा चाहिए कुछ नहीं। हम सोच रहे थे कि तुम अकेले रहती हो। इतनी बातें होती होंगी मन में। बोल नहीं पाती होगी। तो हम ये कहना चाह रहे थे कि तुम किसी से दोस्ती क्यों नहीं कर लेती? मेरा मतलब है कि..."

"अब इस उम्र में ब्वॉयफ़्रेंड बनाने की बात कर रहा है तू!" शालू ने राघव की मुश्किल आसान करते हुए कहा।

"हाँ, यही कह रहे हैं।"

शालू ने राघव के सिर पर हाथ रखा और चेक किया बुख़ार तो नहीं है और कहा, "आइडिया तो बहुत अच्छा है।"

राघव को इस जवाब की उम्मीद नहीं थी। वह सोच रहा था कि अम्मा गुस्सा हो जाएँगी।

"तो हम कह रहे थे कि कोई ऐसा होना चाहिए न, जो अच्छा दोस्त हो तुम्हारा। मेरा मतलब है एक ख़ास दोस्त होता है न। ज़रूरी नहीं कि उसे ब्वॉयफ़्रेंड ही बोला जाए।"

"दोस्त-वोस्त क्या होता है, ब्वॉयफ़्रेंड बोल ब्वॉयफ़्रेंड।" शालू ने अपने सिर का पिछला हिस्सा आगे करते हुए बताया कि इधर भी सहलाओ। शायद हॉस्पिटल की महक शालू के नाक में चढ़ गई थी। उसने इशारे से राघव को सिर में तेल लगाने के लिए कहा।

शालू ने जब अपने बाल खोले तो पहली बार राघव की नज़र शालू के सफ़ेद बालों पर गई।

"डाई लगाया करो अम्मा, ऐसे कैसे मिलेगा तुम्हें तुम्हारा ब्वॉयफ़्रेंड?"

"सफ़ेद बाल बुढ़ापे की नहीं समझदारी की निशानी हैं।" शालू को तेल लगवाने में अच्छा लग रहा था इसलिए उसने आँखें बंद की हुई थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"हाँ तो अम्मा, हम ये कह रहे थे कि तुम्हारे ऑफ़िस में कोई ऐसा नहीं है?"

"अरे कितनी देर तक एक ही मज़ाक़ करेगा। तू पागल है क्या! अब दो-चार साल में तेरी शादी की उम्र हो जाएगी। और मैं ख़ुश हूँ। मुझे कोई और नहीं चाहिए। न ब्वॉयफ़्रेंड न ख़ास दोस्त।"

जैसे ही शालू ने यह बोला राघव की समस्या वहीं आकर खड़ी हो गई जहाँ से वह शुरू हुई थी। इसके बाद जब भी राघव ब्वॉयफ़्रेंड बनाने वाली बात को आगे बढ़ाने की कोई कोशिश करता तो शालू बहुत ही धीरे से टॉपिक को कहीं और घुमा देती। ख़ास दोस्त वाली बात पर शालू कुछ देर टिकी। ऐसा कई बार होता है कि आज की कोई बात कल की कोई बात याद दिलाती हो। ख़ास दोस्त शायद वही एक बात थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

1990 वाला ब्वॉयफ़्रेंड नहीं ख़ास दोस्त

हम सभी वही एक लड़की ढूँढ़ते हैं जिससे मिलते ही हमें अपने बचपन में सुनी हुई सभी कहानियाँ सच हो जाने का यक़ीन हो जाए।

कुमार आलोक और शालू का मिलना अब अक्सर होने लगा था। यूँ तो उनकी मुलाक़ात इतनी बार हो चुकी थी लेकिन कुमार आलोक का रूमाल अब भी शालू के पास था। शायद वह रूमाल लौटाना नहीं चाहती थी। रूमाल हर अगली बार मिलने का नया सिरा होता। कुछ-न-कुछ सामान छूटा हुआ रहे, कोई-न-कोई बात अधूरी रहे तो वह फैलकर एक नई मुलाक़ात ले आती है।

कुमार आलोक अक्सर ही कॉलेज के बाद लाइब्रेरी में बैठकर कुछ-न-कुछ पलट रहा होता। शालू भी कोई-न-कोई प्ले पढ़ने के बहाने लाइब्रेरी जाया करती। लाइब्रेरी उस समय का मॉल हुआ करता। उस दौर में प्यार को बोलना इतना ज़रूरी नहीं था जितना कि महसूस करना, ख़ामोश रहना।

वे कॉलेज से निकलकर दो-दो घंटे लाइब्रेरी में बैठते। वहाँ एक भी शब्द बात नहीं होती लेकिन यह पता होना कि कोई साथ है, यही उस समय के हिसाब से काफ़ी बातचीत होती।

कुमार आलोक और शालू ने बातचीत के लिए पर्चियाँ बाँट ली थीं। रजिस्टर से पन्ने फाड़ने तक कि आवाज़ न हो इसलिए वे अपने हॉस्टल से ही पर्चियाँ फाड़कर लाया करते।

ऐसे ही एक दिन जब उनको बैठे-बैठे एक घंटा हुआ तब कुमार आलोक ने पर्ची ली, कुछ लिखा और उसको काट दिया।

शालू ने उसको पर्ची पर लिखकर काटते हुए देखा और पर्ची पर लिखकर उसने पूछा, “क्या काट दिया?”

“कुछ नहीं।”

“कुछ नहीं लिखकर कैसे काट सकते हैं?” शालू ने अपने चेहरे पर प्यार भरा ग़ुस्सा जताते हुए पूछा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुमार आलोक ने पर्ची पर लिखा कुछ नहीं और उसको काटकर दिखा दिया। शालू से चुप बैठा जाता नहीं था। उसके मुँह से निकला, “बताओ क्या लिखा था?”

उसने ध्यान नहीं दिया लेकिन उसकी आवाज़ कुछ ज़्यादा ही तेज़ थी। दोनों को लाइब्रेरी से बाहर कर दिया गया।

हालाँकि शालू ने लड़ने की कोशिश की लेकिन ग़लती उनकी थी ही। इस मामले में कुमार आलोक का स्टैंड हमेशा साफ़ रहता था। ग़लती है तो ग़लती है, मानकर आगे बढ़ो।

बाहर निकलते ही वह कुमार आलोक पर ग़ुस्से से चढ़ गई।

“बाक़ी लोग भी तो इतना बोलते रहते हैं, उनको तो लाइब्रेरियन कभी कुछ नहीं बोलता।”

“बाक़ी लोगों का हमें नहीं पता। हमने ग़लती की थी। उसने ठीक किया।”

“अरे यार, एक ही बार तो बोले थे!”

“एक बार हो चाहे दस बार हो, ग़लती तो ग़लती है न शालू जी!”

कुमार आलोक को जब थोड़ा ग़ुस्सा आता या फिर बहुत प्यार या कोई बात मनवानी होती तो वह केवल शालू नहीं बोलता। शालू जी, शालू अवस्थी जी या फिर केवल अवस्थी जी बोलता।

“अब बताओ, क्या लिखकर काटे थे?”

“अब भूल गए।”

“कुमार आलोक जी, आप हमें चू... बनाएँगे अब कि भूल गए? आपकी मेमोरी तो इतनी शार्प है कि आपको याद रहता है कि गाँधी जी सेकेंड राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस के लिए 29 अगस्त 1931 को गए थे। इतना ही नहीं आपको तो ये भी याद है कि वो एस एस राजपूताना नाम के जहाज़ से गए थे। आपको तो ये भी याद होगा कि रास्ते में उन्होंने क्या खाया, कितनी बार वाशरूम गए। आप हमें ये बोल रहे हैं कि पर्ची पर आपने क्या लिखा था आप भूल गए!”

शालू ने सारी बात एक साँस में कह डाली।

“यार, तुम बात को ज़्यादा खींच रही हो।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"नहीं खींचेंगे, आप बता दीजिए। क्या लिखा था?"

कुमार आलोक के पास सच न बता पाने के अलावा कोई ऑप्शन नहीं था।

"अरे छोड़ो, तुम्हें बुरा लग जाए शायद।"

"नहीं बताओगे तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा।"

सिंह साहब का ढाबा आ चुका था।

"हम सोच रहे थे कि कई दिन से कोई फ़िल्म नहीं देखी।"

"ये पर्ची में लिखे थे?"

शालू को अब तक यह समझ में आ चुका था कि बेचारे कुमार आलोक साथ फ़िल्म देखने जाना चाहते हैं लेकिन पूछ नहीं पा रहे।

"नहीं, हम सोच रहे थे कि हम आज तक कभी कॉर्नर सीट पर फ़िल्म नहीं देखे हैं। अगर आपको बुरा नहीं लगे तो... नहीं अगर आपको बुरा लगे तो कोई बात नहीं।"

यह सुनकर शालू बहुत ज़ोर से हँसने लगी। अब तक चाय आ चुकी थी।

"कुमार आलोक जी आपको पता है न!"

"क्या?"

"यही कि आप एकदम बुद्धू हैं।"

"हम तो कह ही रहे थे फ़िल्म नहीं देखनी चाहिए।" आलोक ने हड़बड़ी में चाय की दो घूँट एक साथ पी ली और उसका मुँह और जीभ जल गए।

"फ़िल्म चलने की बात करते हुए तुम तो ऐसे घबराने लगे जैसे कि हिंदी फ़िल्मों में शादी के लिए चाय लाते हुए हीरोइन घबराती है।"

"वह बात नहीं है।"

"कब चलना है?"

शालू ने जब यह बात पूछी तो कुमार आलोक के मुँह के जले हुए हिस्से को कुछ ठंडक पहुँची।

"जब आप बोलिए अवस्थी जी।"

"जब आप कहिए, कुमार आलोक जी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

ये कहते हुए शालू ने अपना हाथ आलोक के हाथ पर रख दिया। आलोक की उँगलियों को ऐसा लगा जैसे उसने कोई बिजली का खंभा छू लिया हो। झटके से उसने हाथ पीछे हटा लिया और अपने आसपास देखा कि कोई देख तो नहीं रहा। आसपास कोई देख नहीं रहा था लेकिन कुमार आलोक को यही लग रहा था कि पूरा ढाबा उन दोनों को ही देख रहा है।

यह वह दौर था जब हाथ को धीरे से बढ़ाना, दूसरे हाथ का उस धीरे से बढ़ते हुए हाथ को पीछे खींच लेना, बहुत ही आम बात थी। हाथ में कँपकँपी होना, दुनिया का हिल जाना। बिजली का गिर जाना, बेमौसम बरसात हो जाना। मई की गर्मी में दिसंबर की ठंडक हो जाना बहुत ही आम था।

एक हाथ का दूसरे हाथ को छूना बहुत बड़ी बात हुआ करती थी। इतनी बड़ी कि एक हाथ की उँगलियों से दूसरे हाथ की उँगलियों की दोस्ती में कभी छह महीने, साल या पूरा कॉलेज निकल जाता था। एक मासूम समय की छोटी-सी मगर मासूम दूरियाँ थीं।

कुमार आलोक के हाथ वापस खींच लेने पर शालू ने कुमार आलोक की आँखों में देखा। शालू को आँखों में देखता देख कुमार आलोक ने शालू की आँखों के अलावा पूरी दुनिया में नज़र घूमाकर देखा। हर जगह शालू की नज़र ने कुमार आलोक की नज़रों का पीछा किया। कुमार आलोक दुनिया के किसी भी टॉपिक पर घंटों बोल सकता था लेकिन उस समय कोई भी ऐसी बात ही याद नहीं आ रही थी कि वह आँखों को रोककर कुछ बोल सके। उसकी यह परेशानी भाँपते हुए शालू ने कहा, “कुमार आलोक जी!”

“जी नहीं पता।” कुमार आलोक यह कहते हुए बहुत ज़्यादा ही फ़ॉर्मल हो चुका था।

“वह तो हमें पता है कि आपको नहीं पता।”

शालू अब भी शरारत के मूड में थी। “कुमार आलोक जी, आप दोस्त नहीं हैं, ख़ास दोस्त हैं।”

कुमार आलोक ने जितनी किताबें पढ़ी थीं उनमें से किसी भी किताब में ख़ास दोस्त नाम का चैप्टर नहीं था कि वह जान पाए कि आख़िर ख़ास दोस्त होना क्या होता है। ज़िंदगी की किताब में ऐसा पहली बार हो रहा था जहाँ कुमार आलोक को चैप्टर लिखना भी ख़ुद था, समझना और समझाना भी ख़ुद।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

फ़िल्म देखते हुए पहली बार उनका हाथ ग़लती से छुआ था। ये ग़लती कुछ देर तक होती रही थी। समय ऐसी ही ग़लतियों से होता हुआ आगे बढ़ता है, ऐसे मौक़ों पर सामने चलती हुई फ़िल्म फ़्रीज़ हो जाती है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इब्नेबतूती,

हम आपके साथ हवाई जहाज़ में बैठकर कहीं जाना चाहते हैं। खिड़की से देखना चाहते हैं कि कैसा दिखता है। शायद विदेश की कोई जगह। हमने सुना और पढ़ा है कि लंदन बहुत सुंदर है। आप बुरा मत मानिएगा, जहाँ भी जाएँगे होटल में अलग-अलग कमरा बुक करेंगे। कोई ऐसी जगह जहाँ हमें कोई पहचानता न हो। नौकरी लगते ही हवाई जहाज़ के टिकट के लिए पैसा बचाएँगे, आप हमारे साथ चलेंगी न?

आलोक, 1990"

पीएस- जीना, एक नई ज़िंदगी की तलाश भर ही तो है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मिशन विदेश

इस बीच एक हफ़्ता निकल गया। हॉस्पिटल से आने के बाद से अभी तक शालू की तबीयत ठीक-ठाक चल रही थी। बीच में एक बार और उसको हॉस्पिटल ले जाना पड़ा था। डॉक्टर ने राघव को अलग से बुलाकर यही बताया कि वह अब भी ज़्यादा सोच रही है।

एक दिन सुबह शालू बिस्तर से उठ ही नहीं पाई। जब राघव सोकर उठा तब उसको पता चला कि शालू बेड से उठ ही नहीं पा रही। उसको भयंकर बुख़ार था। ख़ैर, उसने चाय बनाई और डॉक्टर को फ़ोन किया। डॉक्टर ने बुख़ार की एक-दो दवा लिखी। डॉक्टर ने साथ में यह भी जोड़ा कि वह अब भी ज़्यादा सोच रही हैं। डॉक्टर ने साथ में यह भी जोड़ा था कि कोशिश करके इनको ठंडे पानी से नहला दो।

दवा के असर के बाद शालू को थोड़ा-सा ठीक लगा लेकिन अब भी ऐसी हालत नहीं थी कि वह अपने-आप नहा पाए।

राघव किसी तरह से शालू को बाथरूम तक लेकर गया। उसको बहुत अजीब लग रहा था। उसने निशा को दो-तीन बार कॉल किया लेकिन वह शायद अपनी कोचिंग क्लास में थी इसलिए उसने फ़ोन नहीं उठाया।

शालू बहुत थकी हुई थी। राघव ने स्पंज लेकर शालू के पैर और हाथ को पानी से जैसे ही नहलाना शुरू किया, उसके आँसू निकल गए।

"अम्मा यार, मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जा रहा।"

शालू के शरीर में बहुत कम ताक़त थी। बावजूद उसके उसने अपने-आप को समेटा और बोलने की कोशिश की लेकिन वह बहुत थका हुआ महसूस कर रही थी। उसने कोई जवाब नहीं दिया। राघव से जितना अच्छे से बन पड़ा उसने शालू को नहलाया और कमरे में लाकर एकदम ढीले-ढाले कपड़े पहना दिए।

नहाने के बाद शालू को कुछ ठीक लग रहा था। उसने खिचड़ी चढ़ा दी।

कूकर की सीटी का इंतज़ार करते हुए माँ-बेटे एक-दूसरे का सिर सहला रहे थे। खिचड़ी खाने के बाद जब शालू को थोड़ी जान में जान आई तो वह बोली, "आगे से कभी बोला न कि मैं नहीं जाऊँगा तो एक दूँगी खींच के। बुख़ार ही तो है सही हो जाएगा। चल अब जा, मुझे सोना है।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वहाँ सब कुछ सही से रखकर राघव अपने कमरे में आ गया। कमरे में आते ही निशा का फ़ोन आया। उसका किसी से बात करने का मन नहीं था। उसने फ़ोन नहीं उठाया। राघव को इस बात ने अंदर तक हिला दिया कि शालू आख़िर अकेले मैनेज कैसे करेगी।

शाम को जब शालू की तबियत थोड़ी ठीक हुई तो वह चारबाग रेलवे स्टेशन गया। वह जब बहुत परेशान होता तो चारबाग रेलवे स्टेशन चला जाया करता। वह स्टेशन पहुँचकर बेंच पर चाय लेकर बैठ जाता और ट्रेन को आते-जाते देखने लगता। आते-जाते हुए लोगों की कहानी अपने मन में बनाने लगता। कोई किसी-न-किसी को स्टेशन पर लेने आया होता तो उसको देखकर बड़ा अच्छा भी लगता और बहुत ख़ाली भी कि वह कभी किसी को स्टेशन लेने नहीं आता। क्योंकि उनके यहाँ कोई ऐसा आता-जाता ही नहीं था। उसके नाना-नानी लखनऊ में रहते थे तो कभी-कभार उनके यहाँ ऐसे ही जाना हो जाता था।

वह बैठे-बैठे तीन कप चाय पी चुका था। अपने दिमाग़ में वह अमेरिका जाने के बारे में इतनी बार सोच चुका था कि उसे लग रहा था कि क्या वह दिन सही में आ गया।

सपनों के साथ ऐसा होता है। जैसे जेब में ढूँढ़ने के बाद सिक्का मिल जाता है और जेब ख़ाली हो जाती है वैसे ही कई बार यह जानते हुए भी कि जेब ख़ाली है बार-बार वहाँ हाथ जाता है कि शायद सिक्का मिल जाए।

राघव की जेब भरकर भी ख़ाली हो चुकी थी। उस दिन स्टेशन पर बैठे हुए पहली बार उसको यह लगा कि वह अपनी माँ से कितना ज़्यादा प्यार करता है। माँ से प्यार होना इस दुनिया की शायद सबसे साधारण बात है। इतनी साधारण और मामूली कि हमें कभी याद ही नहीं आती।

आदमी सबसे ज़रूरी बात सबसे पहले भूल जाता है। साँस लेना सबसे ज़रूरी आदत है और हमें दिन में एक बार भी ख़याल भी नहीं आता कि हम साँस ले भी रहे हैं या नहीं। माँ का प्यार एक अदना-सी साँस जैसा ही होता है।

राघव वहाँ बेंच पर बैठे-बैठे लोगों की कहानियाँ बनाते हुए बोर हो चुका था। वह बस उठकर जाने ही वाला था कि निशा का फ़ोन आया। वह अजीब से माइंडसेट में था, फ़ोन उठाते ही निशा पर गुस्सा हो गया, “तुम कहाँ हो, मुझे तुमसे तुरंत मिलना है।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हालाँकि निशा की कोई ग़लती नहीं थी फिर भी बेचारी डाँट खा गई। लेकिन उसे समझ आ गया था कि कोई ऐसी बात है कि राघव बहुत परेशान है वर्ना राघव को यूँ ग़ुस्सा कभी नहीं आता। कुछ देर में वह फिर से हज़रतगंज में एक-दूसरे के सामने थे।

"यार, अम्मा को छोड़कर नहीं जाना मुझको।"

"डेट कुछ आगे नहीं बढ़ सकती?"

"नहीं यार, मेरे अकेले के लिए सेशन का टाइम थोड़े बदल देंगे। एक तो अम्मा की तबीयत अंदर से ख़राब है, दूसरे उन्होंने तैयारी शुरू कर दी है।"

"देख, आंटी को कभी कोई ब्वॉयफ़्रेंड वग़ैरह तो मिलेगा नहीं। लखनऊ का माहौल भी ऐसा नहीं है। एक ही काम कर सकता है, तू आंटी की शादी का ऐड दे दे पेपर में।"

"मैंने पूछा था, उन्होंने बात ही टाल दी। कोई दोस्त बन जाए वो तो फिर भी एक बार चलता है लेकिन अम्मा शादी के लिए तो कभी नहीं मानेगी और ऑनेस्टली मुझे नहीं लगता कि अम्मा का शादी करना ठीक होगा।"

निशा बहुत देर से राघव के नखरे सुन रही थी। वह राघव की बात को बीच में ही काटते हुए ग़ुस्से में बोली, "एक बात बता, जब तू छोटा था और आंटी को कुछ हो गया होता तो तेरे पापा शादी करते कि नहीं करते?"

"पता नहीं।"

"तुझे पता है। वह करते क्योंकि तुझे पालना होता। वह नहीं भी करते तो घरवाले करवा देते। तू जो बोलता है न नहीं पता, असल में ये तेरी इन्सिक्योरिटी है। मुझे बहुत अच्छे से पता है कि एक बार तू गया तो तेरे आने का कोई भरोसा नहीं है।"

यह बोलते हुए निशा की आँखों में पानी था। वह भी मन-ही-मन नहीं चाहती थी कि राघव कभी जाए, लेकिन उसने कभी खुलकर यह बात कही नहीं थी। आज भी वह बात नहीं करती लेकिन राघव केवल अपने बारे में सोच रहा था इसीलिए उससे रहा नहीं गया। राघव यह देखकर हैरान था कि निशा ने अपने मन में यह बात दबाकर रखी थी।

उसने निशा के पास अपनी कुर्सी खींचकर उसे सीने से लगा लिया। पूरे कैफ़े में सब उन दोनों की ओर देखने लगे। राघव ने अपनी जेब से रूमाल निकालने के लिए हाथ बढ़ाया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"रहने दे, तू कब से रूमाल रखने लगा!"

राघव को एहसास हुआ कि वह तो कभी रूमाल रखता ही नहीं। कई बातें तब तक साफ़ नहीं होतीं जब तक वह सिर पर आकर खड़ी न हो जाएँ।

अब राघव साफ़-साफ़ देख सकता था कि उसके आसपास के दो सबसे ज़रूरी लोग मन-ही-मन नहीं चाहते कि वह जाए लेकिन वो कभी कहेंगे नहीं कि वह रुक जाए।

निशा ने कैफ़े से निकलते हुए राघव से कहा, "मेरी बात पर सोचना।"

"सोचूँगा।"

"तीन महीने यूँ निकल जाएँगे, पता भी नहीं चलेगा।"

"अब पूरे तीन महीने भी कहाँ बचे हैं!"

निशा राघव के साथ घर आ गई। शालू एक साउथ इंडियन फ़िल्म देख रही थी।

"अम्मा, आप सोई नहीं?"

"अब्बे नींद ही नहीं आ रही थी।"

तीनों बैठकर पहले से कई बार देखी हुई फ़िल्म देखने लगे।

"अम्मा, हर बार पहली बार की तरह कैसे देख लेती हो?"

"अब्बे चुप कर डायलॉग मिस हो जाएगा, ब्रेक में बोलना।"

निशा अम्मा और बेटे के मीठे झगड़े से ख़ुश थी। दुनिया ने दुख को एक शाम के लिए छुट्टी दे दी थी। शाम में हँसी-मज़ाक़, चाय, बातें जैसी छोटी-सी चीज़ें थीं जो ज़िंदगी को रहने लायक़ बना रही थीं।

हर कहानी में एक ऐसा मोड़ आता है कि जब आगे कहानी ही नहीं बचती। तब एक लड़की अपनी ज़िद्द से कहानी की जान बचा लेती है। जीना मृत्यु के विरुद्ध की हुई एक ज़िद्द ही तो है और यादें एक लंबी रात में की गई प्रार्थनाएँ ही तो हैं।

शालू को वायरल था। क़रीब पाँच दिन बाद जब वह ऑफ़िस पहुँची तो दुनिया भर का काम तो इंतज़ार कर ही रहा था, साथ ही ऑफ़िस पहुँचते ही श्रीवास्तव जी ने बताया कि प्रिंसिपल सेक्रेट्री बदल गए हैं। नए साहब के

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यहाँ अपडेट पर जाना है। शालू ने जैसे-तैसे अपडेट बनाया और वे लोग प्रिंसिपल सेक्रेट्री यादव जी के यहाँ पहुँचे।

यादव जी पुराने आईएएस थे और कृषि विभाग में पहले भी रह चुके थे। उन्होंने श्रीवास्तव जी की बहुत क्लास ली लेकिन उस मीटिंग में वह शालू से बहुत इम्प्रेस हुए। इतना कि उन्होंने शालू को हर सोमवार आकर काम का अपडेट देने का आदेश दे दिया।

यह यादव जी का तरीक़ा था कि शालू के साथ ज़्यादा समय बिता सकें। अगले एक हफ़्ते में उन्होंने शालू के बारे में सारी जानकारी इकट्ठा कर ली थी। उनको यह भी समझ आ गया था कि शालू सॉफ़्ट टारगेट हो सकती थी।

अपने कैरेक्टर को लेकर डिपार्टमेंट में यादव जी की कहानियाँ पहले से भी चर्चा में थीं। उन्होंने शालू पर काम का प्रेशर बनाना शुरू कर दिया ताकि एक प्वॉइंट पर वह ब्रेक हो जाए।

एक दिन मीटिंग के बीच में ही यादव जी ने शालू को मैसेज भेजा कि आपकी नेल पॉलिश बहुत अच्छी लग रही है। अपने-आप को बचाने के लिए ऐसे हर मैसेज के बाद वह अगला मैसेज ज़रूर कर देते कि 'सॉरी ग़लत विंडो' में चला गया। जब शालू ने ज़्यादा रिस्पॉन्ड नहीं किया तो उन्होंने मैसेज भेजना बंद करके काम का दबाव बढ़ा दिया। ऐसा हो गया कि हफ़्ते में दो से तीन दिन शालू को प्रिंसिपल सेक्रेट्री के ऑफ़िस में जाना पड़ता। जहाँ पर उसको घंटों इंतज़ार कराया जाता।

जब भी यादव जी को काम के अलावा कोई बात करनी होती तो वह शालू के मोबाइल पर व्हॉट्सएप्प कॉल करते क्योंकि ये कॉल रिकॉर्ड नहीं हो पाते। हर मीटिंग में वह काम का प्रेशर श्रीवास्तव जी पर बनाते लेकिन असल में वह शालू की कंपनी चाहते थे।

शालू को यह बात अच्छे से समझ में आ गई थी और यह भी समझ में आ गया था कि पानी अब सिर के ऊपर से निकल रहा है।

एक दिन मीटिंग के बाद शालू ने श्रीवास्तव जी से कहा, "आप चलिए सर, मुझे ऑफ़िस में और भी कुछ काम है।"

शालू ने पहले से ही यादव जी से मीटिंग के लिए बात करके रखी थी।

शालू के कमरे में पहुँचते ही यादव जी का सुर ही बदल हुआ था। मीटिंग में अपने रौद्र रूप में दिखने वाले यादव जी एकदम लवर ब्वॉय बने हुए थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"क्या लेंगी आप, ठंडा या गर्म?"

"कुछ ठंडा सर, ऐसे ही दिमाग़ बहुत गर्म है।"

यादव जी ने ठंडा लाने का आदेश दिया। इससे पहले शालू कुछ कहती यादव जी बोले, "हम लोग ताज भी चल सकते हैं। ऑफ़िस में बात नहीं हो पाती।"

"फिर कभी चलते हैं सर, जल्दी क्या है?"

शालू की टोन में गंभीरता थी। ठंडा आने के बाद यादव जी अपनी सीट से उठकर शालू की तरफ़ बढ़े। वह थोड़ा-सा अनकंफ़र्टेबल हुई। कुछ सोचकर यादव जी ने अपने-आप को रोक लिया और बोले, "अवस्थी जी, हम सोच रहे थे कि आपके साथ प्रोडक्शन प्लेस देखने चलते हैं।"

शालू ने शालीनता से पूछा, "बिलकुल चलिए सर, किसका प्रोडक्शन देखना है आपको? गेहूँ का? चावल का..."

शालू की बात को बीच में ही काटते हुए वह बोले, "हमने सुना है आप अकेली हैं। घर में एक लड़के के अलावा कोई नहीं है। हमें अपना दोस्त ही समझिए। प्रोडक्शन प्लेस गेहूँ-चावल का क्या देखेंगे, गाँव में पले-बढ़े हैं सब देखा ही हुआ है। आप अपना दिखा पाएँ तो बढ़िया होगा।"

यादव जी ने लाइन क्रॉस कर दी थी। शालू को कंट्रोल करने की इतनी आदत नहीं थी। सामने की टेबल से एक पेपर वेट शालू ने अपने हाथ में लिया और जान-बूझकर यादव जी से कुछ दूरी पर दीवार में टँगी गाँधी जी की फ़ोटो पर ज़ोर से दे मारा और बोली, "तुम्हें थप्पड़ भी मार सकती थी और ये पेपर वेट भी तुम्हारे मुँह पर मार सकती थी लेकिन तुम इतने गिरे हुए हो कि तुम्हें थप्पड़ मारूँगी तो मेरा हाथ गंदा हो जाएगा।"

"तुझे पता है न तुम्हारा करियर ख़त्म कर सकता हूँ! किससे शिकायत करोगी? नेता जी से या चीफ़ सेक्रेट्री से..."

"मिस्टर यादव, मुझे कृषि विभाग में बीस साल हो गए। बीस सालों में 15 से ज़्यादा प्रिंसिपल सेक्रेट्री आए और गए। एक-से-एक बदतमीज़ लोग आए लेकिन तुम्हारे जैसा चीप आदमी नहीं आया। तुम्हारे मैसेज का एक स्क्रीनशॉट भी मीडिया में चला जाएगा तो बाक़ी बची हुई ज़िंदगी एक्सप्लेनेशन देने में ख़त्म हो जाएगी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू ने टेबल पर पड़ी कोल्ड ड्रिंक को यादव के चेहरे पर फेंक दिया और कमरे से निकल गई। लौटते हुए वह गुस्से से उबल रही थी।

सचिवालय (प्रिंसिपल सेक्रेट्री के ऑफ़िस) से निकलकर शालू अपने ऑफ़िस गई। उसने छुट्टी की एक एप्लीकेशन अपने बॉस श्रीवास्तव जी की टेबल पर रखी और घर चली आई। उस दिन शालू को कई दिनों बाद राघव के पापा की याद आई। इसीलिए नहीं कि वह कमज़ोर पड़ रही थी, बल्कि इसलिए क्योंकि शालू को अकेलापन अब थकाने लगा था। रोज़ तय की जाने वाली दूरी भी किसी-किसी दिन लंबी लगने लगती है। कुछ दूरियाँ केवल चलकर पार नहीं की जा सकती।

उसका मन तो था कि घर जाकर आराम करे लेकिन वह वहाँ से घर नहीं गई। वह एक लंबी ड्राइव पर निकल गई। उसने अपनी आँखों को दो बार शीशे में देखा। उनमें आँसू नहीं था।

उसको आँसू न आने पर गुस्सा आया। घर आकर वह बिना कुछ बोले कमरे में जाकर लेट गई।

"क्या हुआ अम्मा? सब ठीक?"

"हाँ, बस खाने का मन नहीं कर रहा।"

"सिर दबा दूँ?"

"नहीं, दर्द नहीं है बस हल्का-सा भारी है।"

"कुछ ऑफ़िस में हुआ क्या?"

"नहीं, वहाँ क्या होगा!"

"नहीं ऐसे आकर लेटती नहीं न!"

"ऐसे ही कल रात में नींद नहीं पूरी हुई थी।"

राघव के बार-बार पूछने पर भी शालू ने कुछ बताया नहीं। राघव समझ तो गया था लेकिन एक प्वॉइंट के बाद उसने पूछना ठीक नहीं समझा। शालू ने कुछ बताया नहीं। वह जल्दी सो गई। अगले दिन सुबह राघव के उठने से पहले ही वह नाश्ता बना चुकी थी। अगले दिन वह ऐसे उठी जैसे कोई बच्चा धूल झाड़कर खड़ा हो जाता है, अगली चोट खाने के लिए एकदम तैयार।

वह उस दिन ऑफ़िस नहीं गई। श्रीवास्तव जी का फ़ोन आने पर उसने ख़राब तबीयत का बहाना बना दिया। श्रीवास्तव जी एक दिन पहले की

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यादव जी की मीटिंग के बारे में जानना चाह रहे थे।

"अवस्थी जी, ऐसा क्या समझा दिया आपने यादव जी को?"

"क्यों सर, क्या हुआ?"

"अभी सचिवालय से चिट्ठी आई है कि अब रिवियू मीटिंग महीने में एक बार होगी।"

शालू अपनी इस छोटी-सी जीत पर ख़ुश थी। शालू ने साथ में यह भी जोड़ दिया, "वैसे सर, मैंने छुट्टी की एक एप्लिकेशन दी है। बेटे के जाने में ज़्यादा दिन नहीं बचे हैं। बहुत से पर्सनल काम निपटाने हैं तो देख लीजिएगा।"

"ठीक है अवस्थी जी, बस दो-तीन दिन दीजिए हम देख लें कि आपकी जगह कौन काम सँभालेगा।"

शालू इस बात से ख़ुश थी कि अब वह राघव के साथ बचा हुआ समय सही से गुज़ार पाएगी।

फ़ोन रखने के बाद उसने राघव से कहा, "मैं सोच रही थी फ़िल्म देखने चलते हैं। पिछले एक महीने से कहीं निकले ही नहीं। फिर वहीं से कहीं बाहर खा भी लेंगे। निशा से भी पूछ ले चलेगी तो ले चल।"

राघव वैसे भी फ़िल्म के लिए कभी मना करता नहीं था। वह भी कई दिन बाद अम्मा को हल्के-फुल्के अंदाज़ में देखकर ख़ुश था। दिन में भी शालू ने राघव का मनपसंद खाना बनाया। शाम को वे फ़िल्म देखने गए।

राघव के मन में यह बात थी कि वह शालू से शादी की कोई बात कहे लेकिन अम्मा का अच्छा मूड देखकर उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी। वैसे भी वह जाने से पहले अम्मा को किसी भी तरीक़े से परेशान नहीं करना चाहता था।

राघव और शालू ने फ़िल्म देखी। शालू की फ़ेवरेट जगह पर खाना खाया लेकिन एक बार भी उसकी हिम्मत नहीं हुई कि कुछ बात कर पाए।

खाना खाकर लौटते हुए भी कार में वह बिलकुल चुप था। वह जब भी कभी ऐसे फ़िल्म देखने जाते तो लौटते हुए हज़रतगंज में पोस्ट ऑफ़िस के पास मीठा पान खाकर लौटते। वह पान इतना अच्छा होता कि पान खाने के बाद ख़राब-से-ख़राब मूड अच्छा हो जाता।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इतना चुप वह रहता नहीं था। शालू को अंदेशा हो गया कि कोई बात है। उस दिन कार शालू चला रही थी।

"क्या हुआ?"

"कुछ नहीं हुआ।"

"निशा से लड़ाई हुई है?"

"कहा न अम्मा, कुछ नहीं हुआ है।"

"कुछ नहीं हुआ है तो लंगूर बना क्यों बैठा है, कुछ बोलता क्यों नहीं?"

"ऐसे ही मन नहीं है। तुम पान खाओ और चुप रहो।"

दोनों के मुँह में पान था इसलिए कुछ बात करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। पान खाने के बाद राघव का मूड कुछ हल्का हुआ।

"अम्मा, तुमने कभी शादी का नहीं सोचा?"

शालू को ऐसे सवाल की उम्मीद सौ किलोमीटर दूर तक नहीं थी। वह जवाब देने से पहले बहुत ज़ोर से हँसी, "पागल है, एक्सिडेंट करवाएगा क्या!"

"मैं सीरियसली पूछ रहा हूँ।"

"सोचा, कई बार सोचा। फिर सोचा तेरा क्या होगा।"

"यार अम्मा, कभी भी मज़ाक़ मत किया करो।"

"तू सवाल ही ऐसे पूछेगा तो मज़ाक़ करना ही पड़ेगा न!"

राघव अब पहले से ज़्यादा सीरियस था। उसने अपनी माँ के सिर पर हाथ सहलाया और कहा, "अम्मा जाने में बहुत कम टाइम बचा है। मुझे बार-बार लग रहा है कि तुझे अकेला छोड़कर कैसे जाऊँगा।"

"वाह, मेरे बच्चे! तू कुछ ज़्यादा ही बड़ा नहीं हो गया है! शाम से इसलिए मुँह बनाकर बैठा है?"

राघव अपनी माँ की तरफ़ देख रहा था। उसकी आँखों में देखने की कोशिश कर रहा था कि ख़ुशी की बात वह बस बोल रही है कि ख़ुश है भी।

"तुम रह लोगी अकेले?"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"हाँ तो उसमें क्या है! अभी बूढ़ी थोड़े हुई हूँ कि नहीं रह पाऊँगी! तू मेरे लिए इतना मत सोच।"

"अम्मा एक बात मानोगी?"

"बोल।"

"मेरे जाने से पहले शादी कर लो।"

"तुझे सही से बाहर भेजना किसी शादी से कम है क्या! तेरे जाने की तैयारी शुरू..."

कार में फिर से एक ख़ामोशी थी। राघव बार-बार कुछ बोलते हुए रुक जा रहा था। फिर उसने एक एक साँस में बोल ही दिया, "तुम कुमार आलोक के टच में हो, इब्नेबतूती बुलाता था न तुम्हें वो?"

राघव ने रात के भारीपन को हल्का करते हुए कहा। शालू ने सोचा ही नहीं था कि राघव को कुमार आलोक के बारे में कुछ पता भी है। अगर पता है भी तो वह ऐसे एकदम से पूछेगा यह उम्मीद तो उसे क़तई नहीं थी।

रात लाखों तारों का बोझ उठाते हुए थक चुकी थी। आसमान ने अपने पास से एक तारा तोड़ दिया था। उस टूटते तारे से कुछ लोगों ने अपना सब कुछ माँग लिया था और कुछ लोगों ने अपना सब कुछ खो दिया था। टूटता तारा टूटकर भी तो दुनिया में ही रहता होगा। अलग होकर भी चीज़ें अलग होती कहाँ हैं! जिस शालू के पास हमेशा हर चीज़ का जवाब होता था, वह चुप हो गई थी।

बिना कुछ खोए एक लंबे सफ़र को पूरा नहीं किया जा सकता। सब कुछ खोने के बाद भी हमारा जो हिस्सा बचा रह जाता है, असल में हम उतना ही होते हैं, बाक़ी सब तो बस शो-ऑफ़ है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

साल 1990, दिल्ली यूनिवर्सिटी, हिंदू कॉलेज-

'जिन्न वाली दीदी'

जुलाई 1990

शालू और कुमार आलोक फ़िल्म देखकर निकल रहे थे। फ़िल्म कुछ ख़ास नहीं थी लेकिन कोई साथ में ऐसा हो तो फ़र्क़ नहीं पड़ता कि फ़िल्म अच्छी है या ख़राब। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा हुआ था। उनकी आदत थी कि जब भी समय होता तो कोई भी रैनडम बस में चढ़ जाते और फिर 2-3 घंटे घूमने के बाद लौटते।

एक दिन जब वह फिल्म देखने के बाद दिल्ली शहर में यूँ ही आवारा भटक रहे थे-

"आप चुप क्यों हैं इतना?" कुमार आलोक ने पूछा।

"यार, इतनी अच्छी कहानी थी लेकिन हीरोइन की एक्टिंग इतनी ख़राब थी!" शालू ने अपने चुप होने की वजह बता दी।

"अरे यार, ये भी कोई मूड ऑफ़ होने की बात है!"

"बात तो है ही। तीन घंटे ख़राब भी तो हुए।"

"अरे तीन घंटे हम लोग साथ भी तो थे, पूरे ख़राब थोड़े हुए।" कुमार आलोक ने नुक़सान की भरपाई करने के अंदाज़ में कहा।

"ये तो है।" कहते हुए शालू ने कुमार आलोक का हाथ पकड़ लिया और इतने में पड़ोस में बैठी एक आंटी बिफर पड़ीं। शायद इसलिए क्योंकि वह अपनी लड़की के साथ बस में बैठी थीं। कुछ देर तो उन्होंने शालू को कुमार आलोक का हाथ पकड़े हुए देखा लेकिन कुछ देर बाद बर्दाश्त नहीं कर पाईं और अपने-आप में ही बड़बड़ाने लगीं।

"आजकल के बच्चे धोखेबाज़ हो गए हैं। घर वालों को पढ़ाई के नाम पर धोखा देते हैं।"

यह सुनते ही कुमार आलोक ने अपना हाथ छुड़ाना चाहा। उसको हाथ छुड़ाता देख शालू ने और ज़ोर से हाथ पकड़ लिया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आंटी अब भी कुड़-कुड़ किए जा रही थीं। इतने में कंडक्टर के आने पर आंटी ने अपना सारा गुस्सा कंडक्टर पर उतार दिया। उस बेचारे को समझ नहीं आया कि आख़िर हुआ क्या। अब शालू को आंटी को चिढ़ाने में मज़ा आ रहा था। पर कुमार आलोक के ज़बरदस्ती करने पर शालू भी थोड़ी देर में उतर गई।

"उतार क्यों लिया, अभी तो मज़ा आना शुरू हुआ था!"

"अच्छा नहीं लगता। वो अपनी बेटी के साथ थीं।"

"तो क्या हुआ? तुम्हें पता है यही लोग असली प्रॉब्लम हैं!" शालू अब गुस्से में थी।

यूँ ही लड़ते-मनाते दोनों वापस हॉस्टल चले आए।

दोनों अब एक ख़ास दोस्त से ज़्यादा थे। इतने ज़्यादा कि शालू फ़ैसला कर चुकी थी कि अगर वह शादी करेगी तो कुमार आलोक से। कुमार आलोक को अपने कॉलेज के समय बस एक चीज़ दिखती थी कि किसी तरह वह यूपीएससी क्लियर कर ले क्योंकि यह इकलौता इम्तिहान था जो उसके परिवार की क़िस्मत बदल सकता था। कुमार आलोक के परिवार के पास इतना पैसा नहीं था कि वह उसको आगे पढ़ा पाते। पूरे ख़ानदान की उम्मीदें उस पर टिकी थीं। आलोक यह बात समझता था इसीलिए कभी अपना समय ख़राब नहीं करता था।

कुमार आलोक ने कभी प्लान-बी नहीं बनाया था कि अगर यूपीएससी नहीं हुआ तो वह क्या करेगा। शालू ने कोई प्लान-ए तक नहीं बनाया था। वह अब भी थिएटर करने में व्यस्त और मस्त रहती। उसको कुमार आलोक की लिखी हुई चिट्ठियाँ बहुत पसंद थीं। यह बात अलग थी कि वह कभी उनका जवाब नहीं देती थी। एक भी चिट्ठी का नहीं।

"इतनी चिट्ठियाँ लिखते हैं कभी तो जवाब दे दिया करिए।"

"लिखकर सब ख़राब नहीं करना चाहते हम। जिस दिन हमारी चिट्ठी मिले समझ जाना कि हम किसी बहुत बड़ी प्रॉब्लम में हैं। बस फिर चिट्ठी पढ़ते हुए स्लो मोशन में भागते हुए हमारे पास आ जाना।"

कुमार आलोक को लिखकर ही अपनी बात रखना पसंद था। कुछ बातें शायद लिखकर ही कही जा सकती हैं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू को न जाने कितनी कहानियाँ, नाटक ज़बानी याद थे। बस वह अक्सर ही अपनी रिहर्सल के दौरान कुमार आलोक से मिलने का समय भूल जाती थी।

यह कॉलेज का तीसरा और फ़ाइनल ईयर था। कुमार आलोक अगले साल अपना यूपीएससी का पेपर देने की पूरी तैयारी में था। शालू हर तरीक़े से उसके सपोर्ट में थी।

शालू के पास अब नुक्कड़ नाटक करने वाली पूरी एक टीम थी। वे काले कुर्ते पहनकर दिल्ली के अलग-अलग इलाक़ों में नुक्कड़ नाटक किया करते थे। कभी-कभी लोग बहुत पैसे भी दे दिया करते। वह कभी-कभार कॉलेज से कैंप के लिए भी जाती।

कुल मिलाकर उसको लाइफ़ में मज़ा आ रहा था। घर से भी ऐसी कोई मजबूरी नहीं थी इसलिए उसने आगे का कुछ सोचा नहीं था।

कुमार आलोक के लिए एक-एक दिन क़ीमती था। उसने अपने कमरे से निकलना भी क़रीब-क़रीब बंद ही कर दिया था। वह बस शालू से मिलने और लाइब्रेरी से किताब लेने के लिए ही निकलता। ऐसे ही एक दिन जब वह बहुत देर से सिंह साहब के ढाबे पर आई।

“शालू, आप देर मत किया कीजिए। हमको पढ़ना रहता है।”

“अब ऐसे करेंगे आप? हम लोग 15 अगस्त पर बहुत बड़ा प्ले करने वाले हैं। रिहर्सल में पता नहीं चलता, समय लग जाता है।”

“हाँ, तो एक काम करते हैं न, हम लोग दो-तीन दिन में एक बार मिल लिया करेंगे।”

“अरे, ऐसे कैसे दो-तीन दिन!” शालू ने दिनों की गिनती पर ज़ोर देते हुए कहा।

“समझो न, अगले साल पेपर निकालना है हमें।”

“हम बिना मिले कैसे रहेंगे? हम नहीं मिलते तो मन नहीं लगता है और हमें गुस्सा भी आता है। गुस्से में फिर हम ज़्यादा खा लेते हैं और ज़्यादा खा लेंगे तो मोटे हो जाएँगे और हमें मोटा होना पसंद नहीं।” शालू ने एक साँस में इस बात को ऐसे कहा जैसे कोई प्ले की रटी-रटाई लाइन हो।

कुमार आलोक के पास ‘न’ कर पाने की चवन्नी भर की जो वजह थी, वह जाती रही। वह एक ऊबा हुआ समय था जब चवन्नियाँ चला करती थीं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इसके बाद कुमार आलोक ने शालू का हाथ पकड़ा। शालू ने कुमार आलोक की उँगलियों पर नीले रंग की स्याही के तमाम निशान देखे।

"एक दिन में कितने पेज लिख लेते हो?"

"जब तक तीस पेज भर नहीं लेते तब तक नींद नहीं आती।"

वह एक ऊँघा हुआ समय था जब पढ़ाई की बात में दुलार होता था। शालू चाहती थी कि कुमार आलोक का सलेक्शन पहली बार में हो जाए। वह मेहनती भी बहुत था।

"शालू जी, आपने एक बार हमसे पूछा था कि यूपीएससी में अगर हमारा नहीं हुआ तो हम क्या करेंगे?"

"हाँ पूछा होगा, हमें तो याद नहीं रहता। आप काहे इतना सोच रहे हैं आपका तो हो ही जाएगा!"

"हमारे बिहार में ऐसे कई इलाक़े हैं जहाँ लोगों के पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि वह अपने लिए खाना ख़रीद सकें। कुछ लोग चूहे खाकर ज़िंदा रहते हैं। हमने सोचा है कि अगर हमारा नहीं हुआ तो हम अपने प्रदेश में ही तमाम जगह रहकर बच्चों को पढ़ाएँगे। कुछ ऐसा करेंगे जिससे उनकी ज़िंदगी बदल सकें। सर्विस में नहीं हुआ तो क्या हुआ देश सेवा करते रहेंगे।"

"हम जो कुछ भी बकवास करते हैं, आप उसके बारे में इतना सोचते हैं!"

"हाँ कई बार, जैसे अभी आप हमसे ये कह रही हैं। जब हम सोने वाले होते हैं तो नींद आने से पहले ये सीन बार-बार रिपीट होता रहता है। हर बार जब रिपीट होता है तब एक नया मतलब खुलता है। ये शेक्सपियर बाबा की कहानी जैसा है, जितनी बार पढ़ो उतनी बार नया मतलब खुलता है।"

शालू यह सुनकर हैरान थी कि एक बार उसने मज़ाक़ में जो कहा था, उसके बारे में भी कुमार आलोक ने इतना डूबकर सोचा है। उसको आलोक से जितना भी प्यार था उससे थोड़ा-सा ज़्यादा ठीक उस वक़्त हो गया। तारीख़ें, समय पर रखी हुई उँगलियाँ हैं ताकि हमें अपनी चली हुई दूरियों का हिसाब करने में दिक़्क़त न हो। इस दुनिया में अपनी पहली तारीख़ से आख़िरी तारीख़ तक आदमी ज़्यादा नहीं चला, बस उसको ज़्यादा चलने का एक भ्रम हुआ है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उस दिन जब कुमार आलोक ने शालू को हॉस्टल के पास छोड़ा तो न जाने क्यों दोनों को वहाँ से जाने का मन नहीं हुआ। वह उस दिन ठहर जाना चाहता था।

उस दिन पहली बार ऐसा हुआ था कि शालू के दिमाग़ में कुमार आलोक की कही हुई बात बहुत देर तक रिपीट होती रही। उसको अपनी बात पर हँसी भी आई।

अगले दिन जब वह प्ले की रिहर्सल के लिए भी गई तो वह बात रिपीट होती रही। वह लाइन के बीच में हँस रही थी। वह खोई हुई थी।

ऐसे खोने के मौक़े सबकी ज़िंदगी में कभी-न-कभी आते हैं, बस ये मौक़े ठहरते कम लोगों के पास हैं। आदमी ज़िंदगी में दूसरे से ज़्यादा अपने-आप को समझा लेता है। कोई-न-कोई ऐसी वजह देकर जो कई बार होती भी हैं और नहीं भी।

शालू जब बार-बार अपने दिमाग़ में कुमार आलोक को उसकी बातों को लाकर ठहरा रही थी, तब बस एक बात क्लियर थी कि वह कुमार आलोक के बिना नहीं रहना चाहती थी।

अगले दिन ही उसको पता चला कि पूरे थिएटर ग्रुप को छह दिन के लिए दिल्ली से बाहर एक कैंप पर जाना है। इस कैंप में पूरे ग्रुप को गाँव-गाँव जाकर नुक्कड़ नाटक करके तमाम जानकारियाँ देनी है।

शालू ऐसे कैंप्स में अक्सर जाती रहती थी। ऐसे कैंप में जाने के कई फ़ायदे थे। एक तो कॉलेज गए बिना अटेंडेंस लग जाती थी और गाँव जाकर लोगों को कहानियाँ सुनाना उसको अच्छा भी लगता था।

जब गाँव में औरतें काले कुर्ते और नीली जींस में उसको अचरज से देखती थीं तो उनको कहती भी थी कि एक दिन आपकी बेटी भी ऐसे ही पढ़ने शहर जाएगी। औरतों की ये बातें कभी-कभी अच्छी भी लगतीं और कभी-कभी अजीब भी। वह एक आदिम समय था जब गाँव में लड़कियों का जींस पहनकर जाना कोई बड़ी बुरी बात मानी जाती थी। लेकिन शालू को इन सब से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। उसका ग्रुप जहाँ भी जाता, बहुत-सी औरतें और बच्चे हमेशा के लिए बदल जाते। कई गाँव वाले उसको जीन वाली दीदी भी कहते। जींस का जीन और जीन का जिन्न कब हो गया, ये शालू को भी पता नहीं चला था। उसके ग्रुप वाले भी उसको एक समय के बाद 'जिन्न वाली दीदी' बोलकर चिढ़ाया करते। कैंप में हर एक दिन वह

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सबसे नज़र बचाकर कुमार आलोक को याद किया करती। उधर कुमार आलोक ने हर एक दिन के हिसाब से चिट्ठी लिखकर रख ली थी कि जब वह लौटकर आएगी तो एक साथ सारी चिट्ठियाँ दे देगा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"मेरी इब्नेबतूती,

देखिए आपका नाम सही ही रखा था हमने, आपके पैर में चक्कर लगा है। कल तक यहाँ थीं और आज पता चला कि आप बिना मिले कैंप में चली गई हैं। हमसे ज़्यादा क़िस्मत वाले तो वो गाँव वाले हैं जो रोज़ आपको देख रहे होंगे। आप जल्दी से आइए। आपसे बहुत सारी बातें करनी हैं। हम सोच रहे थे कि अगर अगले साल हमारा सेलेक्शन हो गया तो आपके घर वालों से मिलकर हम शादी की बात कर लेंगे। लंबी चिट्ठी लिखने की हमारी तो आदत है लेकिन आप ही कहती हैं कि लंबी चिट्ठी मत लिखा करो। जल्दी आइए।

आपके इंतज़ार में,

आपका कुमार आलोक (2 अगस्त 1990)"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

2015 वाली शालू नहीं इब्नेबतूती

दुनिया की हर औरत इस वरदान के साथ पैदा होती है कि उसको झूठ बोलना सीखना नहीं पड़ता। औरत एक झूठ से दुनिया भर के काम आसान कर लेती है। अदना-सा झूठ कि ठीक हूँ। वह ठीक न होते हुए भी बोल देती है ठीक हूँ और सबको विश्वास हो जाता है। या कोई बड़ा-सा झूठ, उस सच की ख़ातिर जिसका बोझ ढोना असंभव हो सकता था।

पिछली रात लौटने के बाद से सुबह तक शालू और राघव के बीच में कोई बात नहीं हुई। कुमार आलोक वाले सवाल की उम्मीद उसको राघव से बिलकुल भी नहीं थी। उसकी आँखों को देखकर समझा जा सकता था कि वह रात भर सोई नहीं है। राघव अभी सो ही रहा था। उसने रोज़ के जैसे चाय बनाई और गाने चलाकर राघव को ऐसे उठाना शुरू किया जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

यह सुबह एक आम सुबह थी। नहीं भी थी तो शालू अपनी तरफ़ से सब कुछ नॉर्मल करने की कोशिश कर रही थी।

राघव ने जब चाय पीना शुरू ही किया था तब शालू ने अपनी डायरी आगे रखी और बोली, "मैंने तेरे जाने की तैयारी की एक लिस्ट बनाई है। तू देख ले और अपनी तरफ़ से जोड़ दे। बहुत कम टाइम है।"

राघव यह सुनकर हैरान था। कुमार आलोक वाली बात तो शालू ने ऐसे उड़ा दिया था जैसे कि वह कोई हो ही नहीं।

उस लिस्ट में एक-एक छोटी से लेकर बड़ी-से-बड़ी चीज़ों तक सब कुछ लिखा हुआ था। लिस्ट को देखकर ऐसा लग रहा था कि शालू उस पर घंटों बैठी होगी।

राघव ने जब शालू की तरफ़ देखा तो वह अख़बार में इधर-उधर के पन्नों को पढ़ रही थी। राघव से रहा नहीं गया। वह बोला, "इस लिस्ट की ज़रूरत नहीं है। मैंने सोच लिया है। मैं नहीं जा रहा।"

"तू पागल हो गया है, क्यों नहीं जाएगा?"

"तुम्हें अकेले छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

"बच्चों जैसी बातें मत कर।"

"अम्मा यार, तुम समझ ही नहीं रही। बोल दिया न, नहीं जाऊँगा।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"मैंने भी बोल दिया कि जाएगा।"

शालू उठकर नाश्ता बनाने चली गई। उसने राघव के फ़ेवरेट गोभी के पराठे बनाए। कई बार मन का खाने से मूड अच्छा हो जाता है। मूड अच्छा खाने से नहीं होता है, उस ख़ास ख़ुशबू से होता है जो तभी आती है, जब कोई ख़ास उसे अपने हाथों से बनाए। राघव अपने-आप को रोकना चाहता था लेकिन उस ख़ुशबू ने उसको रुकने न दिया।

"कैसे बने हैं?" शालू ने अगला पराठा राघव की प्लेट में रखते हुए पूछा।

"अच्छे हैं।"

"अबे, अच्छे हैं कि बहुत अच्छे हैं!" शालू ने अपने टोंट मारने वाले स्टाइल में पूछा।

"बहुत अच्छे हैं।"

"तो पहले क्यों नहीं बोला कि बहुत अच्छे हैं!"

इसके बाद कुछ रुककर एकदम उठकर राघव ने शालू को गले लगा लिया। बचपन में माँ का बेटे को गले लगाना जितनी छोटी घटना है, बड़े होकर बेटे का माँ को गले लगाना उतनी ही बड़ी घटना।

वह फफक-फफककर रो रहा था। शालू ने उसको चुप नहीं करवाया। शालू की आँखें भारी ज़रूर हुईं लेकिन उनमें कोई आँसू नहीं था।

"नहीं जाना अम्मा।"

शालू राघव के सिर को सहलाने लगी। उसने कुछ भी बोलना ठीक नहीं समझा।

इतने में दरवाज़े की घंटी बजी। राघव ने अपना मुँह धोया और शालू ने दरवाज़ा खोला। दरवाजे पर निशा थी।

"नमस्ते आंटी, बधाई हो!"

"तुम्हें भी, ये तो बोल रहा है जाना ही नहीं है।" शालू ने आवाज़ इतनी तेज़ करके कहा कि राघव को भी सुनाई पड़ जाए।

कुछ देर में इधर-उधर की बातों के बाद निशा ने कहा, "आंटी, मैंने आपका प्रोफ़ाइल मैट्रीमोनी की वेबसाइट पर बनाया था।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"क़सम से, तुम लोग मेरे मम्मी-पापा की तरह बिहैव कर रहे हो।" शालू ने आवाज़ तेज़ करते हुए कहा।

"प्रोफ़ाइल भी बना दिया। बिलकुल दिमाग़ से पैदल हो गई हो क्या!" राघव भी इस बात से चौंका।

माँ और बेटे दोनों ही बेचारी निशा पर चढ़ बैठे।

"आप लोग मुझपे गुस्सा क्यों हो रहे हो! आंटी आप अकेले रहोगे तो ये जाएगा नहीं। मैं जानती हूँ राघव को, बहुत ज़िद्दी है।" निशा ने प्रोफ़ाइल बनाने को जस्टिफ़ाई कर दिया था।

"निशा बेटा, मैं तो जानती ही नहीं न राघव को।"

"सॉरी आंटी! मेरा वह मतलब नहीं था।"

दोनों को ऐसे बात करते हुए देख राघव ने अपना सिर पकड़ लिया।

"आंटी, एक बहुत अच्छा प्रोफ़ाइल है इसमें। देबाशीश चैटर्जी नाम है, उम्र है 50 साल और IIM लखनऊ में प्रोफ़ेसर हैं। मस्त फ़्रेंच कट दाढ़ी है। मैंने अलग से इंटरनेट पर सर्च भी किया था, वो दुनिया भर में लेक्चर लेने जाते हैं। इनफ़ैक्ट राघव का एडमिशन जहाँ हुआ है, वहाँ भी जाते हैं।" इससे पहले निशा को शालू या राघव रोकते, उसने अपनी बात सबके सामने रख दी।

न राघव कुछ बोल रहा था न ही शालू। इस बीच राघव का एक कॉल आया, वह छत पर चला गया। अब कमरे में निशा और शालू अकेले ही थे।

"आंटी सॉरी! बट अगर मिस्टर चैटर्जी से मिल भी लोगे तो कम-से-कम राघव जाने के लिए तैयार हो जाएगा।"

निशा की इस बात से शालू सोच में पड़ गई। जितनी देर में राघव लौटकर आता, निशा ने शालू को कम-से-कम इस बात के लिए तैयार कर लिया था कि वह एक-दो लोगों से मिल ले। इतना करने से राघव भी जाने को तैयार हो जाएगा। इस बार सास और कल को होने वाली बहू ने घर के लड़के के ख़िलाफ़ साजिश कर ली थी। शालू अभी निशा की बात पर सोच ही रही थी कि एकदम से उसने कहा, "ज़रा फ़ोटो दिखाना।"

शालू ने पूरा प्रोफ़ाइल ध्यान से देखा और बोली, "शक्ल से तो ठीक लग रहा है। इसमें तो लिखा है सिगरेट पीता है।"

"अरे आंटी, वह सब छोड़ो आपको कौन-सा शादी करनी है!"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"बंगालियों का तुझे पता नहीं हैं, पीछे पड़ जाते हैं।"

जब राघव कॉल करके नीचे आया तब तक निशा और शालू प्लानिंग कर चुके थे। इससे पहले वह अपने प्लान में राघव को लपेटते, राघव बोला, "निशा, प्रोफ़ाइल डिलीट कर दो अम्मा का। जब उनका मन होगा तब देखेंगे।"

अपने प्लान को खटाई में पड़ता देख शालू बोली, "मैं सोच रही थी कि मिलने में बुराई नहीं है।"

"क्या?"

"हाँ और क्या! एक बार मिलने में क्या है!"

राघव समझ तो चुका था कि कुछ तो बात हुई है इन दोनों के बीच।

"तुम सोच लो।" राघव ने शालू की आँखों में पढ़ते हुए कहा।

"आंटी मीटिंग की बात करूँ?" निशा ने बीच में अपनी बात की टाँग अड़ाई।

"इतनी भी क्या जल्दी है?" राघव ने कहा।

"हाँ करो तुम बात।" शालू ने जैसे ही यह कहा राघव को पूरा यक़ीन हो गया कि शालू और निशा ने कुछ प्लानिंग की है।

निशा को यह बात पता थी कि अगर सब सही गया तो राघव रुकेगा नहीं, लेकिन प्यार में आप अपने अच्छे से ज़्यादा दूसरे का बहुत अच्छा सोचने लगते हो।

निशा ने मीटिंग फ़िक्स करने से पहले आख़िरी बार पूछा, "आंटी, कल शाम की मीटिंग फ़िक्स कर रही हूँ।"

"फिर तो आज ब्यूटी पार्लर जाना पड़ेगा।" शालू ने चिंता जताई।

"क्या, ब्यूटी पार्लर क्यों?" राघव ने पूछा

इस सवाल का जवाब देना तो शालू को चाहिए था लेकिन जवाब निशा और शालू दोनों ने एक साथ दिया, "रहने दे, तू नहीं समझेगा।"

यह कहकर निशा और शालू ने हाई फ़ाइव किया।

राघव अकेला पड़ गया था लेकिन मन-ही-मन वह ख़ुश था कि चलो शायद अम्मा को सही में कोई ऐसा मिल जाए। उसने निशा को आँखों से

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

थैंक्स कहा। निशा ने आँखों से ही मेंशन नॉट कहा। शालू ने दोनों को ऐसा करते हुए देखा और उसको एक बात की तसल्ली हुई कि निशा बहुत अच्छी लड़की है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

फ़ौजी दा ढाबा

निशा ने देबाशीश चैटर्जी से ताज होटल में मिलने की बात तय की लेकिन प्रोफ़ेसर साहब ने बताया कि उनको अगले कुछ दिन ज़रूरी काम है इसलिए वह कॉलेज से लंबे समय के लिए नहीं निकल पाएँगे। निशा और राघव को शालू को प्रोफ़ेसर साहब से मिलवाने की जल्दी थी। इसलिए जगह तय हुई फ़ौजी दा ढाबा जो कि आईआईएम लखनऊ से बिलकुल पास था। इसके खाने के बारे में सभी ने सुन रखा था लेकिन कभी गए नहीं थे।

प्रोफ़ेसर साहब ने सख़्त हिदायत दे रखी थी कि वह अकेले ही मिलना चाहते हैं और चूँकि वह समय के बहुत पाबंद थे इसलिए समय पर ही मुलाक़ात हो। यूँ तो शुरू में ढाबे पर जाने वाली बात से राघव थोड़ा अपसेट था लेकिन शालू को किसी होटल में बहुत फ़ॉर्मल माहौल से ढाबे पर मिलना ज़्यादा सही लगा।

राघव और निशा उसी ढाबे पर दूर बैठ गए। प्रोफ़ेसर चैटर्जी एकदम समय पर थे। शालू ने बहुत ही ख़ूबसूरत साड़ी पहनी हुई थी। प्रोफ़ेसर साहब शॉर्ट्स और टी-शर्ट पहनकर आए थे। प्रोफ़ेसर ने बैठने से पहले इधर-उधर नज़र डाली। निशा से एक बार को उनकी आँख मिली लेकिन चूँकि उन्होंने निशा को देखा नहीं था इसलिए कोई नुक़सान नहीं हुआ।

"हेलो, I'm Debashish. You can call me Deb"

"Is it okay, if I call you Mr. Chatterjee?" शालू ने कहा और मेनू हाथ में ले लिया।

"बिलकुल कह सकती हैं, मैं आपको क्या बोलूँ... मिस अवस्थी?"

यह बात सुनकर दोनों हँसे। इतने में वेटरनुमा एक लड़का ऑर्डर लेने आया। उसने प्रोफ़ेसर साहब को सलाम ठोका। उस लड़के की मुस्कान देखकर लगा कि प्रोफ़ेसर साहब अक्सर ही वहाँ आते हैं।

प्रोफ़ेसर साहब ने टेबल पर सिगरेट रखी और जलाने से पहले शालू से पूछा, "आपको कोई दिक़्क़त तो नहीं?"

"नहीं, कोई दिक़्क़त नहीं।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यह सुनते ही प्रोफ़ेसर साहब ने सिगरेट जला ली। वेटरनुमा लड़का अभी वहाँ खड़ा था।

"आपका वाला चिली चिकन ही न सर?"

"एक मिनट, आप नॉनवेज लेती हैं?"

शालू ने न में सर हिलाया। प्रोफ़ेसर साहब ने इस बात का ख़याल करते हुए लड़के से कहा, "वेज में अच्छा क्या है?"

लड़के ने वही घिसा-पिटा जवाब दिया, "सर, सब बढ़िया है।"

शालू अब तक प्रोफ़ेसर साहब और लड़के की बातचीत के बीच में नहीं आई थी।

"एक चिली पनीर कर दीजिए और एक नींबू सोडा। गोली सोडा मिलता है यहाँ?"

प्रोफ़ेसर साहब को गोली सोडा के बारे में नहीं पता था। उधर पास में राघव के चेहरे पर परेशानी थी।

"इतना परेशान क्यों हो रहा है?" निशा ने अपने लिए गोली सोडा ऑर्डर करते हुए कहा।

"अम्मा को सिगरेट पीने वाले पसंद नहीं।"

वह अभी देख ही रहे थे कि प्रोफ़ेसर साहब और शालू के ज़ोर से हँसने की आवाज़ आई। प्रोफ़ेसर साहब ने एक चुटकुला सुनाया था। उनको हँसता देख निशा और राघव ने राहत की साँस ली। दूर से देखते हुए लग रहा था कि शालू और प्रोफ़ेसर साहब की बातचीत अच्छी हो रही थी।

इन सबमें क़रीब एक घंटा बीत गया। उठने से पहले शालू प्रोफ़ेसर को लेकर राघव और निशा वाली टेबल पर आई।

"अम्मा क्या कर रही हैं?"

निशा की भी हालत ख़राब थी। टेबल पर लाते ही शालू ने प्रोफ़ेसर साहब से दोनों को मिलवाया।

"निशा ने ही आपको ढूँढ़ा था और ये है राघव, मेरा बेटा।"

इससे पहले कि प्रोफ़ेसर कुछ बोलते निशा ने ही बोल दिया, "सॉरी सर।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"Its okay Nisha!"

राघव ने अपना हाथ प्रोफ़ेसर की तरफ़ बढ़ा दिया। प्रोफ़ेसर को राघव के एडमिशन के बारे में पता था। उसने बातों-बातों में यह बताया कि जिस यूनिवर्सिटी में वह जा रहा है, वहाँ पर उसकी बहुत जान-पहचान है कोई दिक़्क़त नहीं होगी।

चलने से पहले शालू ने दोनों बच्चों के सामने ही बता दिया।

"परसों यहाँ पर एक प्ले है। मैं और मिस्टर चैटर्जी जा रहे हैं।"

प्रोफ़ेसर साहब ने जोड़ा भी, मेरे पास दो ही पास हैं, तुम लोगों को भी आना है तो मैं बोल दूँगा।

राघव और निशा दोनों ही इतने समझदार तो थे ही कि शालू और प्रोफ़ेसर साहब को अलग से टाइम देना चाहिए। दोनों ने एक साथ ही 'ना' कर दिया।

प्रोफ़ेसर साहब अपनी बातचीत और लहजे से निशा और राघव दोनों को एकदम परफ़ेक्ट लगे। गाड़ी से लौटते हुए रास्ते में राघव मीटिंग के बारे में बहुत सारी बात करना चाह रहा था लेकिन पूछने में शरमा रहा था।

तीनों में से कोई नहीं बोल रहा था। रेडियो में 'अफ़गान जलेबी' बज रहा था। निशा ने गाना स्लो किया और तीनों एक साथ बोले, "तो!"

यह कहने के बाद राघव ने शालू की तरफ़ देखा, शालू ने निशा की तरफ़ और निशा ने राघव की तरफ़।

फिर तीनों एक साथ बोले, "तो क्या?"

राघव ने लीड लेते हुए कहा, "तो कैसा था बंगाली प्रोफ़ेसर?"

"बढ़िया था।"

"बस बढ़िया था! आगे भी कुछ बताओगी?" राघव ने जानने की छटपटाहट ज़ाहिर करते हुए पूछा।

"अरे, एक बार में क्या बताऊँ अभी। निशा और तूने पहली मीटिंग में सब डिसाइड कर लिया था क्या? अभी तो मुलाक़ात शुरू हुई है। अभी तो और करेंगे, वो क्या कहते हैं..." शालू को वह शब्द याद ही नहीं आ रहा था।

"डेट!" निशा ने शालू की मदद करते हुए कहा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

“अम्मा, अफ़ेयर थोड़े चलाना है। शादी करनी है।”

“देख भाई, अगर तू चाहता है तो टाइम तो देना पड़ेगा। नए ज़माने की शादी है, नए तरीक़े से होगी। डेट भी होगी और वीकएंड पर घूमने भी जाएँगे।”

राघव और निशा दोनों ही शॉक में थे और ख़ुश भी थे। वह जून की दोपहर जैसा समय था, जो लंबी भी थी और बेचैन भी, जिसमें बारिश का इंतज़ार भी था।

इसके बाद तीनों निकलकर हज़रतगंज में पान की दुकान पर होते हुए वापस लौट गए।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अम्मा चली डेट पर

शालू ने कॉलेज छोड़ने के बाद से कभी प्ले नहीं देखा था। यूँ तो उसका मन करता था लेकिन शायद प्ले देखना उसको वह पुराने दिन याद दिलाता इसलिए उसने कभी ऐसी कोशिश भी नहीं की थी। हम सभी की ज़िंदगी में कुछ दिन ऐसे होते हैं जिनका सामना हम नहीं करना चाहते। पर वे दिन बार-बार घूम-घूम के सामने पड़ जाते हैं। ठीक उस रास्ते की तरह जो छोटा तो होता है लेकिन अक्सर वहाँ ट्रैफ़िक जाम रहता है लेकिन फिर भी हम उस एक उम्मीद में वह रास्ता ले लेते हैं कि शायद आज वहाँ ट्रैफ़िक न हो। हमारी सारी ज़िंदगी एक 'शायद' के इर्द-गिर्द ही घूमती है।

शालू ने जान-बूझकर प्ले के प्लान बनने पर मना नहीं किया था ताकि वह ख़ुद भी अपने बीते हुए कल से लड़ भी सके और निकल भी।

प्रोफ़ेसर चैटर्जी ने आज जींस और कुर्ता पहन रखा था। वह अपनी खुली हुई जीप में शालू के घर पहुँच गए। पहली मंज़िल से जब राघव ने यह देखा तो उसने शालू से कहा, "अम्मा, खुली जीप से आया है बंगाली, ज़रा सँभलकर जाना। ऐसा न हो उड़ा ही दे!"

शालू ने जो रिएक्शन दिया उसको दुनिया की किसी भी भाषा में शरमाना ही कहा जाएगा। हर माँ हँसते हुए चिड़िया जैसी लगती है।

उधर निशा आज अपने घर से निकल नहीं पाई थी। वह अपने पापा की बिज़नेस में मदद किया करती थी। इस वजह से उसको कई तरीक़े के ज़रूरी और बेढब काम आए हुए होते। राघव ने शालू को छत से ही बाय किया। मोहल्ले की कुछ आंटियों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा। उनकी आँखों में सवाल भी था और अपने ही मन से सोचे हुए तमाम जवाब। एक दो लोगों ने उसी दिन घोषणा कर दी कि शालू जी मोहल्ले का माहौल ख़राब कर रही हैं।

"अजीब टाइप के लोग आते हैं इनके यहाँ।"

"कोई शर्म नहीं है।"

शालू ने अपने बाल ट्रिम करवाए थे, हल्की रंग की लिपस्टिक, पाँचों उँगलियों में अलग-अलग रंग के नेलपेंट उसको बिलकुल अलग बना रहे थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

थिएटर में घुसने के बाद परदा खुलने से ठीक पहले शालू को अपना जिया हुआ हर एक पल याद आया। उसके दिमाग़ में सब कुछ स्लो मोशन में चल रहा था। बहुत से डायलॉग कान में बज रहे थे। वे डायलॉग जो सालों से ज़बान पर तो क्या ज़हन में भी नहीं आए।

एक बार तो उसका मन किया कि वह उठकर चली जाए। सामने प्ले होता देख शालू अब ख़ुद भी एक बीस साल की लड़की हो चुकी थी। उसके सामने चलता हुआ प्ले न चलकर मानो कुछ पुराना ही चल रहा था। और पुराना जो चल रहा था वह यादों के जैसा गड्डमड्ड था। वह सामने देख रही थी या याद कर रही थी। वह उठकर जाने ही वाली थी कि प्रोफ़ेसर चैटर्जी ने उसको रोक लिया। फिर भी वह आख़िर तक प्ले नहीं देख पाई। प्ले ख़त्म होने से थोड़ा पहले ही वह बाहर आ गई।

बाहर निकलकर जब वह सीढ़ियों पर बैठी तो कुछ देर में प्रोफ़ेसर चैटर्जी भी वहीं बैठ गए। बैठने के बाद प्रोफ़ेसर ने सिगरेट जलाई और बोले, "अच्छा नहीं था?"

"वह बात नहीं है, अच्छा था।"

"फिर अच्छा प्ले क्यों छोड़ दिया आपने?"

शालू ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। फिर उसे ध्यान आया कि प्रोफ़ेसर ने भी प्ले पहले ही छोड़ दिया। इस बीच प्ले छूट गया। धीरे-धीरे करके सभी देखने वाले वहाँ से निकल गए। कुछ देर बाद प्ले के एक्टर्स वहाँ से निकल रहे थे। उसमें से एक लड़की बोली, "तू लाइन भूल गया था।"

एक लड़के ने जवाब दिया, "तुझे देखकर।"

प्रोफ़ेसर और शालू ने पास से निकलते हुए लड़के-लड़कियों को मज़ाक़ करते हुए सुना। प्रोफ़ेसर ने पास से गुज़रते हुए एक्टर को अपने हाथ के इशारे से कहा, "Good show guys."

अब बस थिएटर बंद करने वाले कुछ लोग बचे थे। पास से निकलते हुए एक गार्ड ने दूर से आवाज़ दी, "उठिए साहब, बंद करना है।"

प्रोफ़ेसर साहब उठ खड़े हुए, शालू अब भी बैठी थी। प्रोफ़ेसर ने अपना हाथ शालू की तरफ़ बढ़ाया। शालू ने अपना हाथ आगे किया। जीप तक पहुँचने तक दोनों हाथ एक साथ रहे।

जीप में हवा लगने के बाद शालू ने ख़ुद को सँभालते हुए कहा, "सॉरी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"It's okay, होता है।"

फिर एक लंबी ख़ामोशी। शालू के परफ़्यूम की महक प्रोफ़ेसर के पास से आती हुई सिगरेट की महक में मिल रही थी।

"आपको एक अच्छी जगह लेकर चलते हैं, थोड़ा मूड बदल जाएगा आपका।"

शालू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अपने आसपास गुज़रते हुए लखनऊ को एक नई नज़र से देख रही थी। प्रोफ़ेसर साहब उसको शहर से दूर एक ढाबे पर ले गए। जीप से उतरने से पहले शालू ने कहा, "आप ढाबों के शौक़ीन लगते हैं। मुझे लगा था कि कहीं अच्छी जगह लेकर जाएँगे।"

"ठीक है फिर, आप ही कहीं ले चलिए।" प्रोफ़ेसर साहब ने चाभी शालू के हाथ में देते हुए कहा।

शालू ने चाभी ली और उनको पुराने लखनऊ में अपने फ़ेवरेट अड्डे पर लेकर गई। जहाँ पर उतरकर होटल के अंदर नहीं जाना था, बल्कि सारा ऑर्डर जीप में ही आ जा रहा था।

लखनऊ का खाना एक बार को ख़राब हो सकता है लेकिन पुराने लखनऊ का खाना ख़राब हो ऐसा तो संभव ही नहीं। प्रोफ़ेसर साहब कभी शहर के इस हिस्से में नहीं आए थे।

प्रोफ़ेसर साहब ने पूछा, "क्या ये रम भी देते हैं?"

"बिलकुल मँगा देंगे।"

शालू ने अपने पर्स से पैसे निकालकर लड़के की तरफ़ बढ़ाए और प्रोफ़ेसर साहब से ब्रांड पूछा।

"पुराने लखनऊ में हैं तो ओल्ड मॉन्क चख लेंगे।"

लड़का पाँच मिनट में छुपाकर एक बोतल और दो गिलास दे चुका था।

यूँ तो नहीं पीने वाले भी यदा-कदा वाइन पी लिया करते हैं। उस दिन तो शालू ने अपना इतना कुछ पुराना रिवाइज़ कर लिया था कि एक-दो गिलास ओल्ड मॉन्क पीने में कोई ख़ास दिक़्क़त नहीं हुई।

खाने और थोड़ा-सा पीने के बाद शालू का मूड अच्छा हो चुका था।

"तो आगे?" शालू ने पूछा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"जल्दी क्या है?" प्रोफ़ेसर ने सौंफ चबाकर सिगरेट पीते हुए जवाब दिया।

"मैंने आपसे पूछा नहीं, आप पढ़ाते क्या हैं?"

"कुछ ख़ास नहीं, ह्युमैनिटी। कमाल की बात है कि ह्युमैनिटी को पढ़ाया नहीं जा सकता। एक-दो किताबें लिखी हैं। कुछ लोग पढ़ते हैं। कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि किताब पढ़कर उनकी लाइफ़ बदल गई है।"

"कभी दीजिएगा अपनी किताब।"

"ज़रूर, अगली बार।"

"अगली बार कब फिर?"

"जब आप बोलें।"

"आपने बताया था न कि आप बिज़ी रहते हैं।"

"जल्द ही।"

"वैसे एक बात बताइए, आपने पहले कभी शादी नहीं की तो अब क्यों?"

"लंबी कहानी है, अगली बार सुनाते हैं।"

शालू और प्रोफ़ेसर की बातों का सिरा और उनकी जीप शहर के एक कोने से दूसरे कोने तक भटक रहे थे। रात 12 बजे घर पर छोड़ने से पहले प्रोफ़ेसर साहब ने शालू की तरफ़ हाथ बढ़ाया। शालू ने अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाया और बोली, "अगली बार।"

प्रोफ़ेसर ने हँसकर अपना हाथ और मुस्कुराहट दोनों ही वापस खींच लिया।

राघव बेचैनी से छत पर टहल रहा था। उसने प्रोफ़ेसर का हाथ बढ़ाना भी देखा और शालू का हाथ न बढ़ाना भी। उसको तसल्ली हुई भी और नहीं भी।

शालू की आदत थी कि सोने से पहले राघव के कमरे में पानी से भरा हुआ जग रखा करती थी। राघव ने शालू के कमरे में वह जग रखा हुआ था।

घर में घुसने पर शालू ने पूछा, "अभी तक सोया नहीं?"

"अभी तो बस एक ही बजा है। अभी तक तो किसी दिन नहीं सोता। ख़ैर प्ले कैसा था?"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

“ठीक था।” शालू ने जवाब दिया फिर कुछ सोचकर बोली, “अच्छा था प्ले।”

राघव शाम का हाल पूछने के लिए बेताब था लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि बात शुरू करे तो कहाँ से करे। उसकी हिचकिचाहट शालू ने पढ़ ली।

“आदमी बुरा नहीं बंगाली।”

“बुरा नहीं है मतलब, अच्छा है कि नहीं है?”

“अच्छे का पता इतनी जल्दी कहाँ चलता है! बातों से इंटेलीजेंट लगता है, लेकिन बातें ज़्यादा करता है।”

शालू ब्रश करके अपने कमरे में सोने गई। इधर राघव अपने कमरे में निशा से फ़ोन पर बातें कर रहा था। वह शालू के पास गया और उसके सिर को सहलाते हुए बोला, “अम्मा, कोई जल्दी और ज़बरदस्ती नहीं है।”

शालू ने आँखें बंद की और कोई जवाब नहीं दिया। राघव के जाने के बाद उसके सामने वे दिन खुलने लगे जिन दिनों को वह भूलकर आगे बढ़ चुकी थी। माँ होना और अकेली माँ होना आधी दुनिया का भार उठाने जैसा है। शालू किस बात से परेशान थी यह बात किसी को भी ज़ाहिर नहीं थी।

“शगुफ़्ता लोग भी टूटे हुए होते हैं अंदर से

बहुत रोते हैं वो जिनको लतीफ़ें याद रहती हैं”

शायर [3] ने जब यह लिखा होगा तो शालू जैसे न जाने कितने लोग इस शे’र में छुप गए होंगे। अच्छे शेर यही करते हैं, वह अपने-आप में थोड़ी-सी जगह दे देते हैं जो पूरी दुनिया मिलकर भी नहीं दे पाती।

वह कोशिश करके भी सो नहीं पा रही थी। उसको प्रोफ़ेसर का हाथ बढ़ाना भी याद रहा था। कुमार आलोक की याद जो सालों से कहीं दूर ठिठकी हुई खड़ी थी उस दिन शालू के बिस्तर पर आकर पसर गई थी। याद जब अपने-आप को बिस्तर पर फैला लेती है तो सबसे पहले नींद से लड़ाई होती है।

वह ख़ुद इस बात से हैरान थी कि आख़िर ऐसा हो क्यों हो रहा है। इस उधेड़बुन में उसने वह काम किया जो उसने सालों से नहीं किया था। उसने अपना दरवाज़ा अंदर से बंद किया और वह संदूक़ खोला।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उन तमाम चिट्ठियों को पढ़ते हुए उसको वह दिन याद आए जब पहली बार उन चिट्ठियों को उसने हाथ में लिया था। हर एक चिट्ठी के बाद वह अपने-आप को रोकने की नाकाम कोशिश करने लगी लेकिन रोक नहीं पाई।

नुक्कड़ नाटक करते हुए उसकी कुछ फ़ोटो थी। कुछ फ़ोटो उसके हॉस्टल की थी। एक फ़ोटो में बहुत से लोग साथ थे, वह इकलौती फ़ोटो थी जिसमें वह और कुमार आलोक एक साथ थे। तमाम फ़ोटो से गुज़रते हुए, उसको इंडिया टुडे का वह एडिशन मिला जिसमें जलते हुए एक लड़के की फ़ोटो थी। उस फ़ोटो को देखते ही उसने संदूक़ बंद कर दिया। संदूक़ बंद होते ही वह सब कुछ खुल गया जो इतने सालों से बंद था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

7 अगस्त 1990

तत्कालीन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंडल कमीशन [4] की रिपोर्ट लागू करने की घोषणा की।

एक ख़बर ने कैसे हिंदुस्तान के युवाओं और शालू अवस्थी की तक़दीर बदल दी उसके लिए कुछ साल पीछे उन ख़बरों पर जाना होगा।

9 अगस्त 1990 : मंडल कमीशन की सिफ़ारिशों को लागू करने को लेकर विश्वनाथ प्रताप सिंह से मतभेद के बाद उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने इस्तीफ़ा दे दिया।

10 अगस्त 1990 : आयोग की सिफ़ारिशों के तहत सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था करने के ख़िलाफ़ देश भर में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए।

13 अगस्त, 1990 को आयोग की सिफ़ारिशों के आधार पर पिछड़े वर्गों को सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण देने की अधिसूचना जारी हुई। आरक्षण को लेकर देश भर में आंदोलन हुए। इसके पक्ष-विपक्ष की ताक़तें सड़कों पर उतर आईं। कई छात्रों ने आत्मदाह की कोशिशें की। उसी दौरान भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में भाजपा का रथ देशव्यापी दौरे पर निकल पड़ा। बिहार के समस्तीपुर में उनकी गिरफ़्तारी के बाद भाजपा ने केंद्र सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया और वीपी सिंह की सरकार गिर गई। आरक्षण का मामला अदालत पहुँचा। भारी अंतर्विरोध के बीच 16 नवंबर, 1992 को सुप्रीम कोर्ट ने मंडल कमीशन को लागू करने के फ़ैसले को सही ठहराया। (साभार- बीबीसी)

8 अगस्त 1990 : आठ अगस्त के अख़बार का रंग वैसा था। जिसकी जैसी जाति थी उसको ख़बर उसी रंग की दिखाई दे रही थी। ख़बर आठ अगस्त की सुबह एक बदले हुए हिंदुस्तान की बदली हुई सुबह थी।

ऐसे कई दोस्त जो सालों से एक ही थाली में खाना खाते थे, उनकी यारियाँ एक झटके में टूट गईं। वे दोस्त जो साथ बैठते थे, क्लास में उनकी डेस्क अलग-अलग हो गई। जिनको रिज़र्वेशन से फ़ायदा मिलने वाला था वे कुछ बोल नहीं रहे थे। जिनकी सीट कम हुई थी उनके पास इतनी बातें थी कि ख़त्म नहीं हो रही थीं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

देश भर की तमाम जगहों से और ख़ासकर के ऐसे सैकड़ों बच्चे जो यूपीएससी का सपना लेकर दिल्ली आते थे, उनको ऐसा लग रहा था कि उनके सपनों की ज़मीन पर बेमौसम बरसात हो गई। यह बेचैनी न केवल बच्चों में थी बल्कि जनरल कैटेगरी के तमाम परिवारों में थी।

"अब इस देश में रहकर क्या करना है। विदेश में ही मौक़े हैं।"

"इतने कम नंबर वाले सेलेक्ट हो जाएँगे।"

"मेरिट की तो कोई वैल्यू ही नहीं है।"

"क्रिकेट टीम में भी रिज़र्वेशन होना चाहिए।"

"रिज़र्वेशन वाले डॉक्टर से इलाज कराकर मरना है क्या?"

ऐसी न जाने कितनी हज़ार बातें माहौल में तैर रही थीं और तैर-तैरकर माहौल को गर्म कर रही थीं।

शालू आठ अगस्त की सुबह ही कॉलेज पहुँची। कॉलेज में अजीब-सी शांति थी, अजीब-सी खुसफुसाहट। कुमार आलोक को रिज़र्वेशन मिलना था। जब से मंडल कमीशन की ख़बर आई थी वह अपने कमरे से नहीं निकला था।

वह ख़ुश था या नहीं था कुछ कहना मुश्किल है लेकिन कॉलेज में आने के बाद से पहली बार वह अपने नाम, अपनी पहचान को लेकर शर्मिंदा था। वह शालू के आने का इंतज़ार कर रहा था। उसको पता था कि उसके और शालू के बीच जो कुछ भी है वह हमेशा के लिए बदल गया था। उस वक़्त अगर आज का मीडिया होता तो लाशें बिछ जातीं।

जिनको रिज़र्वेशन नहीं मिला था उन सभी ने तुरंत ही प्लानिंग शुरू कर दी थी। गाँधी चौक [5] पर लोग धरने पर बैठना शुरू हो गए थे, पोस्टर बनना शुरू हो गए थे। शालू के थिएटर ग्रुप को जल्द-से-जल्द इस मुद्दे पर नुक्कड़ नाटक बनाने को बोल दिया गया था।

उस समय लड़कियों के लिए एक ख़ास 'यू स्पेशल' बस चला करती थी। उस बस के शीशे तोड़ दिए गए थे। गाँधी चौक पर सभी बच्चे बेचैन खड़े थे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आख़िर करना क्या है। अभी तक किसी को यक़ीन नहीं था कि यह सही में हो गया है।

जिसको रिज़र्वेशन मिला था उनमें से बहुत लोगों ने अपने-आप को कमरों में क़ैद कर लिया था। कुछ लोग आनन-फानन में घर निकल गए या

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

लोकल गार्जियन के यहाँ चले गए थे।

तय यह हुआ कि धरने के लिए जो जगह निश्चित की गई है, उसको क्रांति चौक [6] बोला जाएगा।

आठ तारीख़ हिंदुस्तान के इतिहास में आज़ादी के बाद से सबसे लंबा दिन था। उस पूरे दिन तमाम कोशिशों के बाद भी शालू कुमार आलोक से मिल नहीं पाई थी।

9 अगस्त 1990 : मंडल कमीशन की सिफ़ारिशों को लागू करने को लेकर विश्वनाथ प्रताप सिंह से मतभेद के बाद उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने इस्तीफ़ा दे दिया।

कॉलेज में एक ही दिन में अच्छी-ख़ासी तैयारियाँ शुरू हो चुकी थीं। पूरा कॉलेज दो खेमों में बँट चुका था। हॉस्टल में इक्का-दुक्का हाथापाई की ख़बर भी आने लगी थी। कुमार आलोक के कमरे के बाहर आकर भी लड़कों ने लात मारी और तमाम गालियाँ दीं। साथ में यह भी जोड़ा, "बहुत लॉजिक पर बात करके डिबेट करता है न, अब बोल!"

कुमार आलोक ने कमरा नहीं खोला। उस रात वह कुछ बिस्किट खाकर और पानी पीकर सो गया। वह एक उदास समय था जिसके हर एक पल में हताशा भरी हुई थी।

10 अगस्त 1990 : आयोग की सिफ़ारिशों के तहत सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था करने के ख़िलाफ़ देशव्यापी विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए।

"MA, BA पास करेंगे, वी.पी. सिंह को बाँस करेंगे।"

दस अगस्त की सुबह क्रांति चौक पर यह नारा गूँज रहा था। इस नारे की चिल्लाहट इतनी तेज़ होती कि शायद दिल्ली में ही बैठे वी.पी. सिंह को सुनाई पड़ जाए। दिल्ली यूनिवर्सिटी के तमाम कॉलेज के लोग आकर धरने पर बैठ जाते। हर हाथ में एक पोस्टर होता।

रामजस, किरोड़ीमल, हिंदू कॉलेज से लेकर जुबली हॉल और ग्वायर हॉल तक के गलियारों में कई नारे आवाज़ और बेचैनी के अलग-अलग उतार और चढ़ाव के साथ सुनाई पड़ना शुरू हो गए थे।

"मंडल कमीशन हाय-हाय।"

"मंडल कमीशन वापस जाओ।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"वीपी सिंह हाय-हाय।"

"मंडल कमीशन डाउन-डाउन।"

अपर कास्ट के अधिकतर छात्रों को दो ही दिन में ऐसा लगा कि आगे कोई गुंजाइश नहीं और इसलिए अब किसी के भी आगे पढ़ने के कोई मायने नहीं हैं।

स्टूडेंट्स ने क्लास का बहिष्कार कर दिया था। ज़्यादातर कॉलेज से स्टूडेंट्स के ग्रुप्स निकलते। क्रांति चौक पर सड़क का घेराव करते। सड़क पर आवाजाही बंद करके पूरा इलाक़ा बंद कर देते। तैयारी इस ज़ोर पर थी कि रोज़ शाम को मीडिया को दिन भर के रिपोर्ट छात्र भेजा करते।

यूँ तो कॉलेज में पुलिस भी मुस्तैद थी और धारा 144 भी लगी हुई थी। छात्रों और पुलिस में मुठभेड़ अब रोज़ की बात थी। स्टूडेंट्स पत्थर फेंकते और पुलिस आँसू गैस के गोलों के साथ लाठियाँ भाँजती।

उधर शालू का पूरा थिएटर गैंग दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में जाकर नुक्कड़ नाटक कर रहा था। शुरू में तो शालू को मंडल इतना समझ नहीं आया था लेकिन जिस तेज़ी से दिल्ली और देश का माहौल गर्मा रहा था, शालू का स्टैंड अब बिलकुल क्लियर था।

एक दिन ऐसे ही जब वह दिल्ली की एक पॉश कॉलोनी में अपने ग्रुप के साथ नुक्कड़ नाटक कर थी तभी वहाँ कई पुलिस वाले आ गए। शालू ने भागने की कोशिश नहीं की। ग्राउंड पर भी पुलिस वालों का स्टूडेंट्स को पूरा सपोर्ट मिल रहा था। जो पुलिस वाला आया उसने न केवल ख़ुद कुछ रुपये दिए बल्कि पूरी कॉलोनी से पैसे दिलवाए। उस समय आंदोलन चलाने के लिए बहुत पैसों की ज़रूरत थी। केवल उस दिन अकेले उस कॉलोनी से 1200 रुपये के आसपास इकट्ठे हो गए थे, जोकि उस समय के हिसाब से बहुत थे। एक साथ इतने पैसे लाकर शालू पूरे आंदोलन वाले स्टूडेंट्स के बीच में अच्छी-ख़ासी पॉपुलर हो गई थी। कॉलेज लौटे हुए उसको चार दिन हो गए थे। वह अब तक भी कुमार आलोक से मिल नहीं पाई थी।

जिसको जहाँ से दस रुपये भी मिल रहे थे, वह आंदोलन में डाल रहा था। सब स्टूडेंट्स को ऐसा लग रहा था कि शायद आंदोलन की वजह से मंडल कमीशन की सिफ़ारिशें लागू नहीं हो पाएँगी।

कई स्टूडेंट सड़क पर लेटकर चंदा इकट्ठा करते। एक दिन शालू के थिएटर ग्रुप के एक लड़के ने जब सड़क पर लेटकर चंदा माँगा तो एक कार

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वाले ने कार में बैठाकर कुछ पैसे तो दिए ही साथ में बम बनाने की पूरी विधि भी बता दी।

पूरे देश में बम फट चुका था। जैसे-जैसे समय बीत रहा था, आंदोलन अपने हिंसक रूप में आता जा रहा था। स्टूडेंट्स की भीड़ पुलिस पर अक्सर पेट्रोल बम और पत्थर बरसाती। हालाँकि पुलिस का एक अनकहा सपोर्ट था लेकिन फिर भी नुक़सान तो हो ही रहा था।

देश अब कभी न जुड़ने के लिए टुकड़ों में बँट चुका थ। यह एक नया बँटवारा था जिसमें लकीर सरहद पर नहीं मन में खिंची थी। सपनों के मर जाने से भी घातक था मनोबल का टूट जाना।

कुमार आलोक ने सोच लिया था चाहे जो भी हो वह शालू से मिलकर उसको इस फ़ैसले के बारे में समझाकर रहेगा। शालू से मिलने जब वह क्रांति चौक पहुँचा तो शालू ज़ोर-ज़ोर से नारे लग रही थी। शालू ने आलोक को देखा और ठीक एक पल को ठिठकी। सारा शोर एकदम से शांत हो गया।

उन दोनों का देखना यह बात बताने के लिए काफ़ी था कि दोनों ही एक-दूसरे से मिलना चाहते थे। शालू के लिए बीच में निकलना मुश्किल था लेकिन कुमार आलोक ने हर हाल में आज मिलने का फ़ैसला कर लिया था।

किसी तरीक़े से बचते-बचाते शालू कुमार आलोक के पास पहुँची।

“आपका यहाँ आना ठीक नहीं आलोक!”

“हमें पता है लेकिन हमें आपसे कुछ बात करनी थी।”

“हमें भी आपसे बात करनी थी।”

अभी शालू और आलोक की बातचीत शुरू ही हुई थी। इस बीच ही उनकी क्लास का एक लड़का सामने आ गया और कुमार आलोक को भला-बुरा बोलने लगा। कुमार आलोक, शालू के वहाँ होने का लिहाज़ करता रहा। कुछ ही सेकेंड में वह लड़का गाली-गलौच पर उतर आया। यहाँ तक कि उसने कुमार आलोक पर थूक दिया। शालू ने उस लड़के को एक लप्पड़ लगाया। वह लड़का जाते हुए बोलता गया।

“कितनी दोगली हो तुम! इधर आंदोलन का नाटक हमारे साथ और बैठी हो इसके साथ! इसका तो यूपीएससी में हो जाएगा। फिर कर लेना शादी।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

यह सुनकर शालू अपने-आप को कंट्रोल नहीं कर पाई। वह उस लड़के के पीछे भागी लेकिन कुमार आलोक ने उसको रोक लिया।

इस बीच शालू को क्रांति चौक पर बुलाया जाने लगा।

“तुम समझो ये सही हुआ है।”

“आलोक!”

शालू कभी कुमार आलोक को आलोक नहीं बुलाती थी। या तो आप कहती थी या कुमार आलोक जी। उस ‘आलोक’ में पीड़ा भी थी और गुस्सा भी।

“आलोक हमें नहीं समझाओ। हमें समझ में आ गया है क्या सही है और क्या ग़लत।”

यह कहकर शालू वहाँ से उठकर जाने लगी।

“हमें देर हो रही है।”

“तुम बैठो, तब तुम्हें समझाएँ!”

शालू को मंडल कमीशन का विरोध करने जाना था। शालू और कुमार आलोक के बीच न जाने कितनी बातें बची रह गईं। इतनी टुच्ची बातें जैसे कि ‘अपना ख़याल रखना’ भी बोलने का समय नहीं मिला।

अगले एक महीने ऐसी अफ़रा-तफ़री रही कि शालू और कुमार आलोक अगर कभी सामने पड़ भी जाते तो उनमें कोई बात नहीं होती। कुमार आलोक का ऐसे माहौल में एक भी दिन कॉलेज में रहना मुहाल हो गया था।

इस बीच लखनऊ, पटना, जयपुर जैसे शहरों में आए दिन प्रदर्शन होने लगे। हरियाणा में ऐसे प्रदर्शनों के दौरान कई बार हिंसा भी हुई। दिल्ली में कई धरने हुए, घेराव हुए, बसों के शीशे तोड़े गए। ये सब देखते हुए बीजेपी ने भी अपना सुर बदला। उन्होंने आरक्षण का फ़ायदा आर्थिक रूप से पिछड़ों को देंगे की माँग उठा दी। वहीं कांग्रेस ने वी. पी. सरकार पर देश में जातीय हिंसा बढ़ाने का आरोप लगाया कि पहले ब्रिटिशर्स ने हमें धर्म और जाति के नाम पर बाँटने की कोशिश की और अब राजा साहब (वी.पी. सिंह को इस नाम से भी जाना जाता था) देश को बाँटने की कोशिश कर रहे हैं।

संसद में इस पर बहस होने लगी। इस पर राजीव गाँधी ने बिना पानी पिए चार घंटे लंबा भाषण दिया। जिसमें उन्होंने उदाहरण देते हुए समझाया कि अगर कोई सुप्रीम कोर्ट का जज है जो बाद में राजनीति में आ जाता है

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तो क्या उसके बच्चों को हमारी मदद की (आरक्षण की) ज़रूरत है? क्या वह परिवार सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़ा हुआ है? इन सभी बातों पर गंभीरता से विचार होना चाहिए।

संसद में तमाम तरह के सवाल चल रहे थे, मसलन किसी ने जब पूछा कि, "इसमें कोई शक नहीं था कि कई सारी जातियाँ सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ी हुई थीं लेकिन क्या केवल जाति के आधार पर आरक्षण देने से अगले 40-50 सालों में यह खाई और गहरी नहीं होगी? जबकि रिज़र्वेशन का काम उस खाई को पाटने का था।"

इसके जवाब में एक शोर हुआ। ऐसा शोर जिसमें सारे जवाब मिलकर अपना रास्ता भटक गए। जिस समय संसद में बहस चल रही थी उसी समय ऐसे ही न जाने कितने सवाल उस समय देशभर में लोग भी उठा रहे थे।

जब ये सब बहस संसद में चल रही थी उसी दौरान देशबंधु कॉलेज का एक स्टूडेंट राजीव गोस्वामी जो कि 9 दिन से धरने पर बैठा था, उसने धरने के दौरान ही घोषणा कर दी कि मैं मंडल के विरोध में आत्मदाह (Self-immolation) कर लूँगा तब जाकर शायद ये सरकार आवाज़ सुने। वह मंडल कमीशन हाय-हाय और वी.पी. सिंह हाय-हाय के नारे लगाता हुआ आगे आया और अपने ऊपर तेल छिड़क लिया। ये कभी कोई नहीं जान पाया कि उसने ख़ुद आग लगाई थी या किसी ने पीछे से आग लगा दी थी। जो हुआ उसको रिवाइंड करके सही नहीं किया जा सकता था। यह पल हिंदुस्तान के इतिहास का एक न मिटने वाला पन्ना होकर दर्ज हो गया।

जलते हुए राजीव गोस्वामी की तस्वीर इस देश में मंडल कमीशन के विरोध की तस्वीर के रूप में इतिहास में दर्ज हो गई। निराशा इतनी थी कि देश भर में क़रीब 80 छात्रों ने आग लगाकर अपनी जान दे दी। हालाँकि इस आग ने पूरे देश में हो रहे आंदोलन को अपनी पटरी से उतार दिया। राजीव गोस्वामी से मिलने जब तत्कालीन बीजेपी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी एम्स अस्पताल पहुँचे तो उन्हें अपर कास्ट के नौजवानों के तीखे विरोध का सामना करना पड़ा। आडवाणी ने वक़्त की नज़ाकत को भाँपा और उसके बाद मंडल के जवाब में कमंडल की राजनीति तेज़ कर दी। (रिपोर्ट)

उधर लाख कोशिश के बाद भी कुमार आलोक और शालू जब आपस में मिल नहीं पा रहे थे तो आलोक ने एक नई चिट्ठी के साथ पुरानी सभी चिट्ठियाँ शालू के कमरे में भिजवा दीं। हम लापता हुए लोग हैं, हम अपने असली पते पर कभी नहीं पहुँच पाते।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आख़िरी चिट्ठी

"इब्नेबतूती,
पता नहीं अब आपको इस नाम से बुलाने का हक़ है भी या नहीं।
हमारे बीच अब जितनी भी दूरी हो, एक बार मिलने की गुंजाइश भर की जगह तो होगी ही।
कुमार आलोक"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुमार आलोक ने चिट्ठी में अपने नाम के आगे 'आपका' नहीं लिखा था। न ही शालू के नाम के आगे 'मेरी इब्नेबतूती' लिखा था।

उधर मंडल आंदोलन धीरे-धीरे मरने लगा। क्योंकि कमंडल ज़ोर पकड़ रहा था। और अब जो स्टूडेंट्स कुछ दिन पहले 'मंडल कमीशन हाय-हाय' के नारे लगा रहे थे उसकी जगह 'जय श्री राम' के नारों ने ले ली थी। वी.पी. सिंह की सरकार से भारतीय जनता पार्टी ने अपना समर्थन वापस ले लिया था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

2015

शालू के हाथ में कुमार आलोक की यही आख़िरी चिट्ठी थी। उसने लाइट जलाकर घड़ी देखी तो सुबह के छह बज चुके थे। वह सो रही थी या सपना देख रही थी उसको ख़ुद समझ नहीं आ रहा था। बग़ल वाले कमरे में राघव सो रहा था। वह जाकर उसके पास कुछ देर बैठी। उसके सिर पर हाथ फेरा। सामने कैलेंडर पर दिन देखे। होंठ बुदबुदाए, उसने दिन जोड़े। राघव के जाने में अब क़रीब 75 दिन बचे थे। वह छत पर गई। कई दिनों बाद इतनी सुबह उठी थी। कई दिन बाद जब सुबह उठो तो दुनिया नई लगती है। ऐसी दुनिया जो ठीक अभी बनकर तैयार हुई हो। चिड़ियों की कहीं दूर से आ रही आवाज़, सूरज के आसमान से आने की एक सौंधी महक, पड़ोस से आती बर्तनों की आवाज़, चाय की पत्ती की महक, कहीं सिलबट्टे पर कूटे जा रहे अदरक की ख़ुशबू- एक सुबह कितनी सारी चीज़ों से मिलकर बनी होती है।

उसने मोबाइल खोलकर देखा तो प्रोफ़ेसर का रात तीन बजे का एक मैसेज पड़ा हुआ था। प्रोफ़ेसर ने ऐसा बताया था कि वह देर से सोता है।

मैसेज में लिखा था, “अगर आप जगी हों तो क्या हम बात कर सकते हैं?”

शालू ने अपने मन को तसल्ली दी कि बढ़िया हुआ कि रात में मोबाइल नहीं देखा। सुबह उठने के बाद बहुत देर तक वह किसी से बात नहीं करती थी।

सुबह अपने तरीक़े से आवाज़ और ख़ुशबू करके दुनिया में फैल रही थी। जब शालू के चहेरे पर सूरज की पहली किरण पड़ी तब उसे अपनी अधूरी नींद की याद आई।

तभी अख़बार वाले ने अख़बार को गोल मोड़कर रोज़ की तरह फेंका। शालू को छत पर देखकर उसने दूर से नमस्ते किया। कहते हैं कि हर दिन में कुछ-न-कुछ नया होता है। बिल लेने के अलावा शालू और अख़बार वाले ने एक-दूसरे की कभी शक्ल नहीं देखी थी। उस दिन शालू ने पहली बार देखा कि अख़बार वाले के हाथ में पट्टी बँधी है।

सबसे जल्दी आदमी ख़ुद से ऊब जाता है। शालू ने कल रात से अब तक तो पूरी ज़िंदगी ही रिवाइज़ कर ली थी। वह ख़ुद से ऊब चुकी थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसने ऊब मिटाने के लिए चाय बनाई। हम अपने बीते हुए कल को 'रात गई बात गई' की तरह मिटाने की लाख कोशिश करके अपने मन पर उसको और गाढ़ा ही करते जाते हैं।

चाय पीकर भी जब उसकी ऊब नहीं मिटी तो उसने निशा को मैसेज करके पूछा कि वह जगी है। निशा अक्सर ही सुबह जल्दी उठ जाती थी।

निशा जगी हुई थी। उसको लगा कि इतनी सुबह मैसेज आया हुआ है कोई बात होगी उसने तुरंत ही कॉल लगा लिया।

"आंटी सब ठीक है न?"

"हाँ और क्या सब मस्त है।" शालू की फ़ोन पर की आवाज़ से पता लगाना मुश्किल था कि सब ठीक नहीं है।

"क्या हुआ फिर!"

"सब अच्छा है। मैं सोच रही थी कि जल्दी उठ गई तो लालबाग़ कचौरी खाने चलते हैं।"

तीनों को कचौरी बहुत पसंद थी। निशा कुछ ही देर में शालू के घर पर अपनी स्कूटी के साथ थी। राघव अपने कुछ-एक पेपर वर्क करके बहुत देर में सोया था।

जब वह नीचे उतरकर आ गई तब निशा ने पूछा, "राघव नहीं चलेगा?"

"उठा ही नहीं। उसके लिए पैक करा लेंगे।"

निशा को समझ नहीं आ रहा था कि प्रोफ़ेसर साहब की बात शुरू करे तो कहाँ से करे। शालू भी अपनी तरफ़ से कोई ऐसी पहल कर नहीं रही थी। निशा से भी रहा नहीं गया।

"आंटी प्ले कैसा था?"

"ठीक था।"

"खाना खाने आप कहाँ गए थे?"

"पुराने लखनऊ अपने अड्डे पर।"

"अच्छा।" निशा के पास अब सवाल नहीं बचे थे। शालू प्रोफ़ेसर की किसी भी बात पर आ नहीं रही थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"फिर सब सही रहा कल?" निशा ने अपनी तरफ़ से आख़िरी कोशिश करते हुए कहा।

"जो पूछना है पूछ ले, इतना घूमा-फिरा क्यों रही है?" शालू ने निशा को कुछ तसल्ली देते कहा।

"नहीं आंटी, मैं तो बस ये पूछ रही थी कि प्रोफ़ेसर ठीक हैं कि एवें ही हैं।" निशा ने आख़िर डरते-डरते सवाल पूछ ही लिया।

"अरे, हमारी तो प्लानिंग हुई थी न कि कुछ करना थोड़े है। बस राघव को तसल्ली रहे इसलिए मिल ली।"

शालू के इस जवाब से निशा बहुत ही अपसेट हुई।

"लेकिन फिर भी आंटी अगर वह अच्छे हैं तो प्रॉब्लम क्या है!"

"प्रॉब्लम मैं ख़ुद हूँ। वह तो बढ़िया आदमी है।"

निशा की चाल अब पूरी तरीक़े से उल्टी पड़ चुकी थी। उसको लग रहा था कि आदमी सही मिल जाएगा तो शालू मान ही जाएगी।

कचौरी वाले के यहाँ लंबी लाइन की परवाह न करते हुए, शालू और निशा ने सबसे बाद में जाकर सबसे पहले कचौरी पैक करा ली। पीछे कुछ लोग ग़ुस्सा होते ही रह गए। वह बेचारे कर भी क्या सकते थे! कचौरी वाले भइया पर ही चिल्ला सकते थे, "कोई नंबर चल भी रहा है यहाँ!"

शालू और निशा कचौरी वाले के पुराने ग्राहक थे। भइया ने भी कह दिया, "अगर इंतज़ार न हो रहा हो तो जाओ पड़ोस वाले से ले लो। इनका नंबर पहले से लगा हुआ था।"

वह बेचारा बुदबुदाता ही रह गया- "कोई सिस्टम ही नहीं है।"

लेकिन वह कुछ कर नहीं सकता था।

इधर जब शालू और निशा घर पहुँचे तब तक भी राघव सो ही रहा था।

"ज़रा लात मार इसको। न उठे तो पानी डाल देना।" शालू यह बोलते हुए किचेन में चाय बनाने चली गई।

निशा मन-ही-मन परेशान थी क्योंकि उसको लग रहा था कि प्रोफ़ेसर बढ़िया आदमी मिल गया था। राघव भी सही से जा पाता और शालू का अकेलापन भी बँट जाता। निशा यह समझ नहीं पा रही थी कि राघव को यह बात कैसे बोले।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

निशा के उठाने के बाद भी राघव उठ नहीं रहा था। इतने में किचेन से शालू की आवाज़ आई।

"अबे, क्या करने लगे दोनों!"

निशा को लगा कि उसको अंदर आए हुए ज़्यादा समय हो गया है। वह झटके से बाहर आई।

"आंटी, उठ ही नहीं रहा।"

"बोला ना, फेंक दे पानी! कचौरी ठंडी हो जाएगी।"

राघव को बिस्तर पर अलसाते हुए जब मामला सीरियस होता दिखा तब जाकर वह उठा।

कचौरी खाते हुए किसी ने भी एक-दूसरे को बातों से डिस्टर्ब नहीं किया। कोई और बात शुरू करता और बात बंगाली तक जाती। उससे पहले ही शालू ने कहा, "देखो तुम दोनों जानना चाहते हो कि बंगाली ठीक है तो बात आगे बढ़ाते हैं। यही न?"

राघव यह सुनकर बहुत ख़ुश था लेकिन निशा को तो पता ही था कि क्या आने वाला है। शालू उठकर अपने कमरे से एक फ़ाइल लेकर आई।

"मुझे मालूम है कि राघव ऐसे जाएगा नहीं। तुम लोगों के कहने पर मैं बंगाली से मिल ली। वह आदमी बढ़िया है लेकिन उसके साथ आगे कोई बात नहीं हो सकती।"

प्रोफ़ेसर साहब इस कहानी के साइड हीरो बनकर रह गए। साइड हीरो वह होता है जिसका टाइम और टाइमिंग सही होता तो वह कहानी का हीरो होता। हम सभी किसी एक कहानी में हीरो तो तमाम कहानियों के साइड हीरो हैं।

"अम्मा यार, तुमको पता है न तुम क्या बोल रही हो?" राघव ने चाय अधूरी ही छोड़ दी।

"हाँ, अब मेरी बात सुनो।"

शालू ने कॉलेज की तमाम फ़ोटो सामने रख दी। फ़ोटो में एक डिबेट की फ़ोटो थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

दिसंबर, 1990

आंदोलन अब ख़त्म हो चुका था। हिंदुस्तान अब हमेशा के लिए बदल चुका था। इस आंदोलन ने समाज के सच की क़लई खोलकर रख दी थी। आरक्षण के पक्ष और विपक्ष दोनों में तर्क बराबर हैं। लेकिन जब बात आरक्षण की आती है तो बात तर्क की न होकर, त्वरा की हो जाती है। जो जितना तेज़ बोल सकता है उसका झूठ उतना ही बड़ा सच लगता है। सच लगना सच होने से बड़ी बात है।

कुमार आलोक ने अपने-आप को बाहर की दुनिया से लगभग काट लिया था। इस बीच कॉलेज में एक डिबेट का आयोजन हुआ।

इस बार टॉपिक था आरक्षण। जान-बूझकर यह टॉपिक रखा गया था, ताकि जिनको आरक्षण नहीं मिला है वे उन बच्चों को ज़लील कर पाएँ जिनको आरक्षण मिला।

आरक्षण के पक्ष में बोलने के लिए सिर्फ़ एक नाम आया वह नाम कुमार आलोक का था। आरक्षण के विपक्ष में बोलने के लिए तमाम नॉमिनेशन थे। चूँकि यह मसला इमोशन से जुड़ा था। देश भर में क़रीब 80 स्टूडेंट आत्मदाह कर चुके थे।

डिबेट में कोई लड़ाई-झगड़ा न हो इसलिए कॉलेज के कुछ प्रोफ़ेसर भी डिबेट में थे। हाल खचाखच भरा था।

चूँकि आरक्षण के पक्ष में केवल कुमार आलोक का नाम था इसलिए तय यह हुआ कि वह सबसे बाद में बोलने के लिए आएगा।

मृत्युंजय सिंह को डिबेट में बोलने के लिए सबसे पहले बुलाया गया। उसने अपनी बात शुरू करने से पहले एक नारा दोहराया जो उस दौर में आंदोलन के दौरान ख़ूब चला था। “वी.पी. सिंह की अंतिम इच्छा, बामन क्षत्रिय माँगे भिक्षा।”

इस बात पर हाल में ताली बजती रही। उसके बाद उसने आरक्षण के विरोध में यही क़िस्सा दोहराया कि “हमारे माँ-बाप ने कभी हमें ये नहीं बताया कि हमारी जाति क्या है। हमने मंडल कमीशन के पहले कभी नहीं सोचा कि हमारी जाति क्या है।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मृत्युंजय सिंह के बाद अमृता सिंह नाम की लड़की का नंबर आया। वह अपने हाथ में एक कार्ड बोर्ड लेकर आई थी। "हमें रिज़र्वेशन वाला बेकार पति नहीं चाहिए।"

वह कार्ड बोर्ड आंदोलन में भी यूज़ हुआ था। अमृता सिंह के कार्ड बोर्ड दिखाते ही तालियाँ बजने लगी। इसके बाद अमृता सिंह ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "यही रहा तो मुझे तो अमेरिका जाना पड़ेगा। यूँ ही रिज़र्वेशन मिला तो हमारे लिए तो इस देश में कुछ बचेगा ही नहीं और भविष्य में ब्रेन ड्रेन हो जाएगा।"

इसके बाद अभय त्रिपाठी ने अपनी बात को आगे रखा, अभय ने सधी हुई बात कही कि क्रीमीलेयर के आधार पर आरक्षण होना चाहिए।

हर कोई अपनी बात को ज़ोर से चिल्लाकर रख रहा था। अगले स्टूडेंट बृजेश चौहान ने तो हवाला दिया कि "हमारे 80 भाइयों ने अपनी प्राणों की आहुति दी है। ये आहुति व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। भगत सिंह ने देश के लिए बंदूक़ उठाई थी और आज भी देश के लिए बंदूक़ उठाने की ज़रूरत है। मेरा बस चले तो मैं तो आज ही बंदूक़ उठाकर..."

बंदूक़ उठाकर रुक जाने वाली बात पर तालियाँ बजीं।

कुमार आलोक के कुछ ही दोस्त वहाँ हाल में थे। जो थे भी वे भी माहौल देखकर वहाँ से उठकर जाने ही वाले थे। शालू भी हाल में थी। डिबेट में जो हो रहा था वह किसी काम का नहीं था। उसको भी पता था कि एकतरफ़ा डिबेट बस अपना प्वॉइंट प्रूव करने के लिए हो रही थी। पूरा हाल इस तैयारी में था कि कुमार आलोक स्टेज पर आए और उसको हूट करके अपनी भड़ास निकाल लें। कुमार आलोक हर किसी की बात शांति से सुन रहा था और अपने प्वॉइंट्स बना रहा था। शालू कुमार आलोक के पास वाली सीट पर बैठ गई।

उसने कुमार आलोक के कान में कहा, "तुम नाम वापस ले लो। ये लोग तुम्हारा क्या हाल करेंगे तुम्हें पता नहीं है।"

"हमने तय कर लिया है कि हम बोलेंगे।"

शालू को पता था कि आगे समझाना बेकार है।

"अब अगला नंबर है कुमार आलोक का और वह इस विषय के पक्ष में यानी कि आरक्षण के पक्ष में अपने विचार रखेंगे।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुमार आलोक का नाम लेते ही हूटिंग शुरू हो गई। शालू ने कुमार आलोक के उठते ही उसको, 'All the best!' कहा।

कुमार आलोक के लिए डिबेट जीतना या हारना उतना इंपोर्टेंट नहीं था जितना कि शालू का उसके पास आकर बैठना। उसको जो थोड़ी-बहुत घबराहट हो रही थी वह भी जाती रही। जब वह स्टेज पर आया तो पूरा हॉल हूट कर रहा था।

वह खड़ा होकर लोगों के चुप होने का इंतज़ार कर रहा था। एक मिनट बीत गया हूटिंग कम नहीं हो रही थी। दो मिनट बीत गए। कुमार आलोक के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। वह हर एक हूट करने वाले चेहरे को ध्यान से देख रहा था। इस बीच एकदम से शालू अपनी सीट पर खड़े-खड़े ही बहुत ज़ोर से चिल्लाई। यूँ भी शालू की बात सभी सुनते ही थे लेकिन आंदोलन के बाद से उसकी पहुँच और उसकी बात में वज़न बहुत बढ़ गया था।

शालू के ग़ुस्सा दिखाने के बाद से हॉल में ख़ामोशी पसरने लगी। एक-दो लोग अभी भी हूट कर रहे थे। शालू ने उनका नाम लेकर उनको बाहर जाने को कहा। इस चक्कर में थोड़ी गहमा-गहमी हो गई। कुछ और लोग फिर से हूट करने लगे।

कुमार आलोक ने स्टेज से बोलना शुरू किया।

"शालू जी करने दीजिए हूट, हम लोग आज से नहीं, हज़ारों सालों से हूट ही तो हो रहे हैं। इतने साल बाद पहला मौक़ा मिला है। ये हूट तो कुछ भी नहीं जो हमारे बाप, दादाओं, माँओं और बहनों ने सालों-साल झेला है।"

कुमार आलोक की इस बात से कमरे में शांति पसर गई। उसने बोलना जारी रखा।

"मेरे मित्र मृत्युंजय ने कहा, उम्मीद है कि हिंदू कॉलेज का होने के नाते मैं आपको मित्र कह सकता हूँ।"

ये सुनकर मृत्युंजय का मुँह बन गया। कुमार आलोक ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "मेरे मित्र मृत्युंजय ने कहा कि मंडल कमीशन से पहले उन्होंने सोचा ही नहीं कि वह किस जाति से हैं। मेरे दोस्त, आपकी मासूमियत पर मर जाने को मन करता है। समस्या क्या है कि महँगे कॉन्वेंट स्कूल और पब्लिक स्कूल की एक्स्ट्रा प्रोटेक्टेड दुनिया से सीधे कॉलेज में आ जाने वाले को जाति तो क्या देश की किसी भी सचाई का सामना करने का समय ही कहाँ मिलता है! आपमें से बहुत लोगों को शायद पता नहीं होगा कि

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बिहार में मुसहर नाम की जाति होती है। वे इतने ग़रीब होते हैं कि चूहे मारकर खाते हैं। उसको रिज़र्वेशन देकर भी अगले 50 साल में आप बराबर नहीं कर पाएँगे।"

"मेरी दोस्त अमृता सिंह ने एक पोस्टर दिखाया, उस पोस्टर को देखकर एक चीज़ कही जा सकती है कि आपकी हैंडराइटिंग बहुत सुंदर है। हैंडराइटिंग सुंदर हो जाने से पोस्टर में लिखी बात सुंदर नहीं हो जाती। बहुत सुंदर, बड़ा ही सुंदर कहा उनको रिज़र्वेशन वाला पति नहीं चाहिए। आपकी समस्या ज़्यादा बड़ी है अमृता मैडम, मैं आपसे एक बहुत छोटा सवाल पूछना चाहता हूँ। आप इतनी पढ़ाई-लिखाई केवल इसलिए कर रही हैं कि आपको अच्छा पति मिल सके? अपना और अपनी पढ़ाई की इज़्ज़त न करिए कोई बात नहीं लेकिन इतनी बेइज़्ज़ती भी न करिए।"

अमृता सिंह के पास इसका कोई जवाब नहीं था। हॉल में अब पूरी तरह शांति थी। शालू को मन-ही-मन इस बात की तसल्ली थी कि उसने जिससे प्यार किया वह लड़का बहुत अच्छा है। कुमार आलोक ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "एक दोस्त ने कहा कि बीमार होंगे तो रिज़र्वेशन वाले डॉक्टर से इलाज नहीं कराएँगे और रिज़र्वेशन से ब्रेन ड्रेन होगा। असल में ब्रेन ड्रेन वाली बात सुनाई बहुत अच्छी देती है लेकिन आप अपने लॉजिक को एक बात ज़रा ध्यान से परखकर देखिए। हममें से बहुत से लोग तभी तक देश और देशभक्ति चिल्लाते हैं जब तक अमेरिका का वीज़ा नहीं लग जाता। मैं बोलने कुछ और आया था लेकिन केवल एक डिबेट से सारे सवालों के जवाब नहीं दिए जा सकते। आख़िर में बस यही कहूँगा, मैंने हाथ में क़लम पकड़ने से पहले गोबर लीपा है। इतना लीपा है, इतना लीपा है कि आज भी जब लिखने के लिए क़लम उठाता हूँ तो लगता है कि हाथ में गोबर लगा है। वह गोबर दुनिया के किसी भी रिज़र्वेशन से साफ़ नहीं होगा क्योंकि उस गोबर को लगने में सालों लगे हैं और वह सालों में मिटेगा। इसीलिए ओबीसी को दिया गया आरक्षण उस दूरी को मिटाने की तरफ़ बढ़ा हुआ पहला क़दम है। रिज़र्वेशन को लागू करने में वी. पी. सिंह की मंशा क्या थी वह एक अलग डिबेट है। मैंने ज़्यादा बोल दिया हो तो उसके लिए माफ़ी, वरना इतिहास गवाह है कि हमने अपनी मर्ज़ी से मुँह खोलने के लिए भी माफ़ी माँगी है।"

कुमार आलोक के लिए पूरे हाल में बस एक ताली बजी, वह ताली शालू की थी। कमरे में तमाम सवाल थे। कुछ लोगों के पास अब रिज़र्वेशन को नए नज़रिये से देखने की एक दिशा थी। कुछ के विचार और पुख़्ता हुए थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कमरे में एक खलबली थी। इसके बाद इतना शोर होने लगा कि लिटररी कमेटी पूरी डिबेट को समेट भी नहीं पाई।

शालू के थिएटर वाले कुछ दोस्तों की नाराज़गी साफ़ देखी जा सकती थी, लेकिन शालू ने कभी न किसी की परवाह न की थी, न करने वाली थी।

उसको कुमार आलोक से बात करनी थी। उनके बीच में इतने महीने बर्फ़ बनकर खड़े हुए थे, उसको थोड़ा-सा कुमार आलोक को पिघलाना था तो कुछ शालू को।

वह दोनों हाल से निकलकर थोड़ी दूर बढ़े। आगे रास्ता दो तरफ़ जाता था। एक शालू के हॉस्टल की तरफ़ दूसरा ढाबे की तरफ़। अब तक उनमें कोई बात नहीं हुई थी।

दोनों वहीं रुके रहे एक-दूसरे का इंतज़ार करते हुए कि शायद कोई बात अपने-आप निकलकर बीच में आ जाए लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

कुमार आलोक ने अपनी डायरी में पीछे से एक पन्ना फाड़ा जिसमें पहले से कुछ लिखा हुआ था। उस पन्ने को मोड़कर शालू की तरफ़ बढ़ा दिया।

"अगर ठीक लगे तो पढ़ लीजिएगा।"

शालू ने तभी ही उस पन्ने को पढ़ना चाहा लेकिन कुमार आलोक ने उसको रोका और अपनी बात में दुबारा जोड़ा, "हम कॉलेज छोड़ रहे हैं।"

शालू को पूछना चाहिए था क्यों, लेकिन वह चुप रही। उसको समझ नहीं आ रहा था कि इतनी बातें उसके चारों तरफ़ फैली हुई हैं उनको उठाए कहाँ से। उसको अपने रटे हुए इतने डायलॉग याद आ रहे थे लेकिन उसमें से कोई भी किसी काम का नहीं था।

"हमने कहा हम कॉलेज छोड़ रहे हैं। आपको कुछ कहना नहीं है?"

"क्या बोलें?"

"कुछ तो बोलिए, आप तो इतना बोलती हैं।"

"हमसे ग़लती हो गई।"

"ग़लती आपकी नहीं है। उस माहौल की है जिसमें आप बड़ी हुई हैं।"

"रुक नहीं सकते?"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"अब यहाँ रुकने को कुछ बचा नहीं हैं। कितना जवाब देंगे! किस-किस को जवाब देंगे! हम जिस घर में पैदा हुए उसमें हमारी क्या ग़लती है!"

शालू के पास किसी भी बात का जवाब नहीं था। उसने दुबारा कहा, "रुक नहीं सकते?"

"हम सब सोच चुके हैं।"

"क्या सोच चुके हो? इतना मुश्किल से घरवाले भेजे हैं सब छोड़ दोगे? बस इसलिए कि इतने लोग गाली दे रहे हैं। अपने ही बैच वाले सही से बात नहीं कर रहे हैं। तुम नहीं जाओगे।"

शालू के अंदर की गुस्सैल, ज़िद्दी लड़की और हीरोइन सब एक साथ एक सुर में जग चुकी थी।

"अगर तुमने कॉलेज छोड़ा तो हमसे बुरा कोई नहीं होगा।"

शालू को कुमार आलोक पर चिल्लाते हुए देख, आसपास गुज़रते हुए लोगों ने रुककर पूछा, "सब ठीक है?"

जिस बेचारे ने अच्छाई दिखाते हुए पूछा उसी को डाँट पड़ गई।

"दिख नहीं रहा, दो लोग बात कर रहे हैं। बीच में घुसना है बस।"

यह सुनकर जिसने पूछा था वह अपने मन में 'पागल लड़की है' बुदबुदाते हुए निकल गया। जाते-जाते सामने से आते हुए एक-दो लोगों को भी बोल दिया, "दूर से जाना पागल लड़की है। अपने-आप को वो बड़ा हीरोइन समझती है।"

शालू और कुमार आलोक उसी जगह खड़े हुए दो घंटे एक-दूसरे पर गुस्सा निकालते रहे। कुछ देर रोए कुछ देर हँसे कुछ देर चुप हो गए। बर्फ़ गर्म होकर पिघल चुकी थी, गर्मी बर्फ़ बनकर जम गई थी। भाप ठंडे पानी से निकल रही थी और गर्म गिलास के बाहर ओस जम चुकी थी। जो जैसा होना चाहिए था वैसा तो नहीं हुआ था लेकिन कुछ हो गया था। अँधेरा होने पर कमरे में जाते हुए, शालू ने जब काग़ज़ खोलकर पढ़ा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इब्नेबतूती,

हमें तुम लोगों की तरह बातें बनानी नहीं आती, न ही शेक्सपियर बाबा जैसा लिखना आता है।

दो रास्ते जो अलग दिखते हैं, वो कहीं दूर जाकर मिल जाते हैं। दो पटरियाँ जो अलग चलती हैं, वो एक ट्रेन से जुड़ी होती हैं और अनंत पर जाकर मिलती हैं। मैंने गणित में पढ़ा था कि सीधी रेखा और कुछ नहीं एक बड़े वृत्त (सर्कल) का छोटा-सा हिस्सा भर होती है। जैसे दूर कहीं क्षितिज पर आसमान ज़ज़मीन एक हो रहे होते हैं। हमें सोचना चाहिए हम आज जहाँ खड़े हैं, वह भी किसी का क्षितिज है।

अनंत पर हम ज़रूर मिलेंगे, चाहे विचार, भाषा, ज़ात और बात कितनी ही अलग क्यों न हो। वह अनंत ही ईश्वर है और ईश्वर न भी हो ईश्वर के होने की संभावना तो है ही।

कुमार आलोक"

पीएस- ईश्वर का खो जाना किसी ज़रूरी चिट्ठी के खो जाने जैसी साधारण घटना नहीं है। ईश्वर के खोने पर भी आस्था बनी रहती है, बना रहता है इंतज़ार और लगी रहती है उम्मीद।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू को एक बार में ही यह चिट्ठी याद हो चुकी थी। वह अपने कॉलेज में किए गए सभी प्ले के सभी डायलॉग भूलकर भी कभी इस चिट्ठी को नहीं भूली।

इतने सारे अख़बार मिलकर भी शालू और कुमार आलोक की कहानी को जगह नहीं दे पाए क्योंकि इस दुनिया के सारे अख़बार इतिहास को दर्ज करने की जल्दी में भूल ही चुके थे कि उनको किसी सादगी से लिखे हुए प्रेमपत्र को भी जगह देनी थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

2015

शालू ने उन तमाम फ़ोटो को फैला रखा था। राघव और निशा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि शालू क्या बम फोड़ने वाली थी।

निशा ने कुमार आलोक की दी हुई आख़िरी चिट्ठी को पढ़ना शुरू किया।

"आंटी कितना अच्छा लिखा है।"

अभी निशा ने कुल दो लाइन ही पढ़ी होगी कि राघव ने वह चिट्ठी अपनी तरफ़ खींची और पढ़ने लगा।

"इसका क्या मतलब है?" राघव ने पूछा।

"तुम हमेशा पूछता था न कि अम्मा, आपकी पापा से शादी कैसे हुई थी?"

"हाँ, लेकिन वो तो पता है न। नाना और दादी जी दोस्त थे।"

"हाँ वो तो थे ही।" शालू ने इसके बाद एक-एक करके फ़ोटो के आगे और पीछे की कहानी सुनाना शुरू की।

ऐसे मौक़े जीवन में कम ही आते हैं कि हमारे पैरेंट्स हमें अपने कॉलेज-लाइफ़ के बारे में सब कुछ बता दें। वह बताते ज़रूर हैं लेकिन काट कर। केवल उतना जितना बताकर बच्चों को पढ़ने के लिए बोला जा सके।

"तो कुमार आलोक ने कॉलेज छोड़ा था या नहीं?" राघव और निशा दोनों का यही सवाल था।

"और अम्मा, ये तो पता ही नहीं था कि तुम कॉलेज में थिएटर करती थी। कभी बताया क्यों नहीं?" राघव अपनी माँ के नए अवतार के बारे में जानकर ख़ुश था।

माँ कभी लड़की थी या बाप कभी एक लड़का था, यह सोचना इतनी छोटी-सी बात है लेकिन लगता है कि माँ-बाप पैदा ही बूढ़े हुए थे।

"आंटी, आप कॉलेज के टाइम कितनी अच्छी दिखती थीं!" निशा ने तस्वीरों को दुबारा देखते हुए कहा।

शालू तो ख़ैर शालू थी, "मतलब तू कह रही है कि अब नहीं लगती?"

"नहीं मेरा वह मतलब नहीं था आंटी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इस पर राघव ने निशा की परेशानी बढ़ाने के लिए कहा, “यही कह रही है कि पहले वाली बात नहीं रही।”

“चुप करो।” बोलते हुए निशा ने राघव को कोहनी मारी। फिर उसे ख़याल आया कि ज़्यादा तो नहीं हो गया।

माहौल में हल्की-सी नमी, थोड़ी-सी मुस्कुराहट, थोड़ा अदरक का स्वाद और थोड़ी-सी यादों की भाप मिलकर हवा में घुल गई।

“आपने बताया नहीं कॉलेज छोड़ा कुमार आलोक ने?” राघव को इस सवाल से बड़ी उम्मीद थी। जैसे आने वाले कल की चाभी इसी सवाल से खुलती हो।

शालू ने जवाब देने से पहले अपने-आप को सँभाला। फिर उन तमाम काग़ज़ को दुबारा देखा।

“नहीं, मैंने उसे कॉलेज नहीं छोड़ने दिया।”

“फिर आगे क्या हुआ?”

“आगे क्या होना!”

“मतलब फिर तुमने कुमार आलोक से शादी क्यों नहीं की?”

देखने और सुनने में यह सवाल शायद आसान लगता हो लेकिन इस सवाल के जवाब में एक लंबी आह, न जाने कितने साल और दुनिया भर का इंतज़ार और एक अदना-सी उम्मीद छुपम-छुपाई खेलकर थककर चूर होकर अपने आप को समझा चुकी थी।

“अब छोड़ो आज के लिए बहुत हो गया।” शालू ने सब चिट्ठियों, तस्वीरों के साथ सवाल भी समेटकर रख दिया था।

“अगर पूरी बात नहीं बतानी थी तो ये सब आज बताया क्यों?” राघव ने कुर्सी से उठकर कमरे में टहलते हुए कहा।

“आज इसलिए बताया कि कल प्ले देखने गई थी तो सब कुछ याद आ गया। और अब तू बाहर जाने वाला है। लौटकर आएगा तो बड़ा होकर लौटेगा तब पता नहीं कभी बताने का मूड बने न बने तो सोचा आज बता देती हूँ।”

“आगे बताओ अम्मा यार। यही सही नहीं लगता तुम्हारा। इतना भाव खाती हो न तुम।” राघव ने शालू को मनाते हुए कहा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"हाँ आंटी, बताइए न!" निशा ने भी अपनी तरफ़ से ज़ोर लगा दिया।

"तुम ऐसे ही नहीं दिखाओगी, बताओ क्या बात है?" राघव ने दुबारा अपनी बात पर ज़ोर दिया।

शालू को बच्चों की ज़िद के आगे मजबूरन बात जारी रखनी पड़ी।

"कुमार आलोक मेरे कहने पर कॉलेज में रुक गया था। अगले साल हमारा तीसरा साल था। उसके एक साल बाद भी उसने वहीं दिल्ली में रहकर तैयारी की। मेरा मन पढ़ाई में लगता नहीं था। मुझे था कि मैं कॉलेज के बाद भी थिएटर करूँगी और NSD (नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा) का पेपर दूँगी। कुमार आलोक से दोस्ती के चक्कर में कॉलेज में मेरी सभी से बात होना बंद हो गई। तभी 1993 में कुमार आलोक का यूपीएससी में सेलेक्शन हो गया। मेरा एनएसडी में नहीं हुआ। तेरे नाना मुझे वहाँ अकेले अब छोड़ना नहीं चाहते थे। आलोक सेलेक्शन के बाद यहाँ तुम्हारे नाना से मिलने आया।"

"कुमार आलोक मिलने आए मतलब शादी के लिए बात करने?" राघव ने पूछा।

"हाँ।"

"फिर नाना तैयार नहीं हुए। वह समय ऐसा था कि अगर घर वालों को पता चल जाए कि लड़की किसी को प्यार करती है ख़ास करके जिसकी कास्ट सेम न हो, तो घरवाले तुरंत ही लड़की की शादी कहीं और करा देते थे।"

"तुमने फ़ाइट नहीं की? इतनी आसानी से मान गई? क्या यार अम्मा, ऐसे थोड़े होता है!" राघव ने झुँझलाहट में कहा।

"नहीं, पापा की बात का प्रेशर मैंने बिलकुल नहीं लिया था। मैं घर से निकल गई थी। कुमार आलोक के पास।"

"फिर, तो तुमने शादी क्यों नहीं की?"

"मेरे एकदम से ऐसे घरवालों को बिना बताए घर से निकलने की वजह से वह बहुत गुस्सा हुआ। हमारी बहुत लड़ाई हुई। उसने कहा भी कि एक ही बार तो मना किया था उन्होंने। वह दुबारा आता, तिबारा आता, वह तब तक आता और घरवालों को मनाता जब तक वो मान नहीं जाते। मुझे पता था कि पापा नहीं मानते। वह मुझे घर छोड़ने आया। इधर घर वाले दो दिन से बहुत परेशान थे। उसको सामने देख पापा अपने-आप को कंट्रोल नहीं

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कर पाए। उन्होंने मारते हुए आलोक को घर से निकाल दिया। इसके बावजूद भी उसे यही लगता था कि पापा मान जाएँगे। इसके बाद भी उसने पापा को समझाने की बहुत कोशिश की। मुझे इस बात का ग़ुस्सा था कि तुम फ़ालतू में यहाँ आए हो कोई फ़ायदा नहीं। वह चाहता था कि हम घरवालों कि मर्ज़ी से ही शादी करें और मुझे अपने पापा के बारे में पता था। वह ग़लत नहीं था। बस हमारी ज़िद से सब कुछ ख़त्म हो गया। कई बार लड़ाइयाँ बीच में ही अपनी वजह खो देती हैं। हम ये लड़ाई जीत सकते थे और यही हमारी हार थी।" शालू यह कहते-कहते चुप हो गई। आँसू गले तक आए लेकिन आँखों में नहीं।

"ग़लती किसकी थी अम्मा?" राघव ने शालू की तरफ़ पानी बढ़ाते हुए पूछा।

"ग़लती किसी की भी हो, कुछ ग़लतियाँ सही नहीं हो सकतीं। शायद समय ग़लत था।"

शालू ये सब बहुत आराम से बता रही थी। जैसे यह कहानी उसकी न होकर किसी किताब की हो। हालाँकि राघव और निशा के लिए इस कहानी को सुनना इतना आसान नहीं था। राघव का पूरा ध्यान शालू की आँखों की तरफ़ था।

"आगे?"

"आगे क्या, हो गई शादी।"

"क्या यार अम्मा, ऐसे तो आप इतना हीरोइन बनते हो। घर छोड़ देना था न!" राघव ने उस लिफ़ाफ़े को दुबारा खोलते हुए कहा। जैसे कि उस लिफ़ाफ़े में कुमार आलोक का पता हो।

"शादी वाले दिन स्टेशन तक गई थी।"

यह सुनकर राघव और निशा एकदम चौंक गए।

"फिर?"

"लौट क्यों आई?"

"पता नहीं, सही नहीं लगा। लौटकर इतना रोई कि सब आँसू ही सूख गए।"

यह बोलने के बाद शालू ने अपनी आँखों को छुआ। जैसे कि उसके अंदर का पानी टटोल रही हो। कमरे में शांति थी। आँखों की छोटी-सी झील

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अपने-आप में अरब सागर समेटे रहती है।

ऐसी शांति तब होती है जब या तो कोई कहानी ख़त्म होती है या फिर कोई कहानी शुरू।

"चलो बहुत हो गया। इतनी देर से बोल रही हूँ। चाय बनाती हूँ।"

जब शालू चाय बनाने गई तब उसका ध्यान सामने लगे कैलेंडर पर गया। वहाँ हर तारीख़ के आगे एक उल्टी डेट लिखी हुई थी। अब से 75 दिन बाद उसको जाना था।

राघव अलग ही दुविधा में था कि वह जाए या न जाए।

"आंटी आएँगी तो पूछना कि कुमार आलोक के टच में वह हैं कि नहीं।" निशा ने जब यह धीरे से राघव से कहा तो उसने कोई जवाब नहीं दिया।

इस बीच शालू ने चाय बनाने के साथ-साथ घर के काम निपटाने शुरू कर दिए थे। घर के साधारण से लगने वाले काम जैसे कि वाशिंग मशीन में कपड़े डालना, थोड़ी बहुत डस्टिंग कर देना, कई बार घर के लिए और ख़ुद के लिए ज़रूरी हो जाते हैं।

आदमी अपने से ज़्यादा किसी और से बोर नहीं होता। अपने-आप को छोटे-मोटे कामों में उलझाकर अपने-आप को बहलाता रहता है।

शालू अंदर से राघव को भी एक-दो बार घर के काम के लिए उठा चुकी थी। शालू के हाथ में चाय के साथ एक-दो खाने की चीज़ें भी थीं।

"चलो चाय पी लो, बहुत सारे काम हैं।"

वह ऐसे लौटी जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। हिंदुस्तानी माँएँ इस मामले में एक्सपर्ट होती हैं। चाहे बड़ी-से-बड़ी बात हो जाए वे सब कुछ दुबारा ऐसे शुरू कर लेती हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो। पूरी दुनिया भी अगर उनको शुरू करने को कहा जाए तो वे ऐसे शुरू कर देंगी जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। राघव के पास अब भी बहुत सवाल थे।

"उसके बाद कुमार आलोक से कभी बात नहीं हुई?"

शालू को पता ही था कि ये सवाल आने वाला है।

"क्या फ़र्क़ पड़ता है!"

"पड़ता है, मुझे उससे मिलना है।" राघव को यह बोलने के बाद ध्यान आया कि 'उससे' नहीं बोलना चाहिए। उसने सवाल दुबारा पूछा, "मुझे

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक जी से मिलना है।"

निशा को लगा कि ये बातें ज़्यादा ही पर्सनल हो रही हैं। उसको लगा कि अब चलना चाहिए।

"अच्छा आंटी, चलती हूँ।"

राघव और शालू दोनों ने एक साथ कहा, "चले जाना, संडे ही तो है जल्दी क्या है!"

दोनों की बात एक साथ मिलता सुनकर तीनों ख़ुश हुए।

"अम्मा यार, जल्दी बताओ। आपकी कभी बात हुई?"

निशा को लगा कि राघव के पापा को गए हुए भी इतना समय हो गया, ऐसा हो ही नहीं सकता कि आंटी ने उनसे बात नहीं की हो। राघव को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

"अम्मा! अम्मा, बताओ यार।" राघव ने चार साल के बच्चे के जैसे ज़िद की।

"नहीं मैं कभी नहीं मिली, न ही हमारी बात हुई।"

"क्यों?" राघव और निशा दोनों ने एक साथ पूछा।

"क्यों क्या, राघव को बड़ा करने से टाइम मिलता तब तो। टाइम ही नहीं मिला। नाना से बातचीत मैंने तभी बंद कर दी थी। इसके पापा के जाने के बाद मन भी किया कि बात करूँ लेकिन मुझे लगा कि अब वह शादी कर चुका होगा। उसको ये सब बताकर क्यों परेशान करूँ। सोचा था कि राघव जब लाइफ़ में सेट हो जाएगा, तब आलोक से मिलने का सोचूँगी।" शालू ने यह बात भी बहुत आसानी सी कह दी। दुनिया की सबसे मुश्किल बातें शायद माँ बनकर ही आसानी से कही जा सकती हैं।

शालू ने अपनी बात जारी रखी, "इतनी अच्छी जगह एडमिशन मिला है और ये महाराज हैं कि जाने को ही तैयार नहीं हैं। इसीलिए ये सब बता दिया कि ये चकल्लस बंद करो और जाने की तैयारी करो। मैं नहीं चाहती कि मैं अपने तरीक़े से नहीं जी पाई तो मेरा बेटा अपने तरीक़े से नहीं जी पाए और हाँ अगर कल को कुछ हो जाए तो आलोक से एक बार मिलवा देना तुम लोग।" आख़िरी लाइन बोलने के बाद शालू ने एक लंबी साँस ली। एक लंबी साँस में आदमी एक पूरी उम्र जी लेता है। ये वही लंबी साँस थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"मुझे जाने से पहले कुमार आलोक से एक बार मिलना है।" राघव ने कहा।

"तू पागल हो गया है!"

"तुम्हें बताना नहीं चाहिए था।"

"मैं कहाँ बता रही थी लेकिन अगर बताती नहीं तो तू बेवक़ूफ़ों की तरह फ़ालतू-सी बात पर इतना अच्छा मौक़ा छोड़ देता।"

"अम्मा, मुझे नहीं पता।"

"मुझे भी कुछ नहीं पता, आज से तेरे जाने की तैयारी शुरू और मुझे कोई इमोशनल ड्रामा नहीं चाहिए, समझा?"

शालू और राघव में इस बात को लेकर बहुत देर तक बहस हुई। माँ के साथ बहस लंबी होती कहाँ है! बस बातचीत बंद हो जाती है। यहाँ भी बातचीत बंद हुई, पूरे दो घंटे के लिए।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मिशन कुमार आलोक

राघव को पता था कि अम्मा ऐसे तो मानेगी नहीं। वह उस समय तो मान गया था लेकिन उसके दिमाग़ में यही चल रहा था कि कुमार आलोक तक कैसे पहुँचा जाए। वह ऑनलाइन जितना ढूँढ़ सकता था ढूँढ़ चुका था। अगर कोई चीज़ ऑनलाइन नहीं मिली तो मिल ही नहीं सकती थी।

उसकी जान पहचान में शालू के कॉलेज के समय का कोई भी नहीं था। उसने अपने दिमाग़ में शालू की पूरी बात दुबारा दोहराई तो उसको याद आया कि अम्मा ने बोला था कि उसका सेलेक्शन यूपीएससी में हो गया था।

बस उसको एक सिरा मिला। उसने अपने साथ के कुछ दोस्तों से बात करके यूपीएससी के बारे में समझा कि अगर किसी पुराने बैच वाले आईएएस के बारे में पता करना है तो कैसे पता चलेगा।

यूपीएससी का ऑफ़िस दिल्ली में था और इस बीच वीज़ा के लिए उसको दिल्ली जाना ही था। शालू की तबीयत बुरी नहीं थी तो अच्छी भी नहीं थी। एक-दो बार उसे ऐसा लगा कि हॉस्पिटल जाना पड़ सकता है फिर भी उसने राघव को नहीं बताया।

प्रोफ़ेसर और शालू की बातें हो रही थीं। बीच में वह एक दो बार मिले भी थे। शालू जब भी प्रोफ़ेसर से मिलती उसको पुरानी सब बातें याद आ जातीं।

राघव ने भी कोई ऐसी बात नहीं की थी कि शालू कुछ परेशान हो। वह एक बार कुमार आलोक से मिलने की ज़िद के बाद चुप ही हो गया था। उसके जाने की तैयारी शुरू हो चुकी थी।

उसको पूरा स्कॉलरशिप मिल गया था, बची-खुची कसर प्रोफ़ेसर से जान-पहचान के कारण पूरी हो गई थी।

मिशन कुमार आलोक जो कि राघव ने बड़े ज़ोर-शोर से शुरू किया था वह अपने शुरू होने से पहले ही शांत हो चुका था। निशा ने भी राघव को यही समझाया कि इतने साल बाद कुमार आलोक की लाइफ़ में एकदम से घुसने का कोई मतलब नहीं है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

निशा का भी इमोशनल होना बढ़ चुका था। अब उसने राघव से लड़ना छोड़ दिया था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक,

सब इतना तेज़ी से हुआ कि तुम्हें बताने का समय ही नहीं मिला। समय ऐसे बीत रहा है जैसे वीसीआर में लगे कैसेट को कोई फ़ॉरवर्ड पर लगाकर भूल जाए। सोचा था कि तुम्हें शादी में ज़रूर बुलाएँगे लेकिन अब भी गुस्सा बहुत है। थिएटर के दिन, हिंदू कॉलेज के दिन याद आते हैं। हमारा पीसीएस में सेलेक्शन हो गया है, कृषि विभाग मिला है। ऐसे लगता है कि अभी तक एक ज़िंदगी में हमारे दो जन्म हो चुके हैं। पिछली बातें पिछले जन्म की लगती हैं। उम्मीद है तुम्हारी नौकरी अच्छी चल रही होगी। कौन-सा कैडर मिला तुमको? जानते हुए कि ये सब तुम तक नहीं पहुँचेगा फिर भी लिखकर अच्छा लगता है, हल्का लगता है।

शालू, फ़रवरी 1994

पीएस- हमें पूरा उजाला चाहिए ही नहीं। हमें बहुत-सा अँधेरा और बहुत थोड़ा-सा उजाला चाहिए। जैसे बरसात के बाद की अँधेरी रात में तारे। थोड़े-से उजाले के साथ अँधेरा हमें एक अलग क़िस्म का सुकून देता है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वे 60 दिन

कैलेंडर पर 60 दिन बचे देख शालू के दिमाग़ में उल्टी गिनती शुरू हो गई। वीज़ा के काम के लिए जाने पर शालू ने राघव के साथ ही अपना टिकट कराया। इतने कम दिन बचे थे कि वह एक भी दिन राघव के बिना नहीं काटना चाहती थी।

शालू ने अपने ऑफ़िस में दो महीने की छुट्टियाँ अप्रूव करा ली थी। थोड़ी बहुत दिक़्क़त हुई लेकिन शालू को जब जो चाहिए होता था वह चाहिए होता था। उसके लिए साम-दाम-दंड-भेद और सरकारी पॉलिटिक्स कुछ भी लगाना पड़े।

जिस संडे उनको दिल्ली के लिए जाना था उस सुबह छह बजे से ही राघव के फ़ोन पर घंटियाँ बजना शुरू हो गईं।

“हेलो, जी मैंने आपका ऐड देखा था पेपर में। मैं रिटायर्ड हूँ। बच्चे बाहर सेटेल हैं। आप दुल्हन के कौन बोल रहे हैं?”

वह एक फ़ोन रखता नहीं था कि दूसरा फ़ोन बजना शुरू हो जाता।

“मैं अपने भाई के लिए रिश्ता देख रही हूँ। मेरे भाई आर्मी में थे। पहली बीवी से तलाक़ हो चुका है।”

“आपका शादी के लिए ऐड आया था। आप ईमेल आईडी पर उनकी तस्वीर और कुंडली भेज देंगे? आपने लिखा था कि वह सरकारी नौकरी में हैं। कौन से डिपार्टमेंट में हैं?”

फ़ोन इतने बज रहे थे कि राघव को परेशान होकर अपना फ़ोन बंद करना पड़ा।

उसने शालू का फ़ोन लेकर निशा को फ़ोन मिलाया।

“यार, पेपर वाला ऐड तो हमने वापस ले लिया था फिर पेपर में कैसे आ गया? बहुत बड़ी ग़लती हो गई। सुबह से ऐसे-ऐसे फ़ोन आ रहे हैं कि मैं परेशान हो गया। हमें अख़बार में ऐड का सोचना ही नहीं चाहिए था। एक-से-एक ठरकी लग रहे हैं।”

राघव और निशा ने यह ऐड पंद्रह दिन पहले दिया था और फिर वापस भी ले लिया था। लेकिन अख़बारवालों की ग़लती की वजह से वह ऐड अख़बार में छप गया था। अभी तक शालू को यह बात नहीं पता थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हालाँकि वह राघव के इतना जल्दी उठ जाने से चौंक गई थी। क़रीब दो घंटे तक राघव सदमे में था। इस उठा-पटक के बीच में शालू के पास उसके बॉस का फ़ोन आया।

"बधाई हो, आपने शादी के लिए छुट्टी ली थी। पहले ही बता दिया होता।"

शालू को कुछ समझ नहीं आया कि बॉस ऐसा क्यों बोल रहे हैं। बॉस ने बताया कि आज के पेपर में शादी के लिए एक ऐड निकला है।

"हम तो अपने लिए देख रहे थे। नंबर मिलाया तो आपके बेटे का नंबर निकला। आपने एक बार अपने बेटे का नंबर नोट कराया था न कि अगर कभी कुछ इमरजेंसी हो तो कॉल कर लें।"

इससे पहले कि बॉस सभी हद पार करते हुए अपने-आप को शादी के लिए आगे करते। शालू ने शालीनता से फ़ोन रखवा दिया।

"तू समझता क्या है अपने-आप को? तू बाप बनेगा मेरा! मुझे क्या करना है क्या नहीं करना है तू बताएगा अब! बेटा है बेटा बनकर रह।" शालू गुस्से में घर छोड़कर निकल ही रही थी कि कैलेंडर पर नज़र गई।

कभी-कभी जब शालू का मूड बहुत ऑफ़ होता था तो वह कार लेकर निकल जाती थी। उसने कार उठाई और निकल गई। राघव का उसको रोकना बेकार था।

उसने जैसे ही निशा को फ़ोन मिलाने के लिए फ़ोन खोला। फ़ोन पर इतने मिस्ड कॉल अलर्ट थे कि फ़ोन पहले तो हैंग हुआ और इससे पहले कॉल लगता फिर कोई कॉल आने लगा।

राघव को अपनी ग़लती समझ में आ चुकी थी।

शालू को घर से निकले दो घंटे हो चुके थे। निशा को घर आए हुए भी क़रीब दो घंटे बीत चुके थे। जब भी कभी शालू अकेले निकलती थी तो एक-दो घंटे में आ जाती थी। राघव को अब घबराहट हो रही थी।

अपने फ़ोन खोलने पर उसको तमाम लोगों के मैसेज पढ़ने पड़ रहे थे और हर एक मैसेज के बाद उसको गुस्सा आ रहा था। उसने निशा के फ़ोन से शालू को फ़ोन लगाया, फ़ोन बंद था।

निशा उसको समझाने की कोशिश कर रही थी लेकिन ऐसे में कोई भी ऐसी बात होती ही नहीं जो अपना असर कर पाए। तभी दरवाज़े पर घंटी

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बजी, राघव ने चैन की साँस ली। लेकिन दरवाज़ा खोलने पर पता चला कि शालू नहीं काम वाली बाई आई है। उसने आते ही पूछा, "चाय बनाने जा रही हूँ। भाभी जी के लिए भी बनानी है?"

राघव ने कोई जवाब नहीं दिया।

"भइया, सामने वाली आंटी बता रही थीं। पेपर में भाभी का कुछ आया है।" बाई ने जैसे ही पूछा राघव ने अपना आपा खो दिया।

"एक तो आप पहले अम्मा को भाभी जी कहना बंद करिए। भइया को मरे सालों हो गए।"

बाई को राघव से डाँट खाने की उम्मीद ही नहीं थी। वह चुपचाप जाकर पटक-पटककर बर्तन धोने बैठ गई। साथ ही अपने मन-ही-मन में कुछ बड़बड़ाने लगी।

शालू के ऑफ़िस के कुछ लोग इसी मोहल्ले में रहते थे। श्रीवास्तव जी को यह तो पता ही था कि शालू कभी उनको भाव नहीं देगी। उन्होंने मज़ाक़ में ऑफ़िस के ही एक दो लोगों को बता दिया और बात फैलते-फैलते राघव के मोहल्ले तक आ पहुँची थी।

निशा का कुछ भी समझाना बेकार था। उसने हवा में एक तीर छोड़ा और प्रोफ़ेसर को कॉल किया। प्रोफ़ेसर ने एक बार में कॉल उठा लिया। पता चला कि शालू वहीं है।

इधर फ़ोन पर राघव आया और उधर फ़ोन पर शालू। शालू को लगा कि फ़ोन पर निशा है।

"मेरा मूड बहुत ऑफ़ है। मुझे नहीं करनी बात।"

"अम्मा!"

इतना सब सुनने के बाद राघव ने बस इतना ही कहा। दोनों अब चुप थे। फ़ोन रखने से पहले शालू ने बस इतना कहा, "थोड़ी देर में आ जाऊँगी।"

प्रोफ़ेसर के हाथ में शालू का हाथ था।

माँ और बच्चा चाहकर भी एक-दूसरे से ज़्यादा देर तक नाराज़ रह नहीं पाते। अगर माँएँ न होतीं तो इतना ग़ुस्सा हम लेकर कहाँ जाते! देखा जाए तो माँ पर हर चीज़ का ग़ुस्सा निकालना ज़्यादती है लेकिन कुछ ज़्यादतियाँ करने के लिए इंसान अभिशप्त है।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उस दिन जब शालू घर लौटी तो बिलकुल नॉर्मल थी। उस दिन अख़बार में आने की वजह से शालू को भी तमाम फ़ोन आए। मोहल्ले में एक-दो लोगों ने घुमा-फिराकर बात सुना ही दी। शालू पर असर तो हुआ था लेकिन चूँकि राघव के जाने के दिन अब और कम हो गए थे इसलिए उसने अपना सारा ध्यान राघव के जाने पर फ़ोकस कर दिया था।

रात को जाने से पहले राघव ने प्रोफ़ेसर से मिलने के लिए समय लिया। वह कभी प्रोफ़ेसर से अकेले में नहीं मिला था। वह बहाना बनाकर प्रोफ़ेसर के यहाँ पहुँचा।

प्रोफ़ेसर ने समय के हिसाब से कॉफ़ी बनाकर रखी हुई थी।

"क्या हाल हैं टाइगर?" प्रोफ़ेसर ने टेबल पर कॉफ़ी रखते हुए पूछा।

"पता नहीं सर। मैं बहुत कंफ़्यूज़्ड हूँ। समझ नहीं पा रहा, जाना चाहिए या नहीं।"

राघव ये सब बोलते हुए प्रोफ़ेसर से आँखें नहीं मिला पा रहा था। ये बातें शायद वो अपने आप से ही करना चाहता था लेकिन प्रोफ़ेसर ये सब कुछ बाहर से देख रहा था इसलिए वो शायद इस सिचुएशन पर सही से रियेक्ट कर पाता।

"देखो टाइगर, घर को कभी-न-कभी तो छोड़ना ही पड़ता है। अगर तुम नहीं गए तो आज से कुछ साल बाद तुम लाइफ़ में यही रिग्रेट करोगे। मुझे देखो, लाइफ़ को लेकर फ़ंडे क्लियर हैं लेकिन अब लगता है कि साला मैंने पूरी लाइफ़ केवल अपना सोचा। अपना सोचने के चक्कर में वह सब कुछ पीछे छूट गया जिससे ज़िंदगी जीने लायक़ बनती है। तुम जाओ, शालू की टेंशन बिलकुल मत करो। अगर तुम उसकी वजह से नहीं गए तो वह ज़्यादा परेशान होगी।"

राघव चुपचाप बातें सुन रहा था। कभी-कभी ऐसा होता है कि आप सामने वाले आदमी के पास अपने जवाब ढूँढ़ने नहीं जाते आप, बल्कि अपने पहले से तय किए जवाब की वजह खोजने जाते हैं।

"कुछ पिओगे?" प्रोफ़ेसर ने पूछा और राघव के जवाब देने से पहले दो बीयर खोलकर सामने रख दिए।

"अभी तो कॉफ़ी पी है सर।"

"बीयर को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है पहले क्या पी थी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव और प्रोफ़ेसर ने बीयर कैन टकराकर चीयर्स किया। राघव की नज़र कमरे में लगी सैकड़ों किताबों पर गई। दीवार पर प्रोफ़ेसर की दुनिया भर में अलग-अलग समय पर खींची गईं फ़ोटो लगी हुई थीं। हर फ़ोटो में कोई-न-कोई अलग था।

"ये सब फ़ोटो में आपकी गर्लफ़्रेंड हैं?"

"गर्लफ़्रेंड एक भी नहीं है, हाँ गर्लफ़्रेंड हो सकती थीं। इनमें से कम-से-कम दो ऐसी थीं जिनसे शादी भी हो सकती थी।"

"फिर आपने मैट्रिमोनी की वेबसाइट पर अपना प्रोफ़ाइल क्यों डाला? इनमें से एक-दो तो ज़रूर होंगी जो आज भी आपका वेट कर रही होंगी? वेट न भी कर रहीं हो, पर शायद लौट तो सकती हों!"

"ज़रूर होंगी लेकिन यार वो तस्वीर में जो चैटर्जी दिख रहा है वो कब का मर चुका। ये लड़कियाँ मेरे जिस वर्ज़न से प्यार करती थीं वो वर्ज़न इतना बदल चुका है कि मैं अब उनके लिए एक अजनबी हो चुका हूँ।"

"आपको अम्मा अच्छी लगती हैं?"

प्रोफ़ेसर ने बीयर का एक बड़ा घूँट लिया और बोला, "She is one of the nicest people, I've ever met. दुनिया में ऐसा कोई हो ही नहीं सकता जिसको वो अच्छी नहीं लगेंगी।"

कमरे में ख़ामोशी थी, कुछ जवाब बिखरे पड़े थे। कुछ सवाल खिड़की के बाहर थे। थोड़ा सुकून तस्वीर में था। थोड़ा राघव के मन में। चलने से पहले प्रोफ़ेसर ने राघव से पूछा, "तुम जो जानने आए थे वो तो तुमने पूछा ही नहीं!"

राघव ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "फिर कभी।"

प्रोफ़ेसर ने राघव को गले लगाया। उस गले लगने में एक नर्म गर्माहट थी। जब वे गले लगाकर हटे तो दोनों के बीच दोस्ती हो चुकी थी।

राघव के घर लौटने के बाद से ट्रेन में ज़्यादा समय बचा नहीं था। रात की ट्रेन से वह दिल्ली गए। दिल्ली में शालू के कुछ पुराने दोस्त भी थे लेकिन उन्होंने गेस्ट हाउस में रुकना ठीक समझा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वे 55 दिन

राघव ही जान-बूझकर जाने से पहले जयपुर और उदयपुर का प्लान बना लिया था और दिल्ली पहुँचने पर शालू को बताया। वीज़ा का काम करने के बाद दोनों राजस्थान घूमने के लिए निकल गए।

न जाने का सवाल ही नहीं था क्योंकि दोनों बहुत दिनों से कहीं घूमने गए भी नहीं थे। जयपुर में दो दिन और उदयपुर में तीन दिन बिताने तथा दिल्ली में बचे हुए एक-दो पेपर वर्क करने के बाद उनका लौटने का प्लान था।

अब 55 दिन बचे थे। शालू की डायरी में दिन की उल्टी गिनती तेज़ी से कम होती जा रही थी। राघव ने शालू में एक नई बात नोटिस की थी कि उसकी और प्रोफ़ेसर की फ़ोन पर रोज़ एक बार बात होती थी।

राघव ने शालू से प्रोफ़ेसर को जयपुर बुलाने के लिए कहा भी था।

"बंगाली कहाँ भागा जा रहा है। ये माँ बेटे का me time है। इसमें कोई नहीं आएगा।"

हिंदुस्तानी माँ का Me time सोचना ही अपने आप क्रांति है, बोलना और जीना तो बहुत दूर की बात है। इसीलिए शायद शालू अपने-आप में चलती-फिरती एक क्रांति थी।

इन पाँच दिनों में दोनों के थोड़ा बहुत बचे हुए गिले-शिकवे जाते रहे। राघव अख़बार में ऐड देने वाली बात के लिए अभी तक शर्मिंदा था।

दिल्ली पहुँचकर काम निपटाने के बाद उनके पास आधा दिन बचा था।

"अम्मा, एक छोटी-सी बात मानोगी?"

"बात मानने लायक़ होगी तो मानूँगी, नहीं मानने लायक़ होगी तो नहीं मानूँगी। तू बोल।"

"अम्मा मैंने कुमार आलोक का पता कर लिया है। यहाँ से बस 20 मिनट का रास्ता है। मैंने उनसे समय भी ले लिया है। बस मना मत करना, प्लीज़ चले चलो।"

चूँकि राघव के पापा भी सरकारी अधिकारी थे और उनकी जान-पहचान के कुछ दोस्त अब भी राघव के परिवार के टच में थे, तो उसने अपना

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

दिमाग़ लगाकर 93 बैच के कुमार आलोक के बारे में पता करके उनका टाइम भी ले लिया था।

शालू यह सुनकर सकते में आ गई। उसको दूर-दूर तक ऐसी उम्मीद नहीं थी। लेकिन वह राघव की ज़िद के आगे मजबूर थी। मिलने के लिए मान जाने की वजह से राघव बहुत ख़ुश था। उसने ख़ुशी में निशा को भी मैसेज करके बताया कि अम्मा मिलने के लिए मान गई है।

राघव शालू को लेकर एक बड़े से बंगले में पहुँचा। बाहर सिपाही ने उनको रोका, उनके आने की वजह पूछी। राघव ये सब तैयारी पहले ही कर चुका था।

बाहर नेमप्लेट पर कुमार आलोक, ज्वॉइंट सेक्रेट्री पढ़ते हुए राघव ने शालू की आँखों में देखा। आँखों में कोई भाव नहीं था।

राघव कोशिश कर रहा था कि वह अपनी माँ की शक्ल भी पढ़ पाए। लेकिन उसका कुछ भी पढ़ पाना मुश्किल था। सालों बाद किसी से मिलना ऐसे होता है जैसे समंदर में वह एक बूँद ढूँढ़ना जो कभी आपकी आँख से गिरकर समंदर में मिल गई थी। जिसकी वजह से आपके हिस्से का समंदर खारा हो गया था।

घर की हर-एक चीज़ बहुत क़रीने से लगी हुई थी। बड़े घर के बावजूद वहाँ एक सादगी थी। थोड़ी ही देर में एक चपरासी ने आकर चाय के लिए पूछा और बताया कि साहब बस आ ही रहे हैं।

शालू की नज़र तभी सामने लगी एक बच्ची की फ़ोटो पर गई। वह कुमार आलोक की शक्ल उस बच्ची में ढूँढ़ने लगी।

राघव की नज़र रखे हुए अख़बार की हैडिंग पर थी। अख़बार बस खुला हुआ था लेकिन पढ़ कुछ नहीं पा रहा था। नज़र एक जगह टिक नहीं रही थी।

इस बीच एक सलीक़े से कपड़े पहने हुए, झड़े हुए बालों वाला, मोटा चश्मा लगाए एक आदमी आकर सामने बैठा।

“राघव अवस्थी, शर्मा जी का लखनऊ से फ़ोन आया था। बताइए मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?”

राघव ने शालू की तरफ़ देखा। शालू शॉक में थी कि ये वह कुमार आलोक तो नहीं है। राघव को समझ नहीं आ रहा था कि क्या बोले और

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू कुछ बोल क्यों नहीं रही। ये दोनों एक-दूसरे को पहचान क्यों नहीं रहे।

शालू अब तक कुमार आलोक की शक्ल हर तरीक़े से देख चुकी थी। उसको समझ आ गया था कि कुछ कन्फ़्यूज़न हुआ है। शालू ने ही सस्पेंस को ख़त्म करने के अंदाज़ में कहा, "हमें माफ़ करिएगा सर, लगता है कुछ कन्फ़्यूज़न हुआ है। हम लोग 93 बैच वाले कुमार आलोक को ढूँढ़ रहे हैं।"

"मेरा बैच 93 ही है।" सामने बैठे कुमार आलोक ने जवाब दिया।

उसने चपरासी को बुलाकर कंफ़र्म भी किया कि इन लोगों से कुछ खाने-पीने का पूछा गया है न।

"कुछ तो कन्फ़्यूज़न है। हम जिस आलोक को ढूँढ़ रहे हैं वह बिहार से था। 93 बैच में उनका सेलेक्शन हुआ था।"

सामने बैठे कुमार आलोक ने अपने दिमाग़ पर ज़ोर देते हुए याद किया।

"आपकी जानकारी एकदम दुरुस्त है। उस बैच में एक और कुमार आलोक था। ट्रेनिंग में भी था लेकिन एक महीने बाद ही वह एकैडमी [7] से छुट्टी लेकर गया और कभी लौटा ही नहीं। बस मेरी जानकारी इतनी ही है।"

कप में एक घूँट कम पूरी चाय बची थी। उस चाय को बरबाद होना था। जैसे राघव और शालू की अभी तक की यात्रा ज़ाया हो गई। इसके बाद कोई सवाल कम होने बजाय और बढ़ गए थे कि आख़िर वह गया कहाँ। वह ठीक तो होगा। वह होगा भी या नहीं। उसने कुछ कर तो नहीं लिया!

वहाँ से निकलने पर राघव ने पूछा, "अम्मा, आईएएस की नौकरी कोई कैसे छोड़ सकता है?"

शालू के पास इस सवाल को जोड़कर ख़ुद के भी कई सवाल थे। लौटते हुए उसकी आँखें सड़क पर होते हुए भी अनंत को ताक रही थीं।

शालू अपने अनुभव से इस सवाल के तमाम जवाब दे सकती थी। उसने सब सवालों को हवा में एक लंबी साँस खींचकर ख़ाली कर दिया और पूछा, "अपनी ट्रेन कितने बजे है?"

"दस बजे।"

शालू ने अपनी घड़ी में देखा अभी क़रीब 4 बज रहे थे।

"चल, तुझको अपना कॉलेज दिखाती हूँ।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हिंदू कॉलेज

चूँकि आज सोमवार था इसलिए कॉलेज में ठीक-ठाक भीड़ थी। सालों बाद कॉलेज लौटकर आना मतलब अपने-आप के खोए हुए हिस्से को दुबारा इत्मीनान से बनते और बिगड़ते हुए देखना।

हमने कितनी दूरी तय की इस बात को ठीक से तभी समझा जा सकता है जब हम ठीक वहीं पर आकर अपने क़दम को नापें जहाँ से सब शुरू किया था।

शालू ने राघव को वी-ट्री दिखाया। वह पेड़ उतना ही बूढ़ा था जितना कि तब जब शालू बीस साल की थी। शालू ने पेड़ को छुआ, पेड़ ने शालू को। पत्तियों ने अपने-आप को हिलाकर बताया कि वे ख़ुश हैं।

पेड़ ने शालू से सवाल पूछा, "तुम कैसी हो?"

"मैं ठीक हूँ, वैसी ही हूँ। तुम कैसे हो?"

"मैं भी ठीक हूँ, वैसा ही हूँ।"

यह बातचीत किसी ने नहीं सुनी। वे बातें जो कोई नहीं सुनता उनमें ईश्वर बसता है। ईश्वर हर उस जगह होता है जहाँ बातचीत चलकर थक जाती है। जो प्रार्थनाएँ क़ुबूल नहीं होतीं वह भी ईश्वर सुनता है।

इसके बाद वे सिंह साहब के ढाबे की जगह गए। वहाँ सब कुछ बदल चुका था। नहीं बदली थी तो लोगों की चाय की प्यास। पूरी ज़िंदगी बस आदमी की प्यास नहीं बदलती। बुझ जाने के बाद जैसे आदमी शांत हो जाता है। शालू ने चाय पीकर एक ज़माने को अंदर लिया और अंदर ही रोक लिया।

वह राघव को वह सब कुछ बता रही थी कि कहाँ उसने क्या-क्या किया था। राघव के सामने माँ नहीं अब एक बीस साल की लड़की थी।

"यहाँ हम नुक्कड़ नाटक करते थे।" शालू ने पास का ही एक प्वॉइंट दिखाते हुए कहा।

"तबका कोई डायलॉग याद है?"

शालू को डायलॉग याद करने के लिए बहुत ज़ोर नहीं लगाना पड़ा। उस जगह खड़े होते ही डायलॉग आ गए। पुरानी जगहें हमारी तस्वीर का अधूरा

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हिस्सा होती हैं। जब हम वहाँ पहुँचते हैं तो पता भी नहीं चलता कि हमारी ख़ुद ही तस्वीर पूरी हो गई। उसने तुरंत ही धारा-प्रवाह बोलना शुरू कर दिया।

"All the world's a stage,

And all the men and women merely players;

They have their exits and their entrances;

And one man in his time plays many parts…

… प्रेम, आह के धुएँ से बना एक बादल है… हम जानते हैं कि हम कौन हैं, मगर हम नहीं जानते हैं कि हम क्या हो सकते हैं… हम जानते हैं कि हम क्या हैं, लेकिन ये नहीं जानते की हम क्या बन सकते हैं।

If you love and get hurt, love more. If you love more and hurt more, love even more. If you love even more and get hurt even more, love some more until it hurts no more…"

राघव अम्मा का यह रूप देखकर सकते में था। हर एक डायलॉग के बाद शालू की शक्ल के भाव बदल रहे थे। शालू को भी यक़ीन नहीं था कि उसको इतने डायलॉग याद होंगे।

"अम्मा, कहाँ तुम सरकारी नौकरी में फ़ाइल बढ़ाने में फँसी हो! तुम को तो एक्टिंग करनी चाहिए। वैसे ये ख़तरनाक डायलॉग किसी एक प्ले के हैं?"

"नहीं, इतना याद नहीं लेकिन सारे प्ले शेक्सपियर बाबा के लिखे हुए हैं।"

शालू को बोलने के बाद याद आया कि उसके मुँह से शेक्सपियर बाबा निकला है।

"शेक्सपियर को बाबा तुम ही बोल सकती हो अम्मा।"

शालू ने सोचा कि राघव को बताए कि शेक्सपियर को बाबा बोलना उसने कुमार आलोक से सीखा था। उसने नहीं बताया। एक शब्द में इतनी ताक़त होती है कि वह हमें अपने पास खींचकर वहाँ ले जाए जहाँ हम सालों से नहीं गए। शेक्सपियर बाबा वही शब्द था। हम सभी की ज़िंदगी में एक ऐसा शब्द ज़रूर होता है जिसका हाथ पकड़कर हम एक झटके में वहाँ लौट जाते हैं जहाँ से चले थे और लौटने का रास्ता भटक गए थे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इसके बाद शालू एडमिन ब्लॉक की तरफ़ बढ़ी। अब भी उनके पास बहुत टाइम था। सामने टेबल पर बैठे शर्मा जी दिखे जो अब बूढ़े हो चुके थे। शालू उनको एक बार में पहचान गई। कॉलेज के सभी एडमिन के काम शर्मा जी देखा करते थे।

वह उनके पास गई। उसने टेबल पर उनका नाम पढ़कर कन्फ़र्म किया कि ये वही हैं कि उसको ग़लत याद आ रहा है। शर्मा जी अपना उस दिन का काम लगभग समेट चुके थे। उन्होंने शालू और राघव को अपने पास आता देख बिलकुल इग्नोर ही कर दिया था।

"शर्मा जी, हॉस्टल में मच्छर बहुत हैं।"

उन्होंने बिना सुने ही टाल दिया।

"कल आकर बताइएगा।"

"आज ही कुछ करिए।" शालू ने हँसी को रोकते हुए कहा।

"बोला न कल से पहले कुछ नहीं होगा। इतना ही है तो कछुआ लगा लीजिए।" अब शर्मा जी ने शालू की तरफ़ पहली बार देखा। वह इतना तो समझ चुके थे कि ये कोई स्टूडेंट नहीं है।

वह शालू को पहचानने की कोशिश कर रहे थे।

"92 बैच, शालू।"

"शालू अवस्थी, तुम्हें कैसे भूल सकते हैं!" शर्मा जी ने अपने चश्मे को जेब के रूमाल से साफ़ किया। अपना छोटा-सा बैग वहीं टेबल पर रख दिया। टेबल की घंटी बजाकर चेक किया कि कोई चपरासी है जो चाय पिला दे। सब चपरासी जा चुके थे।

"कोई बात नहीं सर, तब भी घंटी बजने से कोई नहीं आता था।"

शालू और शर्मा जी दोनों ही हँसे। राघव हॉस्टल के इस ऑफ़िस को अपनी आँखों में भर रहा था।

आंदोलन के समय शर्मा जी ने सभी बच्चों की हर-संभव मदद की थी, चाहे वे प्रो या एंटी-रिज़र्वेशन हों। शर्मा जी को अब कॉलेज से लौटकर जाने की कोई जल्दी नहीं थी।

शालू ने उन्हें राघव के विदेश जाने के बारे में बताया। शर्मा जी से रिक्वेस्ट करके शालू ने ऑडिटोरियम को देखा। उसके स्टेज पर जाते ही

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

पूरा हाल तालियों से भर गया। वो तालियाँ जिसकी आवाज़ केवल शालू को सुनाई पड़ रही थीं। स्पॉटलाइट अब शालू पर थी। पूरे हाल में अँधेरा था। ये सब कुछ केवल शालू के अंदर की बीस साल की लड़की महसूस कर पा रही थी।

चलने से पहले शालू ने राघव को शर्मा जी के पैर छूने को कहा। उसने शर्मा जी से पूछा, "अंकल, आपके यहाँ सभी पढ़ने वालों के रिकॉर्ड होते हैं। मतलब कि स्टूडेंट का पर्मानेंट एड्रेस वग़ैरह?"

"बिलकुल होते हैं। अब तो सब कंप्यूटराइज़्ड हो गया है। क्यों क्या हुआ?"

"पुराने बैच का भी मिल जाएगा?"

"सब मिल जाएगा।"

राघव की बात से शालू समझ चुकी थी। उसने पहले ही बात काट दी लेकिन राघव कहाँ मानने वाला था! वह इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं था।

शालू के मना करने के बाद भी शर्मा जी अपने सिस्टम के आगे पुराने बैच का डाटा खोलकर बैठे हुए थे। उनको हर एक साल का रिकॉर्ड देखने में देर लग रही थी। इतने में राघव ने ख़ुद ही कमान अपने हाथ में ली और अपनी मम्मी के बैच तक पहुँच गया।

उसने कुमार आलोक का पर्मानेंट एड्रेस वहाँ से लिया। एड्रेस बोधगया का था।

शालू शर्मा जी के सामने राघव पर चिल्ला भी नहीं सकती थी। शर्मा जी से विदा लेकर दोनों जैसे ही कॉलेज से निकले, शालू चिल्ला पड़ी, "क्या ज़रूरत थी, तुझे बात समझ में नहीं आ रही?"

"अम्मा, एक बार ट्राई करने में क्या है!"

"मुझे नहीं करना ये सब, तू जाने से पहले क्यों मुझे इतना परेशान कर रहा है?"

राघव असल में परेशान करना नहीं चाहता था लेकिन बिना परेशान किए बात आगे बढ़नी मुश्किल थी। वह ख़ुद भी अँधेरे में तीर मार रहा था।

"कॉलेज आना ही नहीं चाहिए था। ख़ैर, ट्रेन का चेक कर टाइम से है?"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"फ़र्क़ नहीं पड़ता, हम यहाँ से लखनऊ नहीं पटना जा रहे हैं।"

शालू जितनी तेज़ घूर सकती थी, उसने घूरा। जितनी आँखें बड़ी कर सकती थी उसने कर दी।

दोनों में रास्ते भर कोई बात नहीं हुई।

गेस्ट हाउस में जब दोनों बैठे थे।

"अम्मा!"

शालू ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अम्मा!"

इस बार भी शालू ने कोई जवाब नहीं दिया।

"अम्मा!"

शालू ने राघव की तरफ़ देखा, "क्या है?"

"अम्मा, प्रॉमिस! बस लास्ट चांस।"

"कोई लास्ट चांस नहीं। मुझे तेरी बात में आना ही नहीं चाहिए था। फ़ालतू ही दिन से दिमाग़ ख़राब है।"

"अम्मा यार, अब तो जा ही रहा हूँ।"

"अब्बे अब तो जा ही रहा हूँ के नाम पर कितना इमोशनल ब्लैकमेल करेगा?"

"अम्मा, कैसी भाषा बोल रही? लैंग्वेज सुधारो अपनी।"

"अब्बे भाषा गई भाड़ में, मैं बता रही हूँ, मैं यहाँ से लखनऊ जा रही हूँ। तुझे बोधगया जाना हो चाहे जहन्नुम, जहाँ भी जाना है तू अकेला जा।"

राघव को समझ आ गया था कि शालू से झगड़ना बेकार है। वे स्टेशन के लिए गए। स्टेशन पर डिस्प्ले में लखनऊ वाली के ठीक नीचे ही बोधगया वाली ट्रेन की सूचना चमक रही थी। उनका रिज़र्वेशन तो था नहीं।

राघव ने बोधगया वाली ट्रेन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "अम्मा प्लीज़!"

शालू ने कम-से-कम दस तरीक़े के मुँह बनाए और बोली, "जा जेनेरल टिकिट लेकर आ। टीटी से ही बात करनी पड़ेगी।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

पटना वाली ट्रेन आकर लगी और टीटी के पास लोग ऐसे आकर खड़े हो गए जैसे शहद के पास मक्खियाँ।

“अम्मा, इतनी भीड़ है सीट मिलना मुश्किल है।”

“देखने दे, एक काम कर। टीटी के कोट पर नाम लिखा होगा। ज़रा पढ़कर बताना।”

“सुरेश कुमार दुबे लिखा है अम्मा।”

अब शालू के जादू दिखाने की बारी थी। उसने भीड़ में घुसकर पुकारा, “अरे दुबे जी, पहचाना?”

दुबे जी को हवा नहीं थी। इतने लोगों की भीड़ में कहाँ किसको पहचानते! वह तो उस समय दो का पहाड़ा पढ़ने के जुगाड़ में थे कि कैसे दो दूनी चार, चार दूनी आठ करके जेब भरें।

इससे पहले वह कुछ जवाब देते शालू ने दुबारा कह दिया, “भाभी जी कैसी हैं? इधर बहुत दिनों से आई नहीं वह?”

अब दुबे जी को लगा कि बीवी की बात कर रही है। कपड़े भी सही पहने हैं। दुबे जी ने एक-दो लोगों को डाँटा, “देख नहीं रहे हैं बात हो रही है!”

“मैं कह रही थी कि बढ़िया रहा, आप मिल गए। आप तो बीच में दूसरी वाली ट्रेन लेकर जाते थे न!”

“हाँ, अभी कुछ दिन पहले ही रूट बदला मैडम।”

शालू को भारतीय रेलवे के एक बोर्ड मेंबर का नाम पता था। इससे पहले दुबे जी कुछ और पूछते वह ख़ुद ही बोल पड़ी।

“मैंने तो भाभी को बताया था। अपने सारंग साहब का बेटा, मेरे बेटे के साथ ही पढ़ता है। दोनों में बहुत दोस्ती है। कोई काम पड़े तो आप बता दीजिएगा।”

शालू ने अपनी एक्टिंग के जलवे दिखा दिए थे।

शालू और राघव मस्त सीट पर बैठकर आए। उन्होंने पैसे देकर टिकट बनवा लिया। टिकट पर नाम लिखते हुए दुबे जी ने शालू अवस्थी का नाम लिखा। इससे पहले वह कुछ और हिसाब लगाते। शालू ने अपना नंबर भी दे दिया कि कुछ भी काम रहे तो बेझिझक कॉल कर लें।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव अपनी अम्मा से एक दम इम्प्रेस्ड था। उसकी हँसी नहीं रुक रही थी। शालू ने अपनी टोन में नक़ली ग़ुस्सा लाते हुए कहा, “ये आख़िरी बार कर रही हूँ। अब अगर तूने बोला कि अब तो जा ही रहा हूँ तो कुछ नहीं करूँगी।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बोधगया

बिहार की राजधानी पटना के दक्षिण-पूर्व में लगभग 101 किलोमीटर दूर स्थित बोधगया गया शहर से सटा एक छोटा शहर है। बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे तपस्या कर रहे भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तभी से यह स्थल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। साल 2002 में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

दिन में क़रीब डेढ़ बजे ट्रेन 'गया' पहुँची। यहाँ से आगे बस उनके पास एक एड्रेस था और चुटकी भर उम्मीद। राघव ने वापसी की ट्रेन का पता कर लिया था। उनके ख़याल में था कि एड्रेस वाली जगह से कुछ-न-कुछ पता चल ही जाएगा फिर वहाँ से देखेंगे।

बोधगया में बहुत सारे विदेशी पर्यटकों की भरमार थी। बाहर से लोग यह देखने आते थे कि कैसे एक राजा ने अपना राजपाट छोड़कर एक संन्यासी बनने की ठानी।

राजकुमार सिद्धार्थ ने एक लंबी और कभी न ख़त्म होने वाली ऊब की वजह से गौतम बुद्ध बनने के बारे में सोचा होगा शायद। ज़िंदगी से होने वाली एक लंबी ऊब बुद्ध होने की संभावना है।

शालू के मन में तमाम सवाल चल रहे थे। इतने में ऑटो वाले एक जत्थे ने उनको घेर लिया।

"पिंड दान करना है?"

"होटल चाहिए?"

"दस रुपये में छोड़ देंगे।"

जो ऑटो वाला कुछ नहीं बोल रहा था। राघव उसके पास गया। कुमार आलोक के घर का पता ऑटो वाले को दिखाने पर उसने बताया कि पड़रिया पंचायत तो अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल से क़रीब दो किलोमीटर दूर है।

"मुझे लग रहा है कि हमें नहीं जाना चाहिए। Let's not complicate it." शालू ने राघव से ऑटो में बैठते हुए कहा।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"अरे अम्मा, कुछ नहीं होगा। और कुछ नहीं भी हो तो बोधगया के बारे में मैंने गूगल किया है, यहाँ घूम ही लेंगे। पापा के पिंड दान की पूजा यहीं हुई थी?" राघव ने ऑटो से बाहर बीतते हुए शहर के अनजान चेहरों पर नज़रें फिराते हुए पूछा।

"हाँ, यहीं हुई थी।"

"तब तो आप पहले आए होंगे यहाँ?"

शालू उस समय को याद नहीं करना चाहती थी।

"मैं आई थी। तुम्हारे दादा जी भी आए थे।"

ऐसे शहर में जहाँ सब कुछ अनजाना हो और आप किसी एक ऐसे चेहरे की तलाश में हों जिससे जान-पहचान तो गहरी है लेकिन आप शक्ल भूल चुके हों तो रास्ते में मिलने वाला हर चेहरा जाना-पहचाना लगने लगता है।

पते वाला घर पक्के ईंट का बना हुआ था। घर के बाहर भैंस बँधी थी। राघव ने जब दरवाज़ा खटखटाया तो एक बूढ़े बाबा ने दरवाज़ा खोला। उनके चश्मे से समझा जा सकता है कि उनको देखने में बहुत ज़ोर पड़ रहा था और उनको सुनाई भी कम दे रहा था।

"ये कुमार आलोक जी का घर है?"

"कौन बचवा?"

"आलोक, कुमार आलोक।"

"कौन हो, कहाँ से आए हो बचवा?"

"हम लोग लखनऊ से आए हैं। उनके कॉलेज से पता मिला है।" राघव ने बताया।

बूढ़े ने दरवाज़ा खोलकर उनको अंदर बुलाया। एक बच्ची को पानी लाने के लिए इशारा किया।

शालू और राघव उस घर की एक-एक चीज़ को ध्यान से देख रहे थे।

बाबा कहीं शून्य में थे। वह घर के अंदर से एक पुराने न्यूज़ पेपर की कटिंग लेकर आए। उसमें कुमार आलोक के यूपीएससी में सेलेक्शन की ख़बर थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव ने उस अख़बार को हाथ में लेकर देखा। शालू ने भी उस ख़बर को पढ़ा।

"बाबा, अब कहाँ हैं आलोक जी?"

"पता नहीं बचवा, साल में एक बार आता है। पिछले दो साल से नहीं आया। जब नौकरी छोड़कर आया तो हमारा बहुत झगड़ा हुआ। हम उसकी शादी का पैसा ले चुके थे। बस तबसे आज तक नाराज़ है। आप लोगों को क्या काम था?"

"उनका कोई नंबर है आपके पास?" राघव ने पूछा।

"कोई नंबर नहीं है लेकिन हाँ कुछ चाहिए होता है तो उसके एक दोस्त का नंबर है। वही सब भिजवा देता है।"

चलने से पहले शालू ने राघव को बाबा के पैर छूने को कहा। राघव ने वह नंबर नोट कर लिया। पेपर की उस कटिंग की फ़ोटो खींची। घर से निकलते ही राघव ने उस नंबर पर फ़ोन मिलाने के लिए फ़ोन निकाला ही था कि शालू बोली, "मत मिला।"

"अम्मा जब यहाँ तक आ गए हैं तो अब बिना मिले तो नहीं जाने वाला मैं।"

ऑटो वाला इंतज़ार कर रहा था।

"हाँ जी बाबू, कहाँ छोड़ना है आप लोगों को? बताइए तो किसी होटल में करवा देते हैं।"

राघव ने फ़ोन मिलाया। उधर से एक लड़की ने फ़ोन उठाया।

"जी मैं कुमार आलोक से बात करना चाहता हूँ।" राघव ने कॉल उठाते ही बोला।

"सर, आपने ग़लत नंबर मिलाया है, ये तो पुत्तन भइया के ऑफ़िस का है।"

"तो पुत्तनजी से बात करवा दीजिए।"

"सर तो बिज़ी हैं।"

"देखिए हमारा मिलना बहुत ज़रूरी है। एक मिनट के लिए ही उनसे बात करा दीजिए।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"रुकिए देखते हैं। नाम क्या बताया आपने और किस सिलसिले में बात करनी है?"

राघव के पास इस सवाल का कोई सीधा जवाब नहीं था। उस लड़की ने फ़ोन होल्ड कराया और फिर फ़ोन कट गया।

राघव ने दोबारा फ़ोन मिलाया।

"जी पुत्तन भइया से बात करनी है।"

उधर से इस बार लड़की की नहीं पुत्तन भइया की आवाज़ आई।

"आप कौन साहब?"

"जी मैं लखनऊ से आया हूँ। मुझे कुमार आलोक से मिलना है।"

"हम नहीं जानते उनको?" पुत्तन भइया ने फ़ोन रखने के अंदाज़ में कहा।

राघव को यह शक हुआ कि हो-न-हो कि पुत्तन भइया ही कुमार आलोक हैं। राघव ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "देखिए मैं कुमार आलोक जी के पिताजी से अभी मिला था उन्होंने आपका नंबर दिया है।"

यह सुनकर पुत्तन भइया फ़ोन काटने से पहले रुके।

"क्या नाम है आपका?"

"राघव अवस्थी। मैं अपनी माँ शालू अवस्थी के साथ कुमार आलोक जी के घर के बाहर हूँ। उनसे मेरा मिलना बहुत ज़रूरी है।"

"हम पाँच मिनट में फ़ोन करते हैं।" यह कहकर पुत्तन भइया ने फ़ोन रख दिया।

ऑटो वाले ने दुबारा पूछा, "भइया बताइएगा सस्ता और बढ़िया होटल दिलवा देंगे। पंडित जी भी होटल में ही मिल जाएँगे।"

ऑटो वाला यही समझकर बात कर रहा था कि ये लोग किसी पिंड दान के लिए आए हैं।

ठीक पाँच मिनट बाद पुत्तन भइया का फ़ोन आया।

"आधे घंटे में एक गाड़ी आपके पास पहुँच जाएगी। हम पटना में हैं आप आ जाइए। आप लोगों को आने में टाइम लग जाएगा। आपके रुकने का

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इंतज़ाम हमारे गेस्ट हाउस में हो गया है। कल सुबह आपसे नाश्ते पर मुलाक़ात होती है।"

राघव ने धन्यवाद कहना चाहा लेकिन उससे पहले ही फ़ोन कट चुका था। फ़ोन रखने के कुछ ही देर बाद गेस्ट हाउस के केयरटेकर का नंबर आ चुका था।

राघव को यक़ीन था कि पुत्तन भइया ही कुमार आलोक हैं।

वे रात में पटना पहुँच गए। राघव ने रास्ते में ड्राइवर से पुत्तन भइया के बारे में जानना चाहा लेकिन ज़्यादा कुछ पता नहीं चला सिवाय इसके कि पुत्तन भइया के तमाम एनजीओ और स्कूल हैं। गेस्ट हाउस एक तीन कमरे का फ़्लैट था। जहाँ सब कुछ बहुत हिसाब से रखा हुआ था। कमरे में बहुत-सी किताबें थीं। किताब में गाँधी से लेकर बुद्ध तक, माओ से लेकर कमुनिस्ट मेनीफ़ेस्टो तक दुनिया भर की किताबें थीं।

गेस्ट हाउस का केयरटेकर एक लड़का था जिसकी उम्र लगभग 25 साल होगी। उससे भी राघव ने पुत्तन भइया के बारे में जानने की कोशिश की लेकिन उसको ज़्यादा पता नहीं था।

उसने बस यही बताया कि बहुत कम लोग यहाँ आते हैं। दिन भर चलने के बाद शालू और राघव दोनों ही अच्छा-ख़ासा थक चुके थे।

लड़के ने खाना बहुत अच्छा बनाया था। राघव खाते ही सो गया। राघव के सोने के बाद शालू किताबों की अलमारी को बहुत देर तक उलटती-पलटती रही। सोने से पहले वह अपनी डायरी में कुछ देर तक लिखती रही। बीच में राघव की नींद भी टूटी।

"क्या लिख रही हो अम्मा?"

"कुछ नहीं तेरे जाने से पहले के काम लिख रही हूँ। सो जा।"

"अम्मा?"

"क्या?"

"सुला दो।"

शालू डायरी वहीं रखकर राघव का सिर सहलाने लगी। यूँ तो बहुत छोटे से ही राघव अकेले सोता था लेकिन कभी-कभार वह कुछ डरावना सपना देखता तो शालू के पास आकर उसको सुलाने के लिए कहता।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव को सुलाने के बाद शालू कुछ देर तक अपनी डायरी के साथ बैठी रही।

सुबह ठीक साढ़े आठ बजे पुत्तन भइया का फ़ोन राघव के पास आया कि गाड़ी नीचे ही है। आप लोग साढ़े नौ तक ऑफ़िस ही आ जाएँ।

शालू चूँकि बहुत देर में सोई थी तो वह अभी तैयार ही हो रही थी।

वे समय पर पुत्तन भइया के ऑफ़िस के बाहर थे। ऑफ़िस पटना शहर से थोड़ा बाहर था। ऑफ़िस से जुड़ा हुआ ही एक स्कूल था। पास में ही मसाले और पापड़ बन रहे थे। ऑफ़िस बड़ा होते हुए भी साधारण था। ऑफ़िस के बाहर ही पुत्तन भइया की Royal Enfield Classic खड़ी थी।

पुत्तन भइया क़द काठी से छह फुट हट्टे-कट्टे व्यक्ति थे। बढ़ी हुई दाढ़ी, सफ़ेद कुर्ता-पाजामा, सफ़ेद जूता और लाल गमछा पहने वह बाहर आए। बिहार के दबंग नेताओं जैसी पर्सनैलिटी के पुत्तन भइया बातचीत के टोन से भी वैसे ही लग रहे थे।

राघव ने शालू की तरफ़ देखा। पुत्तन भइया ने शालू की तरफ़ देखा। नाश्ता पहले से लगा हुआ था। टेबल पर बैठते ही राघव ने कहा, "आपने इतनी हेल्प की। बहुत-बहुत थैंक यू!"

"बाबू, मदद की का बात है! पुत्तन भइया का जनम ही मदद करने के लिए हुआ है।"

राघव ने शालू से इशारों में पूछा, "यही है न?"

शालू ने बताया, "नहीं।"

राघव की सब उम्मीद पर पानी फिर चुका था। उसको लगा था कि पुत्तन भइया ही कुमार आलोक होंगे।

राघव ने बात शुरू करनी चाही। इस पर पुत्तन भइया ने कहा, "पहले नाश्ता कर लीजिए, फिर आराम से बात होती है।"

नाश्ते के बाद शालू आसपास का स्कूल देखने के लिए निकल गई। राघव वैसे भी पुत्तन भइया से अलग से बात करना चाह रहा था। उसने सारी बात संक्षेप में बता दी।

"बाबू, हम जानते थे कुमार आलोक जी को, लेकिन उनसे मिले अब सालों हो गए। काश कि हम आपकी कोई मदद कर पाते।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"फिर आप उनके घर पर मदद क्यों करते हैं?"

"वो तो हम सैकड़ों परिवारों की मदद करते हैं।"

यह कहते हुए पुत्तन भइया ने अपने ऑफ़िस से एक लड़के को बुलाया। उस लड़के ने पूछने पर बात भी कन्फ़र्म कर दिया कि ऐसे सैकड़ों परिवार हैं जहाँ पर मदद जाती रहती है।

शालू अब तक वह जगह घूमकर आ चुकी थी। उस जगह में सुकून था। उसने क्लास में पढ़ती हुई बच्चियों को खेलते देख उनके साथ अंताक्षरी भी खेली।

वह भूल ही चुकी थी कि वह यहाँ आई ही क्यों थी।

पुत्तन भइया से कुछ भी पूछने पर हर बार जवाब वही मिल रहा था। एक समय के बाद राघव को यक़ीन हो गया कि इसको सही में कुछ नहीं पता।

राघव यहाँ तक आकर भी ख़ाली हाथ जा रहा था इस बात का उसको यक़ीन नहीं हो रहा था। उधर शालू सुबह से ही ज़्यादा कुछ बोल नहीं रही थी।

पुत्तन भइया ने ट्रेन का पता कर दिया था। वह राघव के मना करने के बाद भी स्टेशन छोड़ने आया। उसने स्टेशन मास्टर से बात करके सीट का इंतज़ाम करा दिया था। पुत्तन भइया का हर जगह जलवा था। उसकी हर बात से यही लग रहा था। स्टेशन पहुँचने पर भी कई लोगों ने पुत्तन भइया के पैर छूए।

ठीक से बैठाने के बाद जब ट्रेन चलने वाली थी। तब पुत्तन भइया ने शालू से कहा, "दीदी, अगर कुमार भइया का कुछ पता चलेगा तो हम बता देंगे, आप बेफ़िक्र होकर जाएँ।"

शालू ने कुछ नहीं कहा। जाने से ठीक पहले पुत्तन भइया ने आख़िरी बार घूमकर अपने हाथ जोड़े, "अच्छा पहुँचकर बताइएगा।"

"राघव दस अक्टूबर को जा रहा है।" शालू ने धीमे से कहा।

पुत्तन भइया ने लौटकर कहा, "राघव बाबू, अब जब छुट्टी में आइएगा तो इधर भी आइएगा। आपको बोधगया घुमाएँगे। हमारे यहाँ के बच्चों को भी कुछ सिखाइएगा। ताकि कल को वह भी विदेश जाएँ। दुनिया भर में नाम करें।"

राघव बढ़कर पुत्तन को गेट तक छोड़ने गया। ट्रेन चल दी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

शालू की नज़र स्टेशन के बाहर तब तक थी जब तक स्टेशन दिखना बंद नहीं हो गया। बहुत देर तक शालू और राघव की कोई बात नहीं हुई।

पुरानी चिट्ठियों पर लिखे पतों तक पहुँचकर शब्दों के सिरों को पकड़ना, बच्चे के तितली पकड़ने जैसा मुश्किल होता है। जितना भागो तितली उतना ही आगे बढ़ जाती है।

राघव के हाथ में आते-आते वह तितली फिसल चुकी थी। तितली फिसलने का उतना दुख नहीं था जितना कि उम्मीद के टूटने का था।

राघव ने टॉयलेट जाकर अपना मुँह दस मिनट तक धोया। उसके आँसू के निशान चेहरे और आँखों से मिट ही नहीं रहे थे। शालू की नज़र अब भी खिड़की पर थी। सब कुछ पीछे छूट रहा था।

खिड़की से बाहर देखते हुए राघव ने शालू से पूछा, "एक बात सही-सही बताओगी?"

"पूछ।"

"पापा, अच्छे आदमी थे?"

शालू ने अपनी नज़र खिड़की से हटाकर राघव की आँखों में डालते हुए कहा, "बहुत अच्छे थे। मैं ही अलग तरह के माइंड स्पेस में थी। अगर हम वैसे नहीं मिले होते तो हममें बहुत प्यार भी हो सकता था।"

"अम्मा, पापा ने जाने से पहले मेरे लिए कुछ बोला था?"

शालू ने राघव का हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया और उसका सिर सहलाने लगी।

"हाँ, कहा था कि राघव को मुझसे ज़्यादा अच्छा आदमी बनाना।"

"अम्मा, पापा ने आख़िरी चीज़ क्या बोली थी?"

"उनको जाने में बहुत दिक़्क़त हो रही थी। मैंने उनका हाथ ज़ोर से पकड़ा हुआ था। वह बोले कि थक गया यार, बहुत तेज़ नींद आ रही है। मरने से कुछ मिनट पहले उनको तुम्हारी दादी दिख रही थीं।"

"लेकिन दादी तो बहुत पहले ही मर गई थीं।"

"हाँ, होता है ऐसा मरने से ठीक पहले कई बार कोई-न-कोई दिखता है।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"अगर दादी दिखीं तो कितना अच्छा है न अम्मा, जिस इंसान ने पैदा किया वही आख़िर में लेने आया।"

"हाँ शायद!"

"कोई और बात बताओ पापा की?"

"क्या बताऊँ, तू पूछ।"

"आपको क्या कहा था पापा ने?"

शालू कुछ देर चुप हो गई। राघव के सिर का हाथ रुक गया। उसने खिड़की से बाहर देखा और बोली, "वो बोले थे शादी कर लेना।"

"और तुमने क्या जवाब दिया था?"

"जवाब सुनने तक वो नहीं थे।"

ट्रेन की आवाज़ ने आकर ख़ामोशी को घेर लिया। अब राघव को समझ आ चुका था कि अपनी शादी की बात पर शालू क्यों इतना ज़्यादा परेशान हो जाती है। कुछ चीज़ें आख़िरी साँस तक अटकी रहती हैं।

उधर पुत्तन भइया स्टेशन से निकलकर गेस्ट हाउस पहुँचे। वहाँ किताब की अलमारी के पास एक आदमी बैठा था। उसने सादे कपड़े पहने थे। गले में गमछा था। आँखों में मोटा चश्मा। आधे से ज़्यादा बाल सफ़ेद थे। पुत्तन भइया ने आते ही उसके पैर छूए।

"जगह मिल गई थी न?"

"हाँ भइया, बाक़ी कोई सेवा हो तो बताइए?"

"कुछ रहेगा तो बोल देंगे। वे लोग कुछ कह रहे थे?"

"नहीं भइया, ऐसा कुछ ख़ास नहीं। चलते हुए बस मैडम बोलीं कि बाबू की अमेरिका वाली फ़्लाइट दस अक्टूबर को है।"

"ठीक है। और कुछ?"

"बस कुछ नहीं भइया, हाँ नर्मदा वाली दीदी 25 सितंबर को इलाहाबाद पहुँच रही हैं। बनवारी दा की बरसी है।"

"ठीक, चलो हम कुछ आराम करेंगे।"

पुत्तन भइया वहाँ से उठकर जाने लगे। कुछ सोचकर वह लौटे।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"आलोक भइया, एक बात पूछें?"

"पूछो।"

"आप कुछ परेशान लग रहे हैं। आपको ऐसे देखे नहीं कभी।"

"ऐसा क्यों बोल रहे हो?"

"आप सिगरेट नहीं पीते, सामने एशट्रे में पाँच-ठो सिगरेट का बड पड़ा है। सब ठीक है न भइया? हमें पता है आपको नहीं बताना होगा तो नहीं बताएँगे लेकिन भइया हम जो कुछ भी हैं आपकी वजह से हैं। आपकी परेशानी हमारी परेशानी है। आप अगर नहीं बताएँगे तो हमें लगेगा कि आप हमें अपना नहीं समझते।"

उस आदमी ने पुत्तन को बीच में ही रोका और कहा, "पुत्तन, बाबू कोई बात नहीं है। कुछ होगा तो हम ज़रूर बोल देंगे। इन लोगों का लखनऊ का पता ले लेना। इलाहाबाद जाएँगे तो लखनऊ होते हुए वापस आएँगे। मेधा दीदी की टीम को बता दो, हम आएँगे।"

पुत्तन के जाने के बाद से उस आदमी ने यानी 'कुमार आलोक' ने अलमारी खोली और किताबें पलटकर देखने लगा।

उधर शालू ने ट्रेन में करवट ली और सोने की कोशिश करने लगी। राघव मोबाइल पर निशा से बात करने लगा।

राघव की ज़िंदगी में चलती ट्रेन जितनी उथल-पुथल थी लेकिन बाहर से सब कुछ नॉर्मल लग रहा था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

साल 1994

मसूरी में ट्रेनिंग के दौरान एक डाइरेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस आए। ऑफ़लाइन जब वह नए बैच के कुछ लोगों से मिले तो उन्होंने बोर्ड पर आकर एक नंबर लिखा और कहा, "सब लोग इसको नोट कर लीजिए। आगे बहुत काम आने वाला है।"

उन्होंने उस नंबर के बारे में कुछ ज़्यादा बताया नहीं। बाद में बैच के लोगों ने अपने-आप हिसाब लगा लिया कि वह नंबर हवाला का है।

एकेडमी में अलग क़िस्म का कास्ट सिस्टम था। यहाँ जो IAS और IPS थे वे अपर कास्ट थे और बाक़ी लोग अन्य।

कुमार आलोक जिस चीज़ से भाग रहा था उसका पीछा यहाँ भी नहीं छूटा।

बोधगया का होने की वजह से कुमार आलोक की शख़्सियत पर और कोई असर पड़ा था या नहीं लेकिन उसने बचपन से गौतम बुद्ध को इस वजह से बड़ी इज़्ज़त की नज़र से देखा था कि उन्होंने राजपाट एक झटके में छोड़ दिया था। हालाँकि जब उसकी समझ बढ़ी तो उसने गौतम बुद्ध की कहानी को यशोधरा की नज़र से देखा। एक आदमी जो सब कुछ छोड़कर भागा उसके पास कितने लोगों ने शरण ली। अगर वह नहीं जाता तो उन हज़ारों लोगों का क्या होता, उनको कौन गौतम मिलता?

भगौड़ा हो जाना उन तमाम लोगों की तरह एक नक़ली ज़िंदगी जीने से बेहतर है जो होकर भी वहाँ नहीं रहते हैं, जिस पते पर उनके घर बैंक स्टेटमेंट, शेयर के काग़ज़ और रोज़ सुबह अख़बार की ताज़ा रद्दी आती है।

इस देश की सबसे बड़ी नौकरी को एक महीने के अंदर छोड़ने का फ़ैसला करना इतना भी आसान नहीं था लेकिन कुमार आलोक के पास इस फ़ैसले को लेने की कोई एक वजह नहीं थी।

वह अपने पिता से नाराज़ था कि उन्होंने उसकी शादी उससे बिना बताए पैसा लेकर तय कर दी। उसे इस बात का गुस्सा था कि शालू अब उसके साथ नहीं थी। वह जिस जाति की लड़ाई लड़ रहा था वह मसूरी में भी उतनी ही थी। वह बात अलग है कि इस तरह की बातें यहाँ दबी ज़बान से होती थीं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसने लौटने का फ़ैसला तो कर लिया लेकिन उसके पास अब कोई ऐसी जगह नहीं बची थी जहाँ वह लौटकर जाता और उसे चैन मिलता। उसने एक-दो बार मरने का भी सोचा। वह मरने के लिए गया भी लेकिन हर बार जब वह मरने जाता कोई एक आवाज़ उसको रोक लेती। वह आवाज़ किसकी थी उसको पता नहीं लेकिन उस आवाज़ में एक बच्चा था, एक कोयल थी, उस आवाज़ में नदी का बहना था, जंगल का शोर था। वह हर तरीक़े से ख़ाली हो चुका था।

ख़ाली हो जाना नई ज़िंदगी में रखा हुआ पहला क़दम होता है।

वह लौटकर कलकत्ता गया। उसने मदर टेरेसा के यहाँ कुछ दिन सेवा की, दिल्ली में दरगाह में बैठा, बोधगया लौटकर पिंडदान करते हुए लोगों को देखता रहा। उसको कहीं चैन नहीं मिला।

ऐसे भटकते हुए एक दिन वह बस्तर के जंगलों में पहुँचा। वह वहाँ तक पहुँचा जहाँ सरकार की कोई स्कीम नहीं पहुँची थी। बस इसी भटकने में उसको याद आया कि उसने कभी शालू को वादा किया था कि अगर वह यूपीएससी क्लियर नहीं करता तो भी वह दुनिया बदलने की कोशिश करता।

हर किसी को पता है कि पत्थर उछालने से आसमान में छेद नहीं होता लेकिन पत्थर उछालने में क्या है। कई बार आसमान भी पत्थर के इंतज़ार में होता है।

उसने गाँव वालों और बच्चों के लिए काम करते हुए अपने-आप को पीछे कर लिया। अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए उनसे पुत्तन भइया जैसे लोगों की एक फ़ौज बना दी।

वह इस देश के बड़े-से-बड़े सोशल एक्टिविस्ट के टच में था। बस सामने से कोई कुमार आलोक नाम से नहीं जानता था। इस दौरान वह न जाने कितनी बार जेल गया। पुत्तन भइया जैसे लोग कुमार आलोक के काम का चेहरा थे। उसको उम्मीद नहीं थी कि एक दिन ऐसा होगा कि ज़िंदगी उसको वहाँ लाकर फिर से पटक देगी।

अलमारी से किताबें पलटते हुए उसको शालू की लिखी हुई चिट्ठी मिली। शालू ने जिस उम्मीद से उस रात में चिट्ठी लिखी थी, वह पहले ही समझ चुकी थी कि आलोक कहीं आस-पास ही है। आलोक ने भी उन तमाम किताबों में से वो चिट्ठी ढूँढ़ ली शायद इसलिए क्योंकि शालू और राघव के उस दिन पटना आने से पहले बाक़ी घर से तो उसके निशाँ मिट

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

गए थे लेकिन वह अपनी पुरानी किताबें हटाना भूल गया था। इसीलिए शालू ने जो इकलौती चिट्ठी लिखी वो अपने सही पते पर थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आलोक,

इतने सालों बाद ये नाम हाथ से लिखा होगा। उम्मीद है कि तुम ठीक होगे। मुझे पता है कि तुम आसपास हो। राघव अमेरिका जाने से पहले तुमसे मिलना चाहता है और अब मैं भी यही चाहती हूँ।

हो सके तो जाने से पहले आ जाना।

प्यार,

इब्नेबतूती, 10 अगस्त 2015 2015

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुमार आलोक के हाथों में एक भीगी हुई चिट्ठी दुबारा भीग चुकी थी। उसमें पिछले कई सालों की बरसात का पानी था। उस चिट्ठी में इस दुनिया का वह इतिहास दर्ज था जो इस दुनिया को जीने लायक़ बना सकता था। वे सारे इतिहास जो इस दुनिया को जीने लायक़ बनाते हैं वे उन चिट्ठियों में खो जाते हैं जो कभी लिखी ही नहीं जातीं। और अगर लिखी भी जाती हैं तो वो बिना पते के खो जाती हैं। पता होते हुए भी पोस्ट नहीं हो पातीं। पोस्ट हो भी जाती हैं तो डाकिये की ग़लती से पहुँच नहीं पाती हैं। वो पोस्ट ऑफ़िस के किसी अँधेरे कमरे में चुपचाप पड़ी रहती हैं।

कुमार आलोक ने तय कर लिया था कि अपनी क़सम तोड़कर वह उस दुनिया में एक बार लौटेगा, जहाँ से वह हर तरीक़े से हार चुका था।

यह फ़ैसला इतना आसान नहीं था। उसने अपने-आप को कामों में उलझाने की लाख कोशिश के बाद भी, अपने-आप को वहीं खड़ा पाया जहाँ वह सालों पहले था। शालू जब पहली बार उसकी ज़िंदगी में आई थी तब भी सब उथल-पुथल हो गया था और इतने साल बाद भी जब वह आई तो सब कुछ हिलाकर चली गई।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

एक महीने बाद (10 सितंबर 2015)

राघव को बोधगया से लौटे हुए एक महीना बीत चुका था। शालू, राघव, निशा और प्रोफ़ेसर ने अपनी एक छोटी-सी दुनिया बना ली थी। वह कई जगह साथ में खाने-पीने जाते। राघव को भी सुकून था कि चलो एक कोशिश करके देख ली। इससे ज़्यादा वह कर भी क्या सकता था!

उधर पिछले एक महीने में कुमार आलोक ने किसी से भी मिलना लगभग बंद कर दिया था। वैसे भी वह कम ही लोगों से मिलता था। जब आदमी अपनी दुनिया से हार जाता है तो घर लौटता है। कुमार आलोक अपने घर लौटा। सालों बाद वह इस बार घर पर लंबा रुका।

उसके बाप को भी समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या हुआ कि वह लौट आया। जिस दिन वह वापस जाने ही वाला था उस दिन पिताजी चल बसे। कुमार आलोक को बस एक सुकून था कि बाप के मरने से पहले उन्होंने एक-दूसरे से सारे गिले-शिकवे साफ़ कर लिए थे। अपने माँ-बाप को अपने हाथों में लेकर आख़िरी साँस लेते हुए देखने से ज़्यादा आत्मीय अनुभव कुछ नहीं होता। लोग एक रात में ज़िंदगी भर जितना बदल जाते हैं। इस दुनिया की अनंत कड़ी का एक हिस्सा टूट जाता है।

इस दुनिया से नाराज़गी की एक वजह और जुड़ जाती है। इसलिए शायद गंगा जी में राख बहाते समय आदमी सब शिकायतें भी बहा देता है। ईश्वर पर विश्वास हो-न-हो, मौत के ठीक एक पल बाद की दुनिया की पहेली हमें ईश्वर पर विश्वास करने की वजह देती रहेगी।

हालाँकि कुमार आलोक ने भगवान को मानना बहुत साल पहले बंद कर दिया था लेकिन अपने पिताजी का संस्कार उसने तय रीति-रिवाज से किया।

ज़िंदगी को समझने की चाभी मौत में छिपी है, यह अदना-सी बात समझ आने में सालों बीत जाते हैं। कई ज़िंदगियाँ, हज़ार सदियाँ बीत जाती हैं।

तय हुआ कि वह 25 सितंबर को इलाहाबाद में प्रोग्राम अटेंड करके लखनऊ के लिए निकल जाएगा। यह तय करना आसान होता तो वह कई साल पहले ही कर लेता। उसकी ज़िंदगी से सब शिकायतें एक-एक करके ख़त्म होती जा रही थीं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

ज़िंदगी शिकायत के मौक़े देने और लेने के बीच में बीत जाती है। कुमार आलोक अब शालू से मिलने के लिए तैयार था। इस पल का इंतज़ार दुनिया कबसे कर रही थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

26 सितंबर 2015

सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटेकर इलाहाबाद में हुई गिरफ़्तार! मेधा पाटेकर शनिवार को सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. बनवारी लाल शर्मा की पुण्यतिथि के कार्यक्रम में शामिल होने इलाहाबाद आई थीं। उन्हें इलाक़े में भूमि अधिग्रहण के विरोध के कारण गिरफ़्तार किए गए कुछ लोगों के परिजनों से भी मिलना था। मेधा पाटेकर के साथ उनके दस साथियों को हिरासत में लिया गया। (पत्रिका न्यूज़पोर्टल)

इलाहाबाद: कचरी के किसानों से मिलने जा रही मेधा गिरफ़्तार (हिंदुस्तान)

A total of 10 persons, including Patkar, were arrested by us this morning when they assembled near the Allahabad University premises. (Economic Times, 27 th September 2015)

कुमार आलोक उन गिरफ़्तार होने वालों में से एक था। मेधा पाटेकर की न्यूज़ सब तक पहुँची लेकिन उन गुमनाम दस नामों की ख़बर दब गई। दस लोगों या सौ लोगों बोलने से कोई शक्ल सामने नहीं बनती।

पुत्तन भइया को लग रहा था कि आलोक भइया शायद आगे निकल गए। उनको वैसे भी फ़ोन पर बात करना इतना पसंद नहीं था। इतना कहने पर तो कुमार आलोक ने मोबाइल रखना शुरू किया था।

चूँकि मेधा पाटेकर डीएम साहब के मना करने के बाद भी मानी नहीं थीं। इसलिए पुलिस को ख़ास आदेश थे कि इनके साथ के लोगों को परेशान किया जाए।

उधर लखनऊ लौटने के बाद से शालू हर बार दरवाज़े को ख़ुद खोलती। उसकी आँखों में इंतज़ार था। लौटने के साथ उसने अपने-आप को एकदम नॉर्मल कर लिया था। नॉर्मल करने में नॉर्मल दिखने में अंदर से बहुत ज़ोर लगता है।

निशा रोज़ ही घर आ जाती।

“अम्मा का ख़याल रखना। ध्यान रखना प्रोफ़ेसर के साथ ज़्यादा न घूमें।” राघव ने मज़ाक़ में निशा से कहा।

“और तू अपना ख़याल रखना। रोज़ विडियो कॉल करना।”

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"नहीं करूँगा, क्या कर लेगी!"

"फ़ोन में घुस के घुसंड मारूँगी।" निशा ने यह कहते हुए राघव को गले लगा लिया।

"यार, मुझे लग रहा है कि पुत्तन भइया को कुमार आलोक के बारे में पता था, उसने बताया नहीं।"

"ऐसा क्यों बोल रहा है तू?"

"अगर उसे पता नहीं होता तो वह हमारा इतना ख़याल नहीं रखता। उसको क्या फ़र्क़ पड़ता है कि कोई लोग किसी को ढूँढ़ रहे हैं।" राघव ने अपनी पूरी यात्रा को मन में दोहराते हुए कहा।

"तूने ट्राई कर लिया न! अब भूल जा। इससे ज़्यादा तू कर भी क्या सकता था!" निशा ने राघव की आँखों पर अपने होंठ रख दिए।

"तू दिल्ली छोड़ने चल रही है न?"

"मुश्किल है यार। पापा को समझा पाना मुश्किल है।"

"अरे अम्मा भी जा रही हैं। बोल देना पापा को कि कुछ ऐसा उल्टा-सीधा नहीं होगा जो यहाँ नहीं होता।" राघव ने निशा को फिर से गले लगा लिया। पटना से लौटने के बाद शालू राघव को अपने साथ लेकर सोती थी।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

9 अक्टूबर 2015

अब जाने में इतने कम दिन बचे थे कि उनको पकड़कर बचाया नहीं जा सकता था। ये प्रोग्राम था कि शालू और राघव 10 अक्टूबर को लखनऊ से दिल्ली के लिए जाएँगे। लेकिन राघव को कुछ काम आ गया था इसलिए वह अब 9 को ही दिल्ली के लिए निकल रहे थे। स्टेशन पर प्रोफ़ेसर और निशा छोड़ने आए थे।

निशा अपने आँसू को रोकने की कोशिश के बाद भी रोक नहीं पा रही थी। प्रोफ़ेसर ने ही मज़ाक़ में कहा, “निशा, वहाँ जाते ही फ़िरंगी लड़कियों से दोस्ती करेगा। भूल जाएगा। क्यों राघव यही प्लान है न! वैसे राघव एक पर्सनल एडवाइस, यूरोप की लड़कियाँ बेस्ट होती हैं।”

राघव ने भी मज़ाक़ को आगे बढ़ाते हुए कहा, “हाँ और क्या सर, आप जैसा बोलेंगे वैसा ही करेंगे।”

बैठने से पहले उसने अलग से आकर प्रोफ़ेसर का हाथ पकड़कर कहा, “Thank you so much for everything, sir!”

प्रोफ़ेसर ने राघव की पीठ पर अपना हाथ रखा और कहा, “Don’t worry about Shalu at all, मैं हूँ, निशा है। All the best! वहाँ कुछ भी प्रॉब्लम होगा तो बोलना, मैंने वैसे भी वहाँ के प्रोफ़ेसर को ईमेल कर दिया है।”

राघव ने निशा को गले लगाया और माथे पर प्यार रख दिया। उस प्यार में उम्मीद, गर्माहट, नमी, आँसू, नमक सब कुछ था।

शालू ने खिड़की के बाहर तब तक देखा जब तक बत्तियाँ दिखनी बंद नहीं हो गईं।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

10 अक्टूबर 2015

कुमार आलोक की रिहाई 9 की शाम को हुई। वह जब सुबह शालू के पते पर पहुँचा तो पता चला कि ये लोग तो एक दिन पहले ही दिल्ली के लिए निकल चुके हैं। कुमार आलोक ने वहाँ से निकलते ही दिल्ली की फ़्लाइट पकड़ी और पुत्तन भइया से राघव का नंबर देने को कहा।

उसने फ़्लाइट लेने से पहले सोचा भी कि एक बार बता दे फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने फ़ोन काट दिया।

पुत्तन भइया ने राघव को फ़ोन किया, "बाबू कैसे हैं आप? वो क्या कहते हैं, All the best, बढ़िया करिए। अबकी आइएगा तो बताइएगा।"

"आपको याद था?"

"हाँ हम कुछ नहीं भूलते। वैसे कितने बजे की फ़्लाइट है आपकी?"

"रात 11 बजे की, क्यों क्या हुआ, छोड़ने आ रहे हैं क्या?"

"क्या बाबू पहले बोले होते। छोड़ने आ जाते, दिल्ली कौन-सा दूर है।" पुत्तन भइया ने मज़ाक़ वाली टोन में बात की और फ़ोन रख दिया।

राघव को पुत्तन का फ़ोन करना थोड़ा खटका लेकिन उसको लगा कि ऐसे ही थोड़े न इतने लोग उसकी इज़्ज़त करते हैं। सबका ख़याल ऐसे ही टाइप के लोग रख पाते हैं।

पुत्तन भइया ने फ़्लाइट का टाइम कुमार आलोक को बता दिया।

शालू, राघव के साथ जाने से पहले की कुछ आख़िरी ख़रीदारी कर रही थी। माँ की तैयारियाँ कभी पूरी नहीं होतीं। यही थोड़ी-बहुत तैयारी के चक्कर में लोग फ़्लाइट में हमेशा पेनाल्टी देते हैं।

कुमार आलोक ने हिसाब लगा लिया था कि साढ़े 11 के हिसाब से क़रीब तीन घंटे पहले वह लोग एयरपोर्ट आ जाएँगे। उसको समझ नहीं आ रहा था कि वह राघव के लिए क्या गिफ़्ट ले। ऐसे ख़ाली हाथ मिलना उसको सही नहीं लग रहा था।

जब उसको और कुछ समझ नहीं आया तो वह एक डायरी और पेन लेने सीपी (कनॉट प्लेस) पहुँचा। उस समय राघव, शालू और कुमार आलोक में आपस में एक किलोमीटर की भी दूरी नहीं थी। वह जिस दुकान से पेन

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

ख़रीद के एयरपोर्ट के लिए निकला उसी दुकान पर शालू ने घुसकर वही पेन ख़रीदा।

"अम्मा, पहले से ही इतने सारे पेन हैं।"

"अब्बे जाकर चिट्ठी लिखना।"

"अब चिट्ठी कौन लिखता है अम्मा!"

"मुझे नहीं पता, एक पेन भारी हो जाएगा अब! रख ले और पता है कॉलेज में इसी शॉप से मैं पेन ख़रीदने आती थी। मुझे इनके इंक पेन बहुत पसंद थे।"

दुकान वाले जैसे ही सुना कि पुरानी कस्टमर हैं, वह शुरू हो गया।

"मैडम बहुत अच्छी च्वॉइस है आपकी। बस दो ही थे। एक अभी थोड़ी देर पहले ही एक साहब लेकर गए हैं।"

कुमार आलोक समय से पहले क़रीब छह बजे ही एयरपोर्ट पहुँचकर इंतज़ार करने लगा। कॉफ़ी शॉप में कुछ देर इंतज़ार करने के बाद वह अब गेट के पास ही टहलने लगा। जब आठ बजे तक वे उसे नहीं दिखे तो उसने सोचा कि राघव के नंबर पर कॉल कर लेना चाहिए।

उसने जब अपनी जेब में हाथ डाला तो देखा मोबाइल नहीं है। उसने मोबाइल कॉफ़ी शॉप में जाकर ढूँढ़ा वहाँ मोबाइल मिला नहीं। अब इतना समय नहीं था कि वह मोबाइल ढूँढ़ पाता।

शालू के सामान देने के चक्कर में वे लोग साढ़े आठ बजे तक भी एयरपोर्ट नहीं पहुँचे थे।

"अम्मा, सामान देने के चक्कर में फ़्लाइट छुड़वा दोगी!"

"अब्बे कुछ न छूट रही फ़्लाइट, अभी तो बहुत टाइम है।"

जितना सामान वह लखनऊ से लेकर चले थे, उसमें दो-चार किलो सामान बढ़ चुका था।

"अम्मा!"

"प्रोफ़ेसर साहब बता रहे थे कि वह तुम्हारे साथ कॉलेज आने का प्लान बना रहे हैं। आपने बताया नहीं।"

"अच्छा ऐसा बोला बंगाली, मुझे भी नहीं बताया।"

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अब कार से एयरपोर्ट दिखना शुरू हो चुका था। वह समय आ चुका था जिसका राघव को महीनों से इंतज़ार था। जैसे-जैसे एयरपोर्ट पास आ रहा था, शालू का बेटे के लिए दुलार बढ़ता जा रहा था। उसने राघव को अपने सीने से चिपका लिया था। जैसे जानवर पैदा हुए बच्चे को अपने पास चिपका लेते हैं। इस दुलार में राघव के बाल बार-बार बिगड़ रहे हे। राघव उनको बार-बार सही कर रहा था।

"अरे यार, अम्मा बाल ख़राब हो रहे हैं।"

"अब्बे होने दे ख़राब, एयरपोर्ट के अंदर जाकर एक बार में ठीक कर लेना। अब कहाँ बाल ख़राब कर पाऊँगी!"

"यार अम्मा, तुमने प्रॉमिस किया था न कि जाते हुए सेंटी नहीं मारोगी?"

"चुपकर, भाड़ में गया प्रॉमिस। तू रोज़-रोज़ अमेरिका थोड़े जाएगा। पता नहीं अब कितने दिन में आएगा!"

"अच्छा अम्मा, एक बात बताऊँ?"

"अब याद आ रही है बात? जब एयरपोर्ट सामने आ गया, जल्दी बोल।"

"जब स्कूल बस छूट जाती थी और तुम मुझे अपनी स्कूटी से छोड़ने जाती थी तो उस दिन पता नहीं क्यों रोना आ जाता था।" यह कहते हुए राघव ने कार की खिड़की से एयरपोर्ट की तरफ़ देखा। उसकी आँखों में पानी था। शालू की आँखें सूखी हुई थीं।

"आज तेरे पापा की बहुत याद आ रही है।"

"अम्मा यार" कहते हुए हुए राघव ने एक बार फिर से शालू को गले लिया। शालू ने राघव के माथे को चूमकर उसका सिर सहलाते हुए उसके सारे बाल एक बार फिर ख़राब कर दिए।

एयरपोर्ट अब ठीक सामने था। कार रुकने के बाद कुछ देर तक दोनों ने दरवाज़ा नहीं खोला।

"जल्दी आना, समझा।"

"अम्मा, पहले जाने तो दो।"

उधर कुमार आलोक का कैफ़े जाकर मोबाइल ढूँढ़ना बेकार था। उसने एक दो लोगों से मोबाइल माँगा लेकिन लोग इतनी जल्दी में थे कि उनको भरोसा नहीं हुआ।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

फिर वहीं कचरा साफ़ करते हुए एक लड़के से कुमार आलोक ने मोबाइल माँगकर पुत्तन भइया को फ़ोन मिलाया। पुत्तन भइया का फ़ोन उठा नहीं।

शालू और राघव एयरपोर्ट पहुँच चुके थे। एयरपोर्ट की एंट्री वाली लाइन में अच्छी-ख़ासी भीड़ थी।

कुमार आलोक ने एक और चक्कर लगाया। हड़बड़ाहट में शालू और राघव कुमार आलोक को दिखे नहीं। इतने में वह लड़का भागते हुए कुमार आलोक के पास फ़ोन लेकर आया। उस लाइन पर पुत्तन भइया थे।

"टाइम नहीं है, जल्दी से मुझे राघव का नंबर भेजो।"

"सब ठीक है न भइया?" पुत्तन को चिंता हुई।

"वह सब बाद में पूछना।"

"हाँ एयरपोर्ट पर हूँ मोबाइल खो गया है।"

पुत्तन ने नंबर बताया। कुमार आलोक ने एक बार में वह नंबर याद कर लिया। उस लड़के के फ़ोन से राघव को फ़ोन लगाया।

राघव लाइन में लग चुका था। शालू उसके साथ ही लाइन में लगी हुई थी। वह बार-बार उसको गले लगा रही थी। राघव के आगे क़रीब 12 लोग थे। एक-एक आदमी के पास होने में बहुत समय लग रहा था।

राघव ने अपना मोबाइल बजते देखा कि कोई Unknown नंबर है तो उसने उठाया नहीं। फ़ोन दो बार बजा।

"उठा ले।"

"Unknown है, अम्मा अंदर बहुत टाइम मिलेगा वहाँ से मिला लूँगा।"

दोनों बिलकुल पास थे। कुमार आलोक को समझ आ गया था कि फ़ोन मिलाने का कोई फ़ायदा नहीं है। उसने गेट पर नज़र गड़ा दी। सैकड़ों लोगों के बीच उसको एक ऐसा चेहरा ढूँढ़ना था जो सालों पहले खो गया था। वह अपने मन में शालू के चेहरों में उम्र जोड़कर चेहरे बना रहा था।

उधर शालू भी हर एक चेहरे में वही चेहरा ढूँढ़ रही थी। उसने अभी तक उम्मीद छोड़ी नहीं थी। बावजूद इसके कि कुमार आलोक ने पुत्तन भइया को मना किया था उन्होंने राघव को फ़ोन मिला दिया।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राघव थोड़ा चौंका। शालू ने भी उसके मोबाइल पर पुत्तन भइया का कॉल आते देखा।

"बाद में उठा लूँगा।"

राघव के हाथ से फ़ोन शालू ने लिया। उधर से पुत्तन भइया की घबराहट भरी टोन में आवाज़ आई, "बाबू, आलोक भइया वहीं है। उनका मोबाइल खो गया है।"

शालू को झटका लगा। उसने पीछे घूमकर देखा। अब ढूँढ़ने वाली आँखें दो के बजाय चार थीं।

वह जैसे ही पलटी, सामने ही कुमार आलोक था। इस पल में उन चार आँखों के अलावा पूरी दुनिया थम गई थी। उन आँखों में बीते हुए साल, बरसात, गर्मी, रतजगे, गुस्सा, पानी, समंदर, नदी, बर्फ़ सब कुछ था।

शालू की आँख में पानी था। यह पानी बहुत साल पुराना था। ये वही पल था जब शब्द ख़त्म हो चुके थे। कुमार आलोक ने कहा, "थोड़ी-सी देर हो गई।"

"तुम्हारी तो आदत ही यही है।" शालू ने जवाब दिया।

उसने राघव को लाइन से बुलाकर कहा, "पैर छूओ।"

"पैर क्यों छुएगा, बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो गले लगते हैं।"

कुमार आलोक ने राघव को गले लगा लिया। शालू की आँख में आँसू देखकर राघव को पूछना नहीं पड़ा कि ये कौन हैं। उस पानी में हर एक बीते हुए दिन का हिसाब था जो साथ नहीं बीता था।

उस एक पल के लिए दुनिया में कुछ भी अधूरा नहीं था। ऐसा एक पल ज़िंदगी सबको देती है जब अदना-सी ख़्वाहिश पूरी होकर अधूरी दुनिया को पूरा कर देती है।

राघव अब ख़ुश था। उसको नहीं पता था कि कुमार आलोक रुकने वाला था या नहीं। उससे फ़र्क़ नहीं पड़ता था।

राघव के जाने के बाद कुमार आलोक को ध्यान आया कि हड़बड़ी में वह भूल ही गया कि वह राघव के लिए पेन लाया था। शालू ने डब्बे को हाथ में लिया। पैकेट खोला उसमें वही पेन था जैसा दिन में उसने राघव को दिया था। उसने आलोक की तरफ़ हाथ बढ़ाया। राघव लाइन में खड़ा हुआ दिख रहा था। वह उन दोनों को बाहर देख रहा था।

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

"इतने साल क्या किया?"

"भागता रहा।"

"बस भागते रहे और कुछ नहीं किया!"

"नहीं।"

"किससे भागते रहे?"

"अपने आप से। तुमसे। सबसे।"

शालू के पास कोई सवाल नहीं था। कुमार आलोक ने अपनी बात जारी रखी।

"पूरी दुनिया से भागने में बहुत बार जेल गया। पता है जेल से निकलकर कैसा लगता है?" कुमार आलोक ने पूछा।

"कैसा?"

"बस ये लगता है कि कोई लेने आया हो। ठीक वैसा जब किसी लंबे सफ़र पर जाने से पहले लगता है कि कोई छोड़ने आया हो।"

दोनों राघव को तब तक देखते रहे जब तक वह दिखना बंद नहीं हो गया। दिल्ली की उम्र कुछ देर के लिए फिर से बीस साल की हो गई।

रास्ते के कुछ मोड़ इतने ख़ूबसूरत होते हैं कि मंज़िल न मिले, उस मोड़ पर आकर यात्रा पूरी हो जाती है। ये वही एक मोड़ था। वह मोड़ जहाँ से नई शुरुआत हो भी सकती है और नहीं भी।

• • •

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुछ सवाल

नीचे कुछ ऐसे सवाल हैं जिसके जवाब मुझे चाहिए नहीं लेकिन आपको अगर सही लगे तो अपने-आप से कभी पूछिएगा। मौक़ा लगे तो कभी फ़ुरसत में बैठकर इनके जवाब के बारे में सोचिएगा। सच पूछिए तो जवाब किसी को बताने की ज़रूरत भी नहीं है। हम सबको अपने जवाब पता होते हैं। आपका जवाब जो भी हो इस बात का ध्यान रखिएगा कि आपका कोई जवाब ग़लत नहीं है। ऐसे सवालों के कोई भी एक सही या ग़लत जवाब नहीं होते।

1. अगर आपके परिवार में किसी महिला के साथ वही हुआ होता जो शालू अवस्थी के साथ हुआ तो आप क्या करते? (इस पूरी लिस्ट में यह सबसे ज़रूरी सवाल है। इसका जवाब जो भी हो, अगर हाँ है तो शायद यह हिंदुस्तान को आगे ले जाने में कुछ मदद करे।)

2. क्या राघव ने जो किया वह सही था?

3. क्या कुमार आलोक ने जो किया वह सही था?

4. मान लीजिए आप शालू अवस्थी होते/होती तो बचा हुआ जीवन आप किसके साथ बिताते/बिताती, प्रोफ़ेसर या कुमार आलोक?

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

संदर्भ

1. रौशन अब्बास से बातचीत जो कि 1990 में हिंदू कॉलेज और दिल्ली में थिएटर करने वाले अग्रणी नामों में से एक थे। रेडियो, टीवी और फ़िल्म में तमाम काम करने के बाद आजकल वह नए कलाकारों के लिए कम्यून नाम की संस्था चलाते हैं।

2. प्रभात रंजन जो कि 1990 में मंडल कमीशन के विरुद्ध आंदोलन में मीडिया सँभालते थे। आजकल वह दिल्ली यूनिवर्सिटी के एक कॉलेज में प्रोफ़ेसर हैं।

3. बीबीसी की पुरानी रिपोर्ट्स।

4. मंडल कमीशन पर उपलब्ध रिपोर्ट्स (द लल्लनटॉप, इंडिया टुडे)।

5. ABP News Pradhanpantri - Episode 18: Mandal Commission and the fall of V P Singh

6. किताब- काँटे की बात-3 (राजेंद्र यादव) के आर्टिकल, ख़ासकर ‘मेरिट का सवाल’, ‘भरी दोपहर में अँधेर’, ‘इतिहास के हाशिये पर’।

7. Mandal Commission- Satyendra P.S. (Author)

8. मंडल डायरी (बीबीसी, मोहनलाल शर्मा) https://www.bbc.com/hindi/regionalnews/story/2005/09/050908_mandal_diary.shtml

9. https://hindi.thequint.com/voices/opinion/how-opposition-of-the-mandal-commission-later-turned-into-support

10. https://www.prabhasakshi.com/mri/full-story-from-the-formation-of-mandal-commission-till-its-implementation\

11. India today – August and September edition

12. प्रतिदिन– शरद जोशी (अगस्त और सितंबर)

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बात से बाद की बात

मैंने अभी तक जो भी लिखा है उसके पीछे मजाज़ साहब का एक शेर as guiding philosophy काम करता रहा है।

ज़माने से आगे तो बढ़िए 'मजाज़'

ज़माने को आगे बढ़ाना भी है

कोशिश यही रही है कि कुछ ऐसी बात कही जाए जो इस दुनिया को थोड़ा आगे लेकर जाए।

हालाँकि यह बात कहना आसान है और उसको उतार पाना उतना ही मुश्किल। उसी कड़ी में अगली कोशिश है 'इब्नेबतूती'।

जब मैंने पहली किताब लिखी थी तो कोई दबाव नहीं था। ऐसा लग रहा था कि कोई लड़का गली में क्रिकेट खेलना शुरू कर रहा है। जहाँ पर एक दिन में कई बार बैटिंग का नंबर आता है। उसमें कई बार ज़ीरो पर आउट होना खलता नहीं हैं।

इस बीच चार किताबें और तमाम कहानियाँ लिखने के बाद मुझे ऐसा लगने लगा है कि गली क्रिकेट खेलने वाले लड़के को एक बड़े से स्टेडियम में छोड़ दिया गया है। जहाँ हर तरफ़ से उस पर लाइट पड़ रही है।

इब्नेबतूती को लिखते हुए यही दबाव था इसलिए बहुत दिनों तक मैं लिख ही नहीं पाया। फिर एक दिन जैसे बैठे-बैठे आपको मैथ्स के सवाल सॉल्व करने की ट्रिक चमक जाती है, ठीक वैसे ही मुझे लगा कि नहीं, मैं इसको अपनी पाँचवीं नहीं पहली किताब की तरह लिखूँगा, बिना किसी डर के।

पता नहीं क्यों जब कोई तारीफ़ करता है तो अजीब-सा क्यों लगता है! ऐसा लगता है कि मेरी नहीं किसी और की बात हो रही है क्योंकि जिसने इससे पहले वाली किताबें लिखी हैं वह लड़का तो कब का बदल चुका। ऐसा लगता जैसे कोई मेरी पुरानी तस्वीर की तारीफ़ कर रहा है। भले ही उस तस्वीर में मेरा ही कोई पुराना वर्ज़न दिखता हो लेकिन अब मैं वह नहीं हूँ।

पिछले कुछ सालों में पाठकों का इतना प्यार मिला, जिसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। कई बार मुझे शक होता है कि आप सभी लोग बहुत उदार

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हैं। आपके ईमेल, मैसेजेज मुझे बेहतर करने के लिए प्रेरित करते हैं। असल में यही मेरी कमाई है।

इब्नेबतूती पढ़ने के बाद अगर एक बार भी आपको ऐसा लगा कि आपको यह किताब अपनी माँ को पढ़वानी चाहिए तो मेरा लिखना सफल हो जाएगा।

उम्मीद है कि इब्नेबतूती इस उम्मीद पर खरी उतरे।

आपको किताब जैसी भी लगे बताइएगा ज़रूर।

दिव्य प्रकाश दुबे

---

[1] डाटा ट्रेल- इंटरनेट चलाते हुए हम अपने पीछे एक रास्ता बनाते हुए चलते हैं और राघव को इसको जोड़कर एक निष्कर्ष निकालने में बहुत मज़ा आता है। आप कब ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं , किस समय ऑनलाइन रहते हैं , पेमेंट कब और कहाँ से करते हैं , ऑफ़िस में बैठकर कितनी देर सोशल मीडिया अकाउंट चलाते हैं , आपने एक दिन में कितनी बार अपने सोशल मीडिया अकाउंट को खोला , किस वेबसाइट पर आप कितनी देर तक रहे , स्क्रीन पर कैसी फ़ोटो आती है तब आप क्लिक करते हैं... ऐसी और भी तमाम चीज़ें।

[2] V-tree: Every year on February 14, Valentine's Day, students from Hindu College's boys' hostel flock around the Virgin Tree (V-shaped tree) on the college campus. They worship a Bollywood female actor as Damdami Mai (goddess), with her poster stuck to the tree. The students of the college also decorate the tree with condoms. The ritual is believed to bring 'good luck' with the students who participate in it 'falling in love within the next six months and losing their virginity in the next one year'.

[3] मुन्नवर राना

[4] मंडल कमीशन :

मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बनी पहली ग़ैर-कांग्रेसी सरकार ने 20 दिसंबर , 1978 को बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल की अगुवाई में एक आयोग बनाया , जिसे मंडल आयोग कहा गया। इस आयोग ने 12 दिसंबर , 1980 को अपनी रिपोर्ट पूरी की , लेकिन उस वक़्त तक मोरारजी देसाई की सरकार गिर चुकी थी और आपातकाल के बाद सत्ता से बाहर होने के बाद इंदिरा गाँधी फिर से वापसी कर चुकी

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

थीं। मंडल कमीशन ने सरकारी नौकरियों में अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों को 27 फीसदी आरक्षण की सिफ़ारिश की थी।

इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद राजीव गाँधी को शासन चलाने का अवसर मिला , लेकिन उन्होंने भी कमीशन की सिफ़ारिशें लागू नहीं की। इसके बाद जब एक बार फिर जनता दल को सरकार में आने का मौक़ा मिला और विश्वनाथ प्रताप सिंह देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने मंडल कमीशन की सिफ़ारिशों को लागू कर दिया। कहा तो जाता है कि देवीलाल के बढ़ते क़द को रोकने के लिए उन्होंने यह दाव चला। वीपी सिंह को मंडल का मसीहा कहा गया। वीपी सिंह के इस फ़ैसले ने देश की सियासत बदल दी। सवर्ण जातियों के युवा सड़क पर उतर आए। (रिपोर्ट)

[5] दो-तीन कॉलेज के बीच का चौराहा जिसको धरने-प्रदर्शन लिए ही बनाया गया था।

[6] दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले इस दौर के बहुत ही कम छात्र शायद यह जानते होंगे कि नॉर्थ कैंपस में रामजस कॉलेज और लॉ फ़ैकल्टी के चौराहे का नाम कभी 'क्रांति चौक' हुआ करता था। वह मंडल विरोधी आंदोलन का गढ़ बन चुका था। इसी जगह पर छात्र धरना , प्रदर्शन , सड़क रोकना और पूतले फूँकने जैसे तमाम काम किया करते थे।

[7] लाल बहदुर शास्त्री अकादमी मसूरी , जहाँ UPSC में सेलेक्शन के बाद शुरुआती ट्रेनिंग होती है।